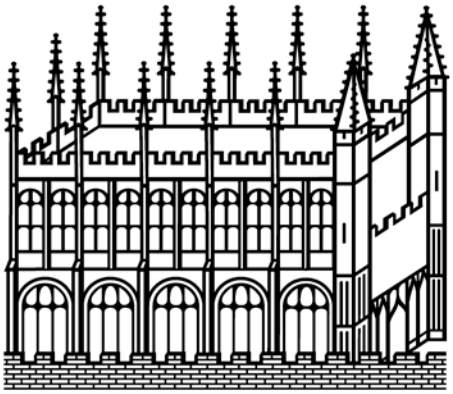


Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks



This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

Hindi Misc B
131

13.C.43.

Indian Institute, Oxford.
The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

Mauna-saṅgraha.

Naveen Sangrah

नवीनसंग्रह

जिसमें

भक्तभय हारी कुञ्जबिहारी रसिकशिरोमणि श्रीकृष्ण-
चन्द्र और श्रीराधिकाजीके लीला बिषयक नाना प्र-
कारकेअत्युत्तमकवित्त और सवैयादिबर्णित हैं

जिसको

हफ़ीजुल्लाहखां साँड़ी निवासि मुदर्रिस मदर्सा मौज़ा
बरनापुर परगनै बङ्गर थाना बघौली सू ग्रन
जिला हरदोई ने अपने शौक़ीन दोस्तोंके
दिलबहलानेके निमित्त अति परि-
श्रम से संगृह किया

वही

सम्पूर्ण विद्यानुरागियों के उपकारार्थ

स्थानलखनऊ

मुंशीनवलकिशोर के छापेख़ाने में छपा ॥

जनवरी सन् १८८४ ई०

विज्ञापन ॥

इस महीने अर्थात् जनवरी सन् १८८४ ई० पर्य्यन्तजो पुस्तकें बेचनेके लियेतैयार हैं वह इस मूचीपत्र में लिखीहैं और उनकामोलभीबहुतकिफ़ायत से घटाके नियत हुआहे परंतु व्यापारियोंके लिये और भी सस्ती होंगी जिनको ब्योपारकी इच्छाहो वह छापेख़ानेकेमुहतमिम अथवा मालिकके नामख़त भेजकरक़ीमतका निर्णयकरलें ॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
भाषा इतिहास	हरिवंशपर्व	बिनयपत्रिका बा० मो०
महाभारत	म०भा०पर्व अलेहदाभीहैं	बिनयपत्रिका बा०शि०
(१ पहिलेहिस्सामें)	रामायण रामबिलास	किल्कपुराण
आदिपर्व, सभापर्व	रामायण तुलसीकृत	बिष्णुपुराण
बनपर्व	रामायण सटीक मये	गरुड़पुराण प्रेतकल्प
(२ दूसरेहिस्सामें)	मानसदीपिकाकोषआदि	ब्रह्मोत्तरखण्ड
बिराटपर्व, उद्योगपर्व	तथा जिल्द बँधी	मिश्रितमाहात्म्य
भीष्मपर्व, द्रोणपर्व	तथामोटेअक्षरोंकी	**बैद्यकभाषा**
(३ तीसरेहिस्सामें)	मयेतसबीर व चौपक	निघंटु
कर्णपर्व, शल्यपर्व	रामायण तुलसीकृत	अमरबिनोद
गदापर्व, सौप्तिकपर्व	सातोकांड	वैद्यजीवन
ऐषिकपर्व, त्रिशोकपर्व	१ बालकांड	औषधिसंग्रहकल्पबल्ली
स्त्रीपर्व	२ अयोध्याकांड	अमृतसागर बड़ा
(शान्तिपर्बमें)	३ आरण्यकांड	तथा छोटा
राजधर्म, आपदधर्म	४ किष्किन्धाकांड	वैद्यमनोत्सव
मोक्षधर्म	५ सुन्दरकांड	**नाटक**
(४ चौथे हिस्सामें)	६ लंकाकांड	प्रबोधचन्द्रोदय
शान्तिपर्ब, दानधर्म	७ उत्तरकांड	रामाभिषेक
अश्वमेध, आश्रमबासिक	रामायण शब्दार्थकोष	आनन्द रघुनन्दन
पर्ब	रामायण का इतिहास	**वेदान्त**
मौशलपर्ब	रामायणमानसदीपिका	योगबाशिष्ठ
महाप्रस्थानपर्ब	रामायण कबितावली	आनन्दाऽमृतवर्षिणी
स्वर्गारोहणपर्ब	रामायणगीतावलीसटीक	सांख्यतत्वकौमुदी

नवीनसंग्रह का

सूचीपत्र ॥

विषय	पृष्ठ	ताटाद
पहिलाभाग देवकबित्त ॥		
श्रीपरमात्माकी बन्दना के कबित्त सवैया, ..	१	७७
द्रौपदी नामके कबित्त सवैया, ...	१२	६
श्रीगङ्गा स्तुतिके कबित्त सवैया, ...	१४	६
दूसराभाग बीरकबित्त		
नानाप्रकार की बीरता व शूरता के कबित्त सवैया ..	१६	५०
तीसराभाग रसकबित्त		
बसन्तऋतु के कबित्तसवैया, ...	२४	२०
ग्रीष्मऋतु, ...	२७	३
पावसऋतु, ...	२८	३८
शरदऋतु, ...	३४	२
हेमन्तऋतु, ...	३४	२
शिशिरऋतु, ...	३४	२
बिशेष रसकबित्त सवैया, ...	३५	१०२
बांसुरीबिषय के कबित्त सवैया, ...	६२	२८
स्वप्नबर्णन के कबित्त सवैया, ...	६६	१०
सिंहावलोकनछन्द, ...	६८	६२
परस्पर बार्ता के कबित्त सवैया, ...	८२	२३
उपमा के कबित्त सवैया, ...	७६	११
समिद्धा के कबित्त सवैया, ...	७८	१५
फाग व होली समय के कबित्त सवैया, ...	८०	११
फ़ारसीभाषा संयुक्त के कबित्त व सवैया, ...	८२	१२

बिषय	पृष्ठ	तादाद
चौथाभाग गूढ़ार्थ कबित्त सवैया		
गूढ़ार्थ कबित्त सवैया, ...	८४	१३
दोअर्थी कबित्त सवैया, ...	८६	६
पांचवांभाग फुटकरकाव्य		
कबित्त, ...	८८	०
दोहा, ...	८६	६१
सोरठा, ...	६४	३२
कुण्डलिका, ...	६६	८३
भजन, ...	६६	२०
सांगीत, ...	१०२	३
बारहमासा, ...	१०३	२
गानेकी दो एक चीजें, ...	१०५	१०
चिट्ठी दोहा चौपाई में, ...	११०	३

इतिनवीनसंग्रहसूचीपत्रसमाप्तः ॥

भूमिका ॥

——o——

दोहा ॥

सिद्धि सदन सुन्दर बदन नन्द नँदन मुद मूल।
रसिक शिरोमणि सांवरे सदारहहु अनुकूल ॥

श्रीसर्व गुणाकर कृपासागर सच्चिदानन्द परमेश्वर को बारम्बार नमस्कार है कि जिसने ख़ीमारूपी आकाश को बेखम्म और दरख़्ड़ा किया और कोटि २ धन्यबादहै उसी कारुणिक सर्व शक्तिमान् निराकार कृपानिधान जगदीश्वर को कि जिसने इस असार संसार में कैसी २ नानाप्रकार की मनमोहन स्वरूपवान मूर्त्तें बनाईं भांति भांति की मूर्त्तें दिखाईं एकको दूसरे पर रिझाया किसी को तो बिरह अग्नि में जलाया किसीको उसके इच्छानुसार सर्व्व सुख दे उसके मीत से मिलाया। हे महा प्रभु तेरी लीला बास्तव में अत्यन्त अद्भुत व अपरम्पारहै यह बखान हमार बेकार है तू जो चाहे सो करै तेरा कहने सुननेवाला कोई नहीं ॥ सवैया ॥ चाहे सुमेरु की छार करै अरु छारकी चाहे सुमेरु बनावै। चाहे तो रंकते राउ करै चाहे राउको द्वारहि द्वार फिरावै। रीतियही करुणानिधिकी कबिदेव कहैं बिनती म्हहिं भावै। चींटीके पांय में बांधि गयन्दहि चाहे समुद्र के पार लगावै ॥

जानना चाहये कि यह आधीन मतिमन्द सबका आज्ञाकारी हफ़ीज़ुल्लाहखां पुत्र मोहम्मद बाज़खां सांडी ज़िला हरदोई मुहल्ला ऊंचाटील निकट दरियाय गर्रा का निवासी ता० २ मार्च स० १८७६ ई० से सरिश्ते तालीम में कि ६ बर्ष के अनुमान हुये नौकरहे और अब अफ़सरमुदर्रिस मदर्से मौज़े बन्नापुर थाना बघौली स्टेशन ज़िला हरदोई का है बाल्यावस्था से शेरो शायरी पर बड़ी रुचि रही और अपने वस्ताद जनाब मुंशी शंकरप्रसाद साहब मूबह बिलग्रामी हेडमास्टर सांडी स्कूल से सदाअपने अशआरों पर इसलाह लियाकिया और जबसे मुदर्रिसी के ओहदे पर नियत हुआ तो यहां सेवाय भाषाके और कोई चीज़ पढ़ानेकी नौबतही न आई जब हिन्दी काव्य का मजा कुछ २ मालूम होने लगा तब तो मुझको ऐसा शौक़ बढ़ा कि ईश्वरही जानता है ॥ सेवाय इसके ठाकुर

मेहरबानसिंह साहब नम्बरदार बन्नापुर कि बड़े साहब शऊर क़दरदान गुणग्राहक बुद्धिमान परमोपकारी कृपानिधानहैं उनकी संगतिमें औरभी शौक़ दिनदूना रातचौगुना होतागया क्योंकि उनकोभी काव्य देखनेका जितना शौक़ है वैसा किसीमें काहेको होगा। और बहुधा उनके साथ मिश-रिष नैमिषारण्य हत्याहरण गङ्गास्नान आदिक मेलोंपर जानेका जो अवसर पड़ता रहा तो वहांक्या देखनेमें आया कि लोग जहां तहां अपनी २ मौजों में आकर नाना प्रकारके कवित आदि कहरहेहैं कहीं किसीसे मुक़ाबिला होरहाहै कि देखिये कौनहारे कौन जीते कौन अधिक कहता है कौन हारमान चुपहो रहताहै ऐसे २ हज़ारों तमाशे बारहा देखे जिनसे भाषा काव्यके शौक़की तरंगे हमारे चित्तपर ऐसी लहराती रहीं कि बयान से बाहरहै औमेरी जानमें तो किसीने कोई बुद्धिमान शौक़ीन जवान रङ्गीन तबिअत आली हिम्मत ऐसा न देखाहोगा कि जिसको कवित्त कहने सुनने काव्य ख़रीदने पढ़नेका शौक़ नहो मूर्खरङ्गीले कहने सुननेको छबीले ऐसे निर्बुद्धी ढंले लोगोंको मैं नहीं कहताहूं कि जोदेखे जले जातेहैं वे लाभ अपना तनमन दाहकी पावक से जलातेहैं॥ अबमालूम करना चाहियेकि जब इस आधीनको सेवाय शौक़के यहबातभी खूबसाबितहोगई कि काव्य पढ़नेसे चतुरता ज्ञान नानाप्रकार की बातें तरह २ की घातें सब क़िसिम के महाबरे बातचीत के ढङ्ग ज़माने के रङ्ग सब मालूम होजातेहैं सेवाय इसके सभामें आदर पातेहैं बीसोंलोग खुसामत करते सुननेको कहतेहैं॥

तबतो मेरे दिलमेंभी यह ख़याल आया कि अपनेविद्यार्थियोंको भी इस तरफ़ रुचि दिलाना चाहिये तबतो उसीदिनसे बजाय नागरी हिज्जा लि-खानेके दोदो तीन २ कवित्त लिखाना आरम्भ किया फिर उसको उनकी कापियों पर उतरवा दिया जिसमें जीभीलगे लिखनेपर हाथभी जमे और यादभी होजाय होते २ यहांतक नौबत पहुंची कि अबकोई ऐसा विद्यार्थी हमारे स्कूलमें नहींहै कि जिसको कमसे कम पचास कवित्त उत्तमसे उत्तम कंठनहों और जो लिखनहों सकते उनको सुन २ करयाद होगये हैं और तीन चार लड़के अर्थात् महिपालसिंह, धर्मसिंह, रेवानसिंह, जगरूपसिंह आदितो ऐसेहैं कि जिनको तीन २ सौकेलगभग ऐसे २ उत्तम कवित्त मुंहज़बानी यादहैं कि गोया आंखोंके सामने पुस्तक रक्खीहै और उम्रमें १२ बरससे अधिक कोई विद्यार्थी न होगा और न उनपर कोई ऐसी ताकीद की जाती है कि तुम अवश्य यादकरो क्योंकि अव्वलतो मदर्सों की तालीम से उनको ऐसी छुट्टी कहां कि जिस वक़्त वहयाद करें केवल लिखाने

और कांपी पर उतारनेमेंही उनको याद हो गये। दो तीन विद्यार्थियोंसे बहुधा मेलों पर अकसर लोगों से मुक़ाबिला भी होगया दो २ ढाई २ सौ कबित्त तक कहनेकी नौबतआई परंतु परमेश्वरकी कृपासेहमारेही विद्यार्थी बढ़कररहे। हज़ारों मेलेवाले इन छोटे २ बच्चोंके मुखसे भांति २ के उत्तम कबित्त सुनकर बहु प्रकार सराहना करते कि धन्य हैं इनके मात पिता और गुरुको कि जिसने इनको पढ़ा लिखाकर ऐसा होशियार बनायाहै॥

ऐसीही बातोंसे मेरा शौक़ कमाल दरजे को पहुंचा और बीसों काव्य और संग्रहमैंने जमाकिये और आजतक तलाशकिये परंतुऐसी काव्यसंग्रह कोई न मिली कि जिसमें जिसतरहके कबित्त तलाश किये जाते तो एकही तरह के उसमें कम से कम दश २ बीस २ तो मिलजाते सो कोई पुस्तक ऐसी न मिली तब मेरे दिल में ख़याल आया कि परिश्रम चाहे जितनापड़े परंतु ऐसा संग्रह अवश्य बनाया चाहिये कि जिसमें सब भांतिके कबित्त सवैया हों क्योंकि अभीतक किसीने ऐसा नहीं बनायाहै। सो परमात्मा ने हमारी अभिलाष पूर्ण की और जैसा मनोरथथा वैसी पुस्तक बनगई॥ कुछ प्रशंसा की राहसे मैं नहीं कहताहूं कि नहीं मेरी पुस्तक सब से बढ़कर है ज्ञानवान लोगों को मेरा सच और झूंठ पुस्तक के अवलोकन से आपजान पड़ेगा कि यहबात ठीक है या नहीं॥ मैं अपने मुख मियां मिट्ठू नहीं बना हूं। ऐ मेरे प्राण पियारे दोस्तो शौक़ीन भाइयो आपसब साहिबों से यही मनोरथ है कि जहां कहीं इस में उचित या अनुचित शुद्ध या अशुद्ध बनाने के योग देखें कृपा दृष्टिसे उसको बनालें और इस मतिमन्द अज्ञान को निर्दोषी समझ कर क्षमा करें परंतु जो लोग और शौक़ीन मेरेप्यारे स्नेही लड़के होशियार और बुद्धिमान होंगे क्याआश्चर्य्य कि इस मेरे परिश्रम पर जो मैंने इसके संग्रह करने परकियाहै आनन्दित हों और इस कृपा अभिलाषी को अपने आशीर्बाद से यादकरें॥

हफ़ीजुल्लाहखां मुदर्रिस मदर्से मोज़ेबन्नापुर
ज़िला हरदोई मुल्क अवध॥

——o——

श्रीगणेशायनमः ॥

नवीन संग्रह

पहिला भाग ॥

श्रीपरमात्मा की बन्दना ॥

सवैया । आलस नींदमें मातोसदा अरु उद्यमहीन दुबेर खवैया। प्यास लगै नहिं पानि भरौं। जोपास धरो उठिकै न पिवैया। ऐसे निकम्मनके शुकदेव कृपा के धामहौ पेट भरैया। भोरते सांझ अरु सांझते भोरलौं मोसोंकुपूत न तोसों देवैया १ चाहै सुमेरु कि क्षारकरै अरु क्षार कि चाहै सुमेरु बनावै। चाहै तो रङ्कते राव करै चहै राउको द्वारहि द्वार फिरावै। रीत यही करुणा निधिकी कबिदेव कहै बिनती म्वहिंभावै। चींटीके पाँय में बांधि गयन्दहि चाहै समुद्रके पार लगावै २ स्थावर जङ्गम रूप जिते सब नाना भांतिन रूप धरेहैं। तामें सच्चिदानन्द महा प्रभु आतम एक प्रकाश करेहैं। सो बिनु जाने सिन्धु समान औ जानते गोपद बिन्दु तरेहैं। बन्दित ताहि सदा शुकदेव जो ब्रह्म चराचर रूप परेहैं ३ ॥

दो० कबको टेरत दीन रटै होत न श्याम सहाय।
तुमहूं लागी जगतगुरु जगनायक जगवाय ॥

स० । हौं कबको रटलागि रह्यो गहिदीन स्वभाव मन बचकायक। दीनके बन्धु कहावतहौ हरि काहेते होत न आनि सहायक। काहे से ढीलकरी करुणामय कृष्ण कहै प्रभु हौ सब लायक। जानि परी तुमहूं को कछू अब व्यार लगी जगकी जग नायक ४ ॥

दो० थोरेई गुण रीझते बिसराई वह बानि।

तुमहूं कान्हमनोभये आजकाल्हिकेदानि ॥

स० । हौं अतिआरत मैं बिनती बहु बारकरी करुणारसभीनी । कृष्ण कृपानिधि दीनकेबन्धु सुनी असुनी तुम काहेकि कीनी । रीझते रङ्ककही गुणसों वह बानिबिसारि मनो अबदीनी । जानि परी तुमहू प्रभुजी कलिकालके दानिनकी गतिलीनी ५ ॥

दो० ज्यों हौं हौ त्यों होगयो होहरि अपनी चाल ।
हठि न करो अतिकठिनहै मोतारिबो गोपाल ॥

स० । हौंउनको गिनतीनमेंहौं प्रभुजेतुमतारेते आपनी गोहीं । कृष्णकहे गिनते न बनै कछु पापिनकी परमाविधिहोहीं । होनी है जो कछुहैहै वहै गति मेरी यहचाल कुचाल न होहीं । खेलन है प्रभुमेरो उधारिबो भूलन कीजै वृथाहठयोंहीं ६ ॥

क० । सिद्धिके सदन गजबदन विशालतन दरशके येते बेगि हरत कलेशको । अरुण परागको लिलाटमो तिलकसोहै बुद्धिके निधान रूपतेज ज्यों दिनेशको । मङ्गलकरण भवहरण शरणगये उदित प्रभावजाको विदित महेशको । जेते शुभकाज तामें पूजिये प्रथमताहि ऐसे जगवन्दन सुनन्दन महेशको ७ ॥

स० । रागवही जामें रामबस अरु ध्यानवही जोधनीकेधरेको । प्रीतिवही जो सदानिबहे अरु प्रेमवही ज्यों दागजरेको । काहेको आदमशोचतहै अब नाहिंनहै कोई दुःखपरेको । सम्पतिमें तो करोरमिलै पै मित्रवही जो बिपत्तिपरेको ८ योगी वही जो रँगै मनआपनो आनि कुसङ्गमें ध्यानलगावै । सन्तवही जो तजै ममताको आनदमें हरिके गुणगावै । पुत्रवही जो पिताकोनवै अरु कै पुरुषारथको दिखलावै । द्रव्यवही जो उठै परस्वारथ मित्रवही जो बिपत्तिबँटावै ९ बरतो बिन खाय बिना जननी सुनि कानन कोईकहा करतो । करतोलै दिगम्बर कोईकहा कबिमाखन आंखिनही डरतो । डरतो गुणगांठि बिवाहकीछोरि पै रावरेभांवरि नाभरतो । भरतोपै न कोईहमैंहरतोहमनाबरतीतुम्हैंकोबरतो १० बिष भोजनभंगभुवङ्गहै भषणअङ्गमो खाखहिको भरतो । मृगछाल बिछौना मालकपालनमालकि ज्वालनको जरतो । कबिमाखन

आंखिन देखितुम्हैं सुनिकानन कोईकहा करतो। हँसिपारवती कहैं शंकरसों हमनाबरतो तुम्हैंको बरतो ११ अम्बर अंग न संग सखा बहुभूतनके डरसों डरतो। डरतो अरुसांपनकी सुसुकारन भांगबटोरतही मरतो। मरतो ज्यहिजानि न जन्मकथा नरबाहनसो खर ना चरतो। हँसिपारबती कहैंशंकरसों हमनाबरतो तुम्हैंको बरतो १२ बरजोहम बारम्बार तुम्हैं तुममानि न मोहको फांस बरीहै। श्री अवधेश पिताजगके जननी सियमङ्गल मोद भरीहै। तिनसों छल जायकियो बनमों अरुदेहविदेह सुताकि धरी है। हमकाजकिये सबदेवनको सुनिकैबिनती तबतोंहि बरीहै १३ दक्षकियज्ञ प्रसिद्धभई तहँआई जो बोलिसुता सिगरीहै। अरुवैर सँभारि बिरञ्चिसभा सुधिकीन्हीनहीं जो पितातुम्हरीहै। तुमआतुरजाय नशाय मखय तनयोगकि पावक बेगिजरीहै। हमकाज कियो सबदेवनको सुनिकै बिनती तबतोंहिं बरीहै १४ घोंघिन में बसिकै न मिलै सुख जोमकतान कि चोंच चलैया। मालति के लतिका बसिकै अस नाहिकरेलकिकोटि कलैया। तुम महराज सरोवरहौ हमहंस हमेश यहांके बसैया। कालकराल परैकित नो तौ मराल न ताकत तुच्छ तलैया १५ अरे मनमूढ़ वृथाभटकै नोमास कहौ सुधिकौन लईहै। जन्मभया त्यहिपीछे कहूं पहिलेहि करी त्यहिक्षीर मईहै। सो करुणानिधि भूल्योनहीं अब नाहक तोंहियह ऊबभईहै। काहेवृथा भरमैं चहुओर तू देहैवही जिनदेह दईहै १६॥

क०। कारण करण अरुपालन हरणहार तारण तरण जनदेव निर्विकारहै। गायगाय थाके वेदशेष नारदादि बाणी शम्भुजीके गुणसिन्धु कौनपार वारहै। पापिन अनेकको विमानमो चढ़ाय नाथ लियोनिजधाम यशफैल्यो संसारहै। हाजिर हजूर शम्भु दोऊ करजोरेसदा काशीबिश्वनाथ ऐसो आपदरबारहै १७ गुण को न पूछैकोऊ अवगुणकी बातपूछै कहाभयो दईकलयुग योंखरानोहै। पोथी औ पुराण ज्ञान ठट्ठनमों डारिदेत चुगुल चवाइन को मान ठहरानोहै। कादिर कहत जासों कछु कहिबेकि नाहिं

जगतकी रीतिदेखि चुपमन मानोहै । खोलि देखोहियो सब भांतिनसों भांति २ गुणना हिरानो गुणगाहक हिरानोहै १८ ॥

स० । ज्ञानघटै जड़मूढ़की सङ्गति ध्यान घटैबिन धीरजआये । मानघटै जबहीं ककुमांगहु चाहघटै नितके घरआये । प्रीतिघटै जु कठोर ह्वैबोलहु रीतिघटै मुहुंनीच लगाये । उद्यमसे दारिद्रघटै अरुपापघटै हरिके गुणगाये १९ ॥

क० । कायासे कामजात गांठीसे दामजात हितहू किबातजात रूपजात अंगते । उत्तम सबकर्म जात कुलके सब धर्मजात गुरु जनकि बासजात अपने चितभंगते । सुरपुरकी बासजात भक्तकी निराशजात मातपितु सेवाजात वेश्यापूसगते । ईश्वरसों प्रीति जात परधन पूतीतिजात राहरीत रंगजात अपने चितभंगते २० करमकी नदीजामें भरमके भौं रजामें परे लहरें मनोरथ कोटिन गरतहैं । कामशोक मदमहा मोहसो गणतामें क्रोधसों फनिन्द जाको देवता डरतहैं । लाभजन पूरण अखण्डित अनन्यभनै देखो वारपार ऐसो धीर न धरतहैं । ज्ञान ब्रह्मसत्यजाके ज्ञानको जहाज साजि ऐसे भवसागरको बिरले तरतहैं २१ बैष्णव कहत बिष्णु बसत बैकुण्ठ धाम शैव कहत शिवज कैलास सुखभरे हैं । कहैं राधाबल्लभी बिहारी वृन्दाबनही सों रामानन्दी कहैं राम अवधसेन टरेतहैं । एतौसबदेव एकदेशिक अनन्यभनैहम तुमसब आप ठौरनज्यों धरेहैं । चेतन अखण्ड जासे कोटिनब्रह्मण्ड उड़ैं ऐसो परब्रह्मकहापूरणमें परेहैं २२ एकरजरेणुका पै चिन्तामणि वारि डारों लोकनको वारों सेवा कुञ्जके बिहारपै । लतन के पातनपै कल्पवृक्ष वारिडारों रमाहूको वारिडारों गोपिनकेद्वार पै । ब्रज पनिहारिन पै शचीरची वारिडारों बैकुण्ठहूको वारिडारों कालिन्दीके धारपै । कहैअभयराम एकराधाजीको जानतहौं देवन को वारिडारों नन्दके कुमारपै २३ ॥

स० । रहेराम रौना श्रीकृष्ण बौना सबै जन्मलैलै कहांधैं छिपाने । रहेपण्डवा कौवा यादवाना कहांधैं गयेते नहीं जाता जाने । कहैजैतरामे अनेकैगनैको लखोरेसबै येजिमीकाल साने

धराके किनारे यहै जो सुनौरे फरेते झरे औ बरेते बुताने २४ ॥

क०। वहीज्ञानज्ञाता वही सुमतिको दाता करमाती दरशाता अंगठ्याल लपटायकै। गरे मुण्डमाल कण्ठकालहुको कालग्रीव सोहतहै माल राखै डमरू बजायकै। ऐसेसमय महिमा बखानै को महेशजूको बादेराय ध्यायो गुणकवितबनायकै। सकलसुमति सुख सम्पति सहितदैकै साकरेमें शङ्कर सहाय करो आयकै २५

देखतकै नीके परिनाम और आदरके देखत भलाईसदा जीवमें जरेरहैं। भेदभेद पूछे मूछ टेवतन आवैलाज पापके समूहसिंधु आंखिन अरेरहैं। कादिरकहतजे लटीनके तलाशिबेको हाटबाटहू में दरबारमें खड़ेरहैं। निन्दाको जो नेमजिन्हैं चुगुली अधार पर स्वारथ मिटायबेके खोजही परेरहैं। २६ ॥

स०। वेदकोवेद गुणीकोगुणी ठगकोठग ठूसकको मनभावै। कागकोकाग मरालमरालको कांधगधाको गधा खजुलावै। कबि कृष्णअनै बुधकोबुध त्यों अरुरागीको रागी मिले सुरगावै। ज्ञानी सों ज्ञानी करैचरचा लबराके ढिगा लबरा सुखपावै २७॥

क०। जाकीखूबखूबीखूबखूबनमें खूबी खूबताकी खूबखूबी खूबखूबी अवगाहना। जाकी बदजाती बदजाती यहां पञ्चनमें ताकीबदजाती बदजाती उहांउराहना। ग्वालकबियेहीपरसिद्ध सिद्धरहैं परसिद्धवहै ताकी यहां उहां की सराहना। जाकी यहां चाहनाहै ताकी उहां चाहनाहै जाकी यहां चाहनाहै ताकी वहां चाहना २८ ॥

स०। शम्भुको बाहन बैलबली बनिताहूको बाहन सिंहहि पेखिकै। मनको बाहनहै सुतएक सो दूजो मयरकेपक्षबिशेषि कै। भूषण है कविचैन फनिन्द के बैरपरे सबते सब लेखिकै। तीनहुंलोकके ईशगिरीश सो योगिभये घरकी गतिदेखिकै २९

सेवक पुत्रन ताड़न धारण लाड़ दुलारन नष्टहैजावै। ताड़नतेजड़ बुद्धिल है पढ़िशास्त्र अनेकन युक्तिबनावै। होत दुलारन दोष हजारन भूपति द्वारन वारनपावै। हैंजहँ हंसनके चकला हकला बकुला तहँ क्या झलकावै ३० पुत्रपढ़ो बहु शास्त्रनको कहँ आ-

लसके बग है दिनखीवत। जो नर नाहिंपढ़े अपढ़े रहिकै खर ज्यों शिरभार सुढोवत। जो पढ़िकै गुणमानभये सबदेश पुजाय बड़ोयश लोवत। भोग बिलास प्रकाश लहै जग मध्यगुणीसुख तेनिधि सोवत ३१ जबदांत नथेतब दूधदियो जब दांतभये तो अनाजहि देई। जीवनसैं थलथौ जलमें तिनकी सुधि लेय सो तेरिहुलेई। जानको देत अजानको देतजहानहिं देत सुतोहुकी देई। क्यों अब शोच करै मन मूरख शोचकरे कछुआज न देई ३२ बुद्धिप्रकाश नहीं जिनकेतिनशास्त्र अनेक पढ़ातोकहा। लोचन अन्धहि दर्पण लाभभये तो कहा लखिरूप रहा। अङ्कुर राचित भूमि जहां तहँ कादरहै यगकौनलहा। शास्त्र पढ़े बर बुद्धि पवांर तिन्है जग तीतल सकव लहा ३३॥

क०। सुनिये सुजाननसों कानदै परमपथ प्रीतिहीके हेतसब सुख सरसातहैं। द्विज बलदेव कहै कल्प २ पारब्रह्म प्रीतिहीके बशहै तुरत दरशातहैं। खम्भते नृसिंह भयो द्रौपदीकी लाज राखी चाख्योफल सेवरीके सहीभ्गुलातहैं। प्रीतिको प्रभावजानै चेरे हम ताके सदा प्रीति जो न जानै सोन जानै कौनजातहै२४॥

स०। देवनके गुण वेदबखानत भेदनसों शुचिकीचरचामें। पै तुमसों अनुरागि रहो जनु ताहिकहा तनको मनभामें। प्रीत बड़ाईकरैं करजोरि सबैतपसी रविकी महिमामें। चन्द्रहि देखि अनन्दितहोत कुमोदिनि के कछुकाम न आमें ३५ बिष्णुकोसारो शिंगार महेशको सागरको सुत लक्ष्मिकोभाई। तारन कोपति देवनकोधन लोगनकोहै महा सुखदाई। भीषम राहु ग्रसोजब आय सकोशण एक न कोई बचाई। जो दिनहैं दुखके सुनरे मन तादिन होत न कोई सहाई ३६ दूतकहैंयमके यमसों हमपातकी नेक छुयेनहिं पावते। जादिनते तुलसीकृत फैलरही जगमें सब भेद बतावते। नीकीबनी अरु भक्तिसनी सियरामको पूजे महिये उमगावते। नीके पढ़े औ सुनै चितदै सुविमान चढ़े सुरलोक सिधावते ३७॥

क०। वेदमत सोधिसोधि देखिकैपुराणसब सन्त ओचसन्तन

को भेद बिलगावतो । कायर कुपूत कूर कलिके कुचाली लोग कौन रामनामही को चरचा चलावतो । कहै कविबेनीमनु मानुरे प्रमाणयह पाहनते कठोरकौन हियोउमगावतो । भारीभवसागर के लोगकैसे होतेपार जोवैयह रामायण तुलसीनबनावतो ३८॥

स० । जबते उरलोभ भये जिनके तब औगुण और भये न भये । जबतेचुगली मुखते उगली तबपातक और भये न भये । जबहीं अपकीरति छायरही तबहीं यमलोक गये न गये । तुलसी हियमें सियराम बसे तब तीरथ तीर गये न गये ३९ ॥

क० । ऐसोजोबिचारतहौ अवगुणअपारतो मैं तौतो गुणदोष नहीं काहूके बिचारेहौ । द्विजबलदेव कहै सेवरीके चाख्यो फल अजामील तारो गजगाहते उबारे हौ । कूबरीको सुन्दर स्वरूप करिराख्यो साथ मेरीजान आजहूं लौ सोई प्रण धारे हौ । येहौ प्राणप्यारे जगनन्दके दुलारेको कहांलौंते सँभारे जे अनेन तुम तारेहौ ४० ध्यावत महेशअज नारद पुरन्दरादि त्रिदश सकल जाको पारनहि पायोहै । द्विजबलदेव कहै प्रीतही के वश्य प्रभु गोकुलमेंनन्द बसुदेवगृह आयोहै । मांगत निहोरिदधि देत न-गवारिग्वालि चोरिकरी प्रेमबश मातुसों बँधायोहै । प्रेमनहिं कीन्हो दुर्योधनकी मेवातजो बिदुरकि भाजीराजी लोनबिन खायोहैं ४१ प्रीतिहीके बश्यप्रभु जूठेफलसेवरीके खायोहै सराहि षटरसमें गनायोहै । द्विजबलदेव कहै प्रीतिहीके बश्यबलखि ग-णिका औगिद्ध निजधाममें पठायोहै । प्रीतिहीकेबश्य प्रभुतंदुल सुदामाद्विज लायो तो सराहि अतिहितसों चबायोहै । प्रीतिहीके बश्य भृगुमारोउर लात जब करजोरिठाढ़े पदकंज सोहरायो है ४२ सुदामा तनहेरयो तब रङ्कहूते रावकीन्हों बिदुर तनहेरयो तब राजाकियो चेरेते । कूबरी तनहेरयो तबसुन्दरस्वरूप दीन्हो द्रौपदी तनहेरयो तबचीर बढ्यो टेरेते । कहत छत्रशाल प्रहलाद को प्रतिज्ञा राख्यो हरणाकशिपु मारयोहै नेकनजर हेरेते । एरे अभिमानी गुरुज्ञानी भयेकहा होत नामीनर होत गरुड़गामी हेरेते ४३ तारयोहैनिषाद प्रहलादकोउधारयोशुद्धसादरअहिल्या

करी पादरज लायकै। कहै जगन्नाथ हाथधरि गिरिबूजनाथ पाल्यो ब्रजपथतें पुरन्दरै लजायकै। बार न करीहै नेक बारणके तारणमें कारण कहाहै जगतारण कहायकै। जोवत इतैहौ नहिं सोवत कितैहौ प्रभु ऐसही बितैहौ कि चितैहौ चित्त लायकै ४४ हाथीके दांतनके खिलौनाबने भांति २ बाघनकोखाल तपीशिव मनभाईहै। मृगनकी खालनको ओढ़तहैं योगीयती छेरीकीखाल थोरापानी भरिलाईहै। साबरकी खालनको बांधत,सिपाही लोग गैंड़नकी खाल राजारायन सोहाईहै। कहै कवि दयाराम राम के भजनबिन मानुषकी खाल ककुकाम नहिं आईहै ४५॥

स०। शुम्भ निशुम्भ बिनाशिनि पासिनि बासिनि बिन्ध्य गिरीशकि रानी। शङ्करसङ्ग बिलासिनि अंग हुलासिनि श्रीकमलासिनिदानी। जाहि सदाशिव ध्यान धरैं अरु गान करैं मुनि चातुर ज्ञानी। नाथकहै सोइ शैलकुमारि हमारीकरैं रखवारी भवानी ४६॥

क०। सम्पति सुमतिनीकी बिपति सुधीरनीको गंगातीरमुक्ति नीकी नीकी टेक नामकी। पतिव्रता नारि नीकी परहित बात नीकी चांदनी कि राति नीकी नीकी जीतकामकी। बालकृष्ण वेदविद उग्र नीकी भूसुर कि भक्त नीकीनीकी है रहनि हरि धामकी। अगनकी हानिनीकी तातकी मिलन नीकी सुर मिली तान नीकी प्रीतिनीकी सामकी ४७॥

स०। खायकैपान बिदोरतओठहैं बैठिसभामें बनें अलबैला। धोतीकिनारी कि सारीसी ओढ़त पेट बढ़ाय कियो जस थैला बंशगोपाल बखानकरैं सुनु भूप कहाय बने फिरैं छैला। सान करैं बड़ि साहिबोंको फिर दान में देत हैं एक अधैला ४८ बाल बदीकरैं बादसदा पितुमातु तऊ भरैं गोदन माहीं। कूर कसूर करैं पशुभूरि तजै तऊ पालक पालिबो नाहीं। है रघुनाथ तिहारेही हाथ अनाथहौं दीनकहौं क्यहि पाहीं। मैं जड़ताबश तोहिं तज्यों तजि मोहिं बराबरि होहु वृथाहीं ४९ जाप जप्यों नहिंमंत्र थप्यों नहिंबेद पुराणसुन्यों न बखानों। बीति गयेदिन

योंहीं सबै रस मोहन मोहन के न बिकानीं। चेरो कहा वत तेरोसदा पुनि और न कोऊ मैं दूसरो जानीं। कैतो ग़रीबको लेहु निवाज न तो छोड़ो ग़रीबनिवाज को बानीं ५० सेवक चूक परैं बहुधा प्रभु ताहि न क्रोध बिरोध बिचारो। पतकूपती करैं कितनो पितु मातु नहीं दुखभाव निहारो। पालनपोषण नित्तकरैं मुदमोद समेत हमेश दुलारो। बूड़त पाप समुद्रपवार दयाकरि-कैं अबलेगि उबारो ५१ ॥

क०। राजातो मगन राजकाजके समाजन पै रङ्कतो मगन सेर चनकी लगनहै। कामीतो मगन कामलोचनी के नयनन पै धनीतो मगन धनधरत अगनहै। कूरतो मगन कूरताईके बखानिबेको पै शूरतो मगन रण झारत खडगहै। सन्ततो मगन भगवन्तके भज-न कोऊ काहू पै मगन कोऊ काहूपै मगनहै ५२ रूठै क्यों तू जन जानि मनमें बिकार सबैरूठै जातिपांति और रूठै दुःखदाइये। रूठैं रावराना सबैजाना वही ठौरहीमें रूठैंजो परोसी ताहि मनमें नलाइये। रूठै परिवारयार सारा संसार औ कविन्द मूढ़पण्डित रबिदत्त ना सकाइये। एते सबरूठैं आयचूमेंगे अँगूठा मेरोयेहो रघुनाथ एकत नरूठो चाहिये ५३ ॥

स०। गौरशरीरमें गौरी बिराजत मौरहै औरहि रीतिको जाके। नागनको उपवीत लसै बलदेवकहै शशिभालमें वाके। दानकरै फलमें फलचारि औ दारत अङ्कलिखे बिधनाके। शङ्करनाम निशङ्कसदाहीं भरोसेरहौं निशिबासर ताके ५४ ॥

क०। नन्दीकी सवारी नागपृङ्गी करधारी नितसन्त सुखकारी-नीलकण्ठ त्रिपुरारीहैं। मुण्डमाल कारी शिरगंगा जटाधारी बाम अंगमें बिहारी गिरिराज सुताप्यारीहैं। दानि रेखभारी शेषशारदा पुकारी काशीपति मदनारी करशूल चक्रधारीहैं। कलाउजियारी बलदेवसों निहारी बरगावैं वेदचारी सो हमारी रखवारीहैं ५५॥

स०। जे बलदेव सुधी सतसंगके ते नकबौं मनते टरतेहैं। होत समीप असीते निशदर तासन दूरिहीसों डरतेहैं। गंगकिनार अ-बूझ धरेरुचि नीरको कूपहिमें भरतेहैं। कोलकिराती मलयगिरि

पै यथा इंधन चंदनको करतेहैं ५६ देखतही बलदेव बनै जहँ जूह अबूझनके बसतेहैं । सज्जनको समता लहिबेहित कूरसबै कटि को कसतेहैं । गुञ्जके हारगरूर गहे सुखमा मणिमुक्तनमें लसतेहैं। भानु प्रमाण उलूक लखे बकवृन्द ज्यों हंसनको हँसतेहैं ५७ ॥

क० । विदित पदारथ प्रयोजन प्रसिद्धसब तासों बलदेव भाषा भाव ठीकठानिये । भाषा बिनभाषे सन्निपातीसे बकतरहैं दूजो कौनभाषा बूजभाषा समआनिये । संस्कृत नाम ना सरस्वताको भाषो कोईभाषा नामभाषो ऐसी भाषा धनि मानिये । भाषाजो न जानत सो कैसे संस्कृतजानै भाषा जो न जानै ताहिमृगखा-मृग जानिये ५८ ॥

स० । ब्राह्मणपैठि पतालछल्यो बलिब्राह्मण साठिहजार को जारे । ब्राह्मणशोखि समुद्रलियो अरुब्राह्मण क्षत्रिनके दलमारे । ब्राह्मणलात हनी हरिकेतन ब्राह्मण सब यदुबंश उजारे । ब्राह्मण सों जनिबैरकरो कोउ ब्राह्मण सों परमेश्वर हारे ५९ ॥

दो० । मोहितुम्हैं बाढ़ीबहस कोजीतै बूजराज ।
अपनेअपने बिरदको दुईनिबाहन लाज ॥

क० । तुमजेते तारे तेतेमोते न पतितभारे मोसों पूरो पापी कोऊ दूसरो नपेखिये । तम्हैंबानि परी प्रभु अधम उधारबेकोमेरे एकपापहीकी टेक अवरेखिये । दुहुंनकोलाज आप आपने बिरद कीहै पूरीपैज पारिकै निबाहिनी बिशेषिये । कहैकवि कृष्णमोसों तुमसोंबहस बाढ़ी कौन चलिजाय अबजीते कौनदेखिये ६० ॥

दो० । कौनभांति रहिहैबिरद अबदेखिबो मुरारि ।
बिन्धे मोसों आनिकै गीधे गीधहि तारि ॥

क० । पतितउधारन कहत सब कोऊ सोऊ सांच झूंठ अब ठहरायगो बनायकै । कहै कविकृष्ण जिनऔरके भरमभूलोहौंतौ गुरु पापी मन बच अरु कायकै । ताप्योहै पखेरू एक गीधतामें गीधेतुमसोही यशराख्योहै जगत पत्यायकै । कौनभांति राखिहौ बिहारि अबदेखियेज कठिनबनीहै अबगीधे मोसों आयकै ६१ ॥

दो० । कीजैचित सोईतिरै जिहपति तिनकेसाथ ।

मेरेगुण अवगुण सबै गिनौ न गोपीनाथ ॥

क० । तोसों एक तूही और दूसरो न राजानाम तेरेहि रचेहैं लोक सुरनर नागरे । सोई बीतराग जिनकीने तपजप जाप सोई बड़भाग जाको तोसों अनुरागरे । आपतन देखिये न देखो करततमेरी अधम उधारबेकी तेरे शिर पागरे । मोसे अपराधीहै न तोसेहैं सहनहार मोसे निरगुणीहै न तोसे गुणआगरे ६२ ॥

स० । काहेकोरे मनशोचत मोचतसान सनातन सोन गईहै । कर्मकि रेख घटै न बढ़ै यह जानतिहौ नहि रीतनईहै । त्यहिते मनशोच तजौअपने स्वपनेनहिं औरते और भईहै । नरसोंजनि देहुरे देहुकहौ अबदेहै वहीज्यहिं देह दईहै ६३ ॥

त्रिभङ्गी छ० । आरत ऐना सुरगण सैना लखिनिजनैना औतरते । श्रीरघुनन्दन रघुकुलचन्दन दशरथनन्दन नामधृते । हरषित माता पितुअरुभ्राता आनँददाताचरितनते । जयजयरघुबर श्रीबर सुन्दर शारँगशरधर धीरमते ६४ अवधबिहारी भवभयहारी जन सुखकारी श्रुतिकरते । मखरखवारी निशिचरमारी मुनितियतारी कीर्तिकृते । शिवधनुखण्ड्यो जययशमण्ड्यो गर्बबिहण्डोनृपउरते । जयजयरघुबर० ६५ फरसाधारीमोहिंनिवारीजनककुमारी पोतरते । अवधहिआयेआनँदछाये मङ्गलगाये नृत्तिनृते । सुरलखिभीतेमुनि जनमीते कछुदिनबीते बनश्रमते । जयजयरघुबर० ६६ मुनिजन पाले निशिचरघाले दशशिरहाले यशसुनते । सागरतीरा लैकपिभीरा रघुबरबीरा आगमते । खलदलदारो दशशिरमारी जयजयकारी शठदनते । जयजयरघुबर० ६७ पूरिअकाशा अमरहुलाशा पूरण आशा मनक्रमते । दशशिरभ्राता लङ्कात्राता त्रिभुवनदाता शरणधृते । लङ्काराजै अचलबिराजै श्रीपतिसाजै साजसते । जयजय रघुबर० ६८ अमरबिनायक ऋधिसिधिदायक सबगुणलायक नीतिधृते । सरलसुभायक दाससहायक खलगणघायक कीर्तिकृते । सर्वगुणाकर दयासागर लक्ष्मीनागर प्रीतिरते । जयजय रघुबर० ६९ जयजगकारण त्रिभुवनतारण कलिमलहारण जगतपते । जयश्रुतिसारं परमउदारं जगसुखकारं श्रीरमते । जयतिकृपाल

दीनदयालं खलदलशालं जयतिसते। जयजयरघुवर०७०जयरण धीर श्यामशरीर श्रीरघवीरसीयपते। जयरघुनायक धरिधनुशायक दाससहायक नित्तरते। प्रभुप्रकाशं त्रिभुवनभासं घटघटवासं श्रुतिसुनते। जयजयरघुवर० ७१ सुरउरचन्दन तिहुंपुरवन्दन श्रीरघुनन्दन सृष्टिकृते। खलदलगंजन सुरदृगअंजन भवभयभंज नदासपते। सुनु करता शरणपवांरा दास तिहारा पदनमते। जय जयरघुवर०७२करगहिलीजै अभयकरीजै पदरतिदीजैमनबचते। विनयहमारी सुनुगिरिधारी अवधविहारी अघिकृते। मङ्गलदीन्हे सबसुखकीन्हे करगहिलीन्हे जानिभृते। जयजयरघुवर० ७३॥

स०। बैठिसमुद्रकि ओटके कोटमें कञ्चनके घरजाइभुलाना। बीसभुजा बलवन्तहुतो तबइन्द्र गयन्दहुसे हमताना। लाखुक-रोरिसुतासुतबन्धव सोगृहरावण जातनजाना। धराकोप्रमाणयही तलसी जो फरा सो झरा जो बरासो बुताना ७४ बलिविक्रम बणुदधीच गये औगये पारथ जिन भारत ठाना। बालिगये बल रूपगये जिनकी कस्वरी दशकण्ठ दबाना। गयेदुर्य्योधन जंगजुरे जिन चौंसठि कोणमें छत्रबिताना। धराको प्रमाणयही तुलसी जो फरा सो झरा जोबरा सोबुताना ७५ शोभित सोन सभाजहँ वृद्धन वृद्धनते जे पढ़े कुछनाहीं। ते न पढ़े जे धर्मन चीन्हहिं धर्मनसों जो दया उरनाहीं। सोन दया जुन धर्मधरैं धर धर्मन सों जहँ दान वृथाहीं। दानन सों जहँ सांचु न केशव सांचु न सोजो बसैछलछाहीं ७६॥

क०। गरेमुण्डमालधरे शीशपै मयङ्क बाल लालके बिलोकन को योगी एकआवैरी। भोगीलपटाये अंग अंगनमें खाये भंग गंग कोतरंग जटाजूटमें बहावैरी। नजरि बचाऊं बेरिबेरिमैं छिपाऊं वातेताहि देखिकै विशेष डावरो डरावैरी। लाखन उपाय करि हारी सारी रैनकान्ह दाखन न छुवैनेक माखन न भावैरी ७७॥

द्रौपदी नामके कवित्त सवैयादि॥

क०। पाय अनुशासन दुशासनके कोप धायो द्रुपद सुताको

चीरगहे भीरभारीहै। भीषम करणद्रोणबैठे व्रतधारी तहां कामिनी कि ओर काहू नेक न निहारीहै। सुनिकै पुकारिधायो द्वारका ते यदुराई बाढ़त दुकूल खैंचे भुजबल हारीहै। सारीबीचनारी है कि नारी बीच सारीहै किसारही की नारीहै कि नारही की सारीहै १॥

स०। द्रुपदी चहुंओर चितै जोरही चितजाय रह्यो यदुनाथ जहांहै। भीषमद्रोण उतारु भयेसो दुशासन अम्बर लेनचहाहै। पांचौपतीतन हेरिरही यदुनाथ उबारहु देर कहाहै। मध्य सभा मोहिंकरत उघारिसो चारिभुजाको मुरारि कहांहै २ कञ्चनरूपी अटारी तजीहम औरतजी कुबिजासी दासी। भोरहि भानुउदय जोभयो सत भामातजी अरधंग रमासी। बन्शीतजी अरु ग्वाल तजे हमधेनु तजी बनमांझ पियासी। वादिन द्रौपदी दौरे भले जब तूने कहीतुम द्वारकावासी ३॥

क०। सटकी सभाकी मति लटकी कुलकी गति हटकी न काहू सबकी जी हटकी। मटकी दुशासन सुनु वाकी कलासी भईचटकीसी ह्वैकै तिय देखिये सो भटकी। तूही २ रटकी सो तुहीजानै घटकी पै मटकीसी ह्वैकै आश चरणन तटकी। जीवन निपट कीन्ही पटकीन दीनानाथ पतिलाज पटकी तौतुम्हैंलाज पटकी ४ कबैआपगयेथे बिसाहन बजारबीच कबैबोलि जुलाहा बिनाये दरपटसे। नन्दजीकी कामरी न काहू बसुदेवजकी तीन हाथ पटुका लपेटे रहे कटसे। मोहन भनत यामें रावरे बड़ाई कहा राखिलीन्ही आनि बानिऐसे नटखटसे। गोपिनके लीन्हे तब चीर चोरचोरिअब जोरि २ देनलागे द्रौपदीके पटसे ५ द्रुपद सुताको कहि ल्यायोहै सभाके बीच नीचरंगी दुशासन कुमति मनमैंभरी। देखेभूप भीषम करण द्रोणमौन गहि खैंचत बसन उरधीर काहूनाधरी। दीननके नाथतुम ऋषिकाके नाथ नाथ अम्बर बढ़ायोहै पकारीजब हेहरी। नन्दके दुलारे रामकृष्ण जग तारे सुनौ पीतपट वारे देर मेरी बार क्यों करी ६॥

स०। बूड़त वारिमें आपि दवारि उबारि लियो प्रहलाद

मया हर । वै रविनाथ कियो जिन सेवक जानि भेखम्भसे बेगिहि बाहर । रूपधरे नरके हरिको हरणांकुश मारिगये जबढा हर । आननदेखि डरीकमला हँसिबेनिगह्यो मृगनैनीकी नाहर७॥

दो० । रह्यो ऐंचि अन्तन लहै अवधि दुशासन बीरु ।
आली बाढ़त बिरह ज्यों पञ्चालीको चीरु ॥

स० । चैनपरै नहिं मैनदहै दिननैनन मांझ रहैजल छायो । भावै न भोजन भौनसुहाय न हायहियेपरताप तवायो । ऐंचति औध दुशासनबीर जऊ बलकै तऊ अन्त न पायो । वहके बिछुरे बिरहास बढ़्यो अब द्रौपदीके पट ज्यों अधिकायो ८ ॥

दो० । नाह गरज नाहर गरज बोलि सुनायो टेरि ।
फँसी फ़ौजमें बन्द बिच हँसी सबन तन हेरि ॥

क० । आयुध अघट साजै भटनकी भीरभारी चारों ओर बिकट लियेईजात घेरिकै । नाहर किगरज गरूरसों गरजियतु ताहीसमय पीछेसे सुनायो बोल टेरिकै । वाकेअति बिक्रमको भाव जियजायो यह भिरैगो समर एक एककोनिवेरिकै । अबचल मूक बीच बन्दमें फँसीहै तऊउमँगि उछाहसी सबनतन हेरिकै ९ ॥

श्रीगङ्गास्तुति के कबित्त सवैयादि ॥

स० । जन्मभये जबते जगमें तबते धन पाप बटोरि लिये । भूलिरहै भवभोग बिलास न हांसिनमें नित चित्तदिये । गंग तरंग महातम देखि कछूमनमध्य भरोस किये । दास पवांर बिलम्बते केवल अम्बरखै अवलम्ब हिये १ गङ्गतरंग बिलोकतही अघभंगभये जगती जनके । पापी सुरापिनिहूं की भलीबिधि बांछित आयफलै मनके । शेष गणेश सकैनहिं भाषि महातमदेव घड़ी क्षनके । नाम प्रताप कितै अघईहै पँवार तरेशत योजनके २ गंग तरंग उमंग भरे ममलोककी लीक नवारतहैं । शम्भु जटा चढ़ि देखिदिखाय बसोपुर मेरो उजारतहैं । दर्शन मज्जन नीर पसंगन पापी कुढंगनि तारतहैं । यों यमराज पुकारत बैठि निहारत द्योस गुजारतहैं ३ ॥

क० । शोरकियो यमपुरमें जाय यमदूत मिलि एरेयमराजक-छु जानै तेंउपायहैं । द्विजबलदेव अबआवतहैं आइगये पापी अ सुरापी नीर गंगाते नहाइहैं । तिनहित देवनकी अँगना बिमान युत ठाढ़ी ढारिचौंर निज लोकहि लैजाइ हैं । शम्भु हितलाइहैं बिमल गुण गाइहैं औ मुक्तिपद पाइहैं न तेरेधाम आइहैं ४ कैसी बानी बिदित परीहै अबतेते गंगजगमें जहांपै अघवोधिनको जानै त । द्विजबलदेव कहै मुदित कियेते सब आननमें एकएकशीत कर ठानैतें । केते जोरिराखे मुण्डमाला मृगछाला हेरि हरषात नन्दीगण केते हांकि आनेतें । दैदैदान दीपतदुचद दुसचारिन को अद्भुत खीलति के खोले हैं खजाने तें ५ ॥

स० । ध्यान धरैनित गंग तरंगको शारदको गुण गायो करैजू । आठहू याम भजै श्री माधव सो सुमिरे सुखपायो करैजू । सादर पूजन कै बलदेव अक्षैबट के पहजायो करैजू । तारयही करतार करौ मन मेरो त्रिवेणी नहाया करैजू ६ ॥

इति प्रथमभाग समाप्तम् ॥

——o——

दूसराभाग ॥

बीरकवित्त॥

स० । कीजै न कोप कृपानिधि राम जोतौ गढ़लङ्क उठाय मैं लाऊ । कोउको भय अरु शङ्क न मानिकै रावण रानि पैपानिभराऊ । लच्छकहैं कविराजसमच्छ बिपच्छज शोनित सिद्धिचलाऊं । माथेमरोरि धरों दशकन्धके नाथकेहाथक पानजोपाऊं १ ॥

क० । गोपीनाथ नन्दन प्रभञ्जनको लङ्कावीच कूदोदेखि साहस सरासरके सरके । तालदेत जाकेकाल कालको करालकूटि कूटिगे हथ्यारजे कराकरके करके । खलभल हलङ्क खलनकेदह लक महलके बराबरके बरके । डरिडरि ढरिगये अडर डराय ढह ढरढर ढरके धराधरके धरके २ बारि टारिडारों कुम्भकरणहिबिदारिठारों मारों मेघनादै आजु योंबल अनन्त हौं । कहैं पदमाकर त्रिकूटहीको ढाहिडारौं डारतकरेई यातुधाननकोअन्तहौं । अच्छहि निरच्छ कपि रुच्छहि उचारों इमि तोणतिच्छ तुच्छन को कछु न गन्तहौं । जारिडारों लङ्कहि उजारि डारों उपबन फारि डारों रावणको तौमैं हनुमन्तहौं ३ सोहै अत्रओढ़े जेन छोड़शीशसंगरकि लंगरलँगूर उच्च ओजके अतङ्कामैं । कहैं पदमाकर त्य हुंकरत हुंकरत फैलतफुलत फाल बांधतफलङ्कामैं । आगे रघुबीर के समीरके तनयकेसंग तारीदैतड़ातड़के तड़के तमङ्कामैं । शङ्का दै दशाननको हङ्कादै सबङ्कावीर डङ्कादैबिजयको कपि कूदिपर्‍यो लङ्कामैं ४ बिगसि बितुण्ड दये झुण्डन के झुण्ड रिपु मुण्डनकी मालिका दईत्यों त्रिपुरारीको । कहै पदमाकर करारन को कोश दये षोड़शहु दीनेदान द्विजअधिकारीको । ग्रामदयेधामदयेअमित अरामदये अन्नजल दीने जगतीके जीवधारीको । दाताजैसिंह हैं बातैं तीन दीनीकाहू बैरिनकोपीठि और दृष्टिपर नारीको ५ झलकत आवै झुण्डझीलम झलानिझप्यो तमकत आवै तेगवाहीओ सिलाहीहै । कहै पदमाकर त्यों दुन्दुभि धुकारेसुनि अकबक

बोलैंयों ग़नीम औ गुनाहीहै। माधवकोलाल कालहू ते बिकराल दलमाजियायो ये दईदईयों कहाचाहीहै। कौनको कलेऊधों करैया भयो कालअरु कापै यों परैयाभयो राजबइलाहीहै ६ ॥

स०। कुम्भकरन्न हन्योरणराम दलो दशकन्धर कन्धरतोरे। भूषणबंश बिभूषण पूषण तेजप्रताप गरे अरिओरे। देवनिशान बजावत गावत धावतगे मनभावत मोरे। नाचतबानर भालुसबै तुलसीकहि हारे हहा भै होरे ७ हनुमान हठीलो रँगीलो बली ज्यहिं मानमथ्यो गढ़लङ्कपतीको। लैकरि मुन्दरा कूदिसमन्दर शोक हरोजाय सीय सती को। उखारि पहार सकेलि सजीवन तेजगयो क्षणमें प्रकतीको। तुलसी सङ्कट कयोंन कटै जब ध्यान धरो हनुमानयतीको ८ भोरते सांझलो सूर्य्यचलैं अरुझार चलैं हैं कवन्य परेलौं। यही गिरताज ग़नीमनको पणतौन टरैदुहुं लोक टरैलौं। ऐसी वही अरबी गरबी शिवगङ्करहूं यमलोक डरैलौं। सो शिरकाटि ग़नीमनके तरवार बही तरवाकेतरेलौं ९ लै प्रभुको बसुंदेवचले सो बिचारकियो तब नन्द गृहेलौं। जाय कलिन्दीमें ठाढ़े भयो बसुदेव डरे जल आयो गरेलौं। चरणन को यमुना उमही जलबाढ़ो जबैबसुदेव गरेलौं। हू कतहीयदुनन्दन के यमुनाजी बहीं तरवा के तरेलौं १० तरवारि गई बकराज के साथमें और लड़े मलिखान अकेले। काढ़िकै तेग फिरो दल में पृथिराज कि फौजको मारिकढ़ेले। लोहूके नारे पनारेबहे मानों रँगरेज कुसुम्भसोंखेले। ठाढ़ीकहै मलिखानकी नारि कि आवत कंत बसन्तसों खेले ११ शूर्पनखाहि बिरूपकरी हम तातेदियो तुमको दुखभारो। बारिधिबन्धन कीन्होहतो तुमसों सुतबन्ध न कीन्हो तुम्हारो। होयजो होनीतोहोयरहै नमिटै जियकोटि बिचार बिचारो। दै भृगुनन्दनको फरसा रघुनन्दन अवधपुरी पगु धारो १२ कोबपुरा जो मिलाहै बिभीषण हैकुलदूषण जीवैगो कौलौं। कुम्भकरन्नमरो मघवारिपु तौव कहांन डरौं यम सौलौं। श्रीरघुनाथके गातहि सुन्दर जानै नतैं कुशलातहै तौलौं। गाल सबै दिग्पालनके कर रावणके करबालहै जौ लौं १३ ॥

क०। साथना सयानो कोऊ हाथन हथ्यार रघुनाथजूके यज्ञको तुरङ्गहि राख्योहै । काछन कछोटी शिर छोटी छोटी काक पक्ष पांचही बरस केन बुद्ध अभिलाख्योहै । नलनील अङ्गद सहित जामवंत हनुमन्तसे अनन्त जिननीरनिधि नाख्योहै । केशवदास द्वीपद्वीपभूपनसे रघुकुलकुशलव जीतिकैबिजयरसचाख्योहै १४

स० । बालिबँध्यो बलिराव बँध्यो कर शूली के शूल कपाल थलीहै । कामजर्‌यो जरकालपर्‌यो बँधसेतु धर्‌यो विषहालहली है । सिन्धुमथ्यो कलकाली नथ्यो कहिकेशवचन्द्र कुचाल चली है । रामहू कीहरी रावणबाम चहू दिशि एक अदृष्टबलीहै १५ कर्णसे दुष्टहु पुष्टहुते भटपाप सपुष्ट न शासनटारे । सो दरसेन दुशासनसे सबसाथ समर्थभुजा उसकारे । हाथी हजारनकेबल केशव खैंचिथकेखटको डरडारे । द्रौपदीको दुरयोधनपै तिलअङ्ग तऊ उघर्‌यो नउघारे १६ कर्णकृपा द्विजद्रोण तहां तिनको मन काहूपै जायन टार्‌यो । भीमगदाहि धरेधनु अर्जुन युद्धजुरे जिन से यमहार्‌यो । केशवदास पितामह भीषम मीच करी बस लै दिशिचार्‌यो । देखतही तिनके दुर्योधन द्रौपदी सामुहेहाथ पसार्‌यो १७ कोशलराज के काजहौं आज त्रिकूट उपारिकै बारिनि बोरौं । द्वैभुज दण्डदै अण्डकटाह चपेटके चोट चटाकके फोरौं । आयसुभङ्गकोजोनडरौं तौ मैं जिसभासद शोणितबोरौं । बालि को बालकतौ तुलसी दशहूमुखके रणमेरद तोरौं १८ गहिमन्दर बन्दर भालुचले सोमनों उमड़े घनसावनके । तुलसीउत झुण्ड प्रचण्डझुके झपटेभटजे सुरदावनके । बिरुझे बिरदैतजे खेत अरे नटरे हठिबैर बढ़ावनके । रणमार मची उपरी उपरा भलेबीर रघूपति रावनके १९ शरतोमर शैलसमूह पँवार्‌त मारत बीर निशाचरके । इतते तरुताल तमालचले खलखण्ड प्रचण्ड महीधरके । तुलसीकरि केहरि नादभिरैं भटस्वर्गखगे खपुआखरके । नखचन्दन सों भुजदण्ड बिदण्डत मुण्डसों मुण्ड परोझरके २० राम शरासनते चलेतीर रहैंन शरीर हड़ावड़ फूटी । रावणधीर नपीरगलीलखिलै करखप्पर योगिनि जूटी । शोणितछीट छटान

परी तुलसीप्रभु सोहै महा छबिछूटी । मानहुंमर्कत शैलविशाल में फैलिचली जनु बीरबहूटी २१ ॥

क० । देखिचण्ड मुण्डको प्रचण्ड उग्रबोली शिवा अबल अ रक्षण की रक्षपक्ष पालीहौं । कहैं कालीदीन देव कौतुक बिलो- को नभचारौदिग दंतिबेको आज दुरातालीहौं । फोरिडारौं वसुधा मरोरिडारौं मेरुगिरि कालचक्र तोरिडारौं आजु मैं बहाली हौं । कालीकरौं अतिदल सबधिकराली करौं जंग भूमि लालीकरौं तौ मैं महाकालीहौं २२ हनुमन्तकी लपेटदै लँगूरकी झपेटदल दुष्ट कोदपेट वरपेट चाखलान । बजैनख चटाचट्ट दन्तहोत खटाखट्ट गिरैसैन घटाघट्ट फूटिफूटि पारजान । कपिकूह किलकार खल- नूह झिलकार परीपट पिलकार कटैं राकसनिदान । तहँतेजको कुमार करि कोपि बेशुमार बीर लक्षण कुँवर झुकिझारी किर बान२३ धर२हालैधरा धरधुन्धुकारनसों धीर न धरतजे धरैयावल वांहके । फटतपताल ताल सागरसुखातसातजातहैंउड़ातव्योम बिहँग बलाहके । झालरि रुकत झलकत झपीफीलनिपै अली अकबरखांके सुभट सराहके । अरि उरराह घोर परत संसार घोर बाजतनकारहैं बगैर नरनाहके २४ मण्डनमहीके अरिखंडे पृथ्वीराज बीर तेरेडर बैरीबधू डग २ डगेहैं । देश २ के नरेश सेवतसुरेश जिमि कांपत फनेशसुनि बीररस पगेहैं । तेरेश्रुति मण्डलनिकुण्डल बिराजतहैं कहैंकविचन्द यहिभांति जीवजगेहैं । सिन्धुके वकील संगमेरुके वकीलहिले मानहुं कहतकछु कानि आनिलगे हैं २५ श्वेतरथ श्वेतबस्त्र श्वेतध्वजा श्वेतछत्र श्वेतहै तुरंगलखि भूपलागे लरजन । ज्ञानमें गणेशअस्त्रशस्त्रमें महेशसम पौरुषमें रामकोऊ कहिन सकेतन । कहै हरचरण मारतण्डके स मानतेज जाकीहांक सुनेमुख फेरिलेत अरिजन । रोदाके बजत शूरबीर संग्राम तजैंगंगाके तनयकी सुनिसिंहकीसी गरजन २६ ॥

स० । तीरकमानगही बलमण्डक मारमची घमसान मचायो । योगिनी रज्जकेभारी भई शिवशङ्कर मुण्डकी मालले आयो । भीमसमानको युद्धकियो कविजैतक हैं जगमेंयश पायो । शाह

के काजपै शूरलड़्यो गिरटूटि पड़्यो धड़ धारुके धायो २७॥

क०। लगीसोंलगाई लंकवेहनि खराबकरौं मारिकरौं मोर नि अहार मारजारेको। सो कवि निधानकान आंगुरिन मूंदिदहौं सुनिहौं नघोरशोर झिल्ली झनकारेको। भेकनकीभीड़ सहसासन मिटाय डारौं मेटि डारौं गरबगरूर घनकारेको। पाऊंजो पकरि काहू जलसों जकरितन फीहाफीहाकरौं यापपीहा दईमारेकी २८

यश दश दिशनिमें छायरह्यो महाराज मानिकैप्रचण्ड रिपुदलके दलनते। बढ़ेबलवन्ता जेमवास कलकत्ताभरे लौन्हेलूठि मत्ता सबैकत्ताके बलनते। प्रबल फिरंगी ऐसोतोपराम चंगीकरैंघाते बहुरंगीभरे हिम्मत कलनते। फौज चतुरंगी तब चढ़त अभंग नेक लागोनारिरंगी छोड़ि संगीकेचलनते २९॥

स०। जलजोर महाघन घोरघटा ब्रजऊपर कोप पुरन्दरको। कवि पुष्कर गोकुलगोपसबै निरखैं मुख श्रीमुरलीधरको। धरतें धरिवो धरणीधरको धरकयोंन हियो धरणीधरको। करलै जनु कांकरको करको करुणा करको करुणाकरको ३०॥

क०। गरदके झुण्डढक्यो मारतण्ड मण्डललौं बाने फहराने जबढिग आनिअरिके। तमकि तमकि तबगाजेकर जिलेबीर बि रुझाने खरुजाने जैसे बाघ थरिके। मण्डन बिरचिलीनी घोरिन की बागदीनी दौरिकै दरेरे जैसे भादौं की लरिके। जित तित बि जुरीसे लोहलगे लहकन बरसन बाण लागे जैसेबूंद झरिके ३१

अभय कठोरबाणी सुनिलक्ष्मण जूकी मारिबोको चाही जोसुधा-रो खलतरवारि। यार हनुमन्त तेहिगरजि हहासकरि डपटि प-करिग्रीव भूमिलै परेपछारि। पुच्छन लपेटि फेरिदन्तन दरदरा य नखन बकोटिचोथि देतमहि डारिडारि। उदर बिदारि मारि लुत्थन लोटारि बीर जैसे मृगराज गजराज डारै फारिफारि ३२

जानैं रीति भेदजे बखानैं चहूं वेद अरु सपन्यहुं खेदजाके आव तमनैं नहीं। जाक्षण सरोष ह्वैकै लक्ष्मणबीर तब अरिदल करि तिन्हैं नेकहु गनैनहीं। रोपत प्रचारि रण शूरनसों रारि अह अबल बिचारेको बिचारिकै हनैनहीं। सहज कमर जब कसत

अमर तव समरमें और बीर समता भनैनहीं ३३ अविधीर बि
क्रम प्रचारै जो समरबीच तिनहूं को झपटि दपटि नेक हारैना
जाहिरहै जम्बूद्वीप श्रीप्रताप रुद्रसिंह दान सनमान समय यो
चउरधारैना। द्विज बलदेवकहैं बकसि बितुण्डदेत झुण्ड झुण्ड
गुणिनको लखिकै बिचारैना। हल्लाहै कुबेरके महल्लामें त्रसित
मेरु कोबिद कबिन हित मोहूं को उपारैना ३४॥

स०। अञ्जनीतात दई जब लात गिरयो हहरात न गातसँभा
रयो। फेरि सचेत उठयो रणधीर भईअतिपीर शरीर न टारयो।
कहै कृष्ण प्रशंसि कह्यो मनुजाद इजादहै पौरुष की अतिहारो॥
देखि हृदयसकुचे हनमान न प्राणगयो धृगमान हमारो ३५ म-
ण्डित जे रबिरूप किरीटन माणिक मोतिन सों झलकारे।
पूजितफूल सुगन्धनसों नभवालिनके तनमें महँकारे। काहूलचे
नलचावत और न चन्दन ऐसे महा अहकारे। तेगिर रावण के
रणमें हनुमानबली चढ़ि लातनमारे ३६ इन्द्रकेवज्रसे जेन डरे
न टरेहैं जलेशके फांसप्रहारे। शम्भुत्रिशूल गड्योनहि नेकनवि-
ष्णुकेचक्रसों बक्र नहार। ब्रह्मकी शक्तिनशाले हिये रणआयेते
रावणके ललकारे। काल दपेटन जेनटरे हनुमान बलीते चपे
टनमारे ३७॥

क०। नाचि २ कूदि २ किलकि २ कपि उछरि २ राहलेत आ-
समानको। बलकि २ बलुकरि २ छरिदरि छरत छेद भेद कृत
गति भानको। रुण्डनसों रुण्डअस मुण्डनसों मुण्ड करिभार
भट झुण्डन घुमण्ड मारु घानको। शबस कहतराम हियेहर्षात
जातदेखो बीर लषण लड़नि हनुमानको ३८॥

दो०। प्रलयकरन बरसनलगे जुरि जलधर इकसाथ।
सुरपतिगर्ब हरयोहरषि गिरिधरि गिरिधरहाथ॥

क०। प्रलयके घुमण्ड घनआये ब्रजमण्डनपै मण्डिकै अख-
ण्ड धारलायो झरअतिको। निरखि बिकलभये गोपीगाय ग्वाल
सब काहूके हियेमें रह्यो धीरज न रतिको। ताहीसमय यशुदाको
लाल ऐसोहाल देखि हरषि हरयोभयो ब्रजको बिपतिको। पा-

तलो उठाय राख्यो गिरिवर पाणिपर दूरि कीनो सब गरब सुरपतिको ३९ ॥

स०। अतिकोपसों रोप्योहै पाउँसभासब लङ्कसघङ्कित घोर मचा। तमके घननादसे वीर पुचारिकै हारि निशाचर सैनपचा। नटरै पगमेरुहुसों गहओभो सो मनों महिसङ्ग बिरञ्चि रचा। तुलसीसब शूर समहतहैं जगमें बलशालिहै बालिबचा ४० ॥

क०। आयो आयो आयो सोई बानर बहारिभयो घोरचहुंओर लङ्काआये युवराजके। एककाढ़ेसाज एकधोजकरे कहाढ़ेहै पोच भई महाशोच सुभट समाजके। गाज्यो कपिराज रघुराजकीशपथ करि मूंदेकान यातुधान मानों गाजे गाजके। सहमि सुखात बातजातको सुरति करि लवाज्यों लुकात तुलसीझपेटबाजके ४१॥

स०। तोसों कहौं दशकन्धरे रघुबीर बिरोध न कीजियजौरे। बालिबली खरदूषण और अनेक गिरेजेते भीतमें दौरे। ऐसिय हालभई त्यहिकौन तोलैमिलु सीयचहै सुखजोरे। रामकरोष न राखिसकै तुलसी बिधि श्रीपति शंकर सोरे ४२ रजनीचर मत्तगयन्द घटा बिघटैं मृगराजके साजलरे। झपटैं भटकोटि महीधरकैं गरजैं रघुबीर की सौ ह करै। तुलसी उतहांक दशानन देत अचेतभे बीरको धीरधरै। बिरझो रणमारुतको बिरुदैत जो कालहुकालसों बूझपरै ४३ जो दशशीश महीधर ईश को बीस भुजा खुलखेलनहारो। लोकप दिग्गज दानवदेव सबै सहमे सुनि साहस भारो। बीरबड़ो बिरदैतबली अजहूं जगजागत जासु पँवारो। सो हनुमान हन्यो मुठिका गिरिगो गिरिराज ज्यों गाजकोमारो ४४ ॥

क०। दबकि दबोरें एकबारिधिमें बोरें एक सगनमहीमें एक गगन उड़ातहैं। पकरि पछारें कर चरणउखारें एक चीरि फारि डारें यकमीजि मारेलातहैं। तुलसी लषण राम रावण बिबिध बिधि चक्रपाणि चण्डीपति चण्डिका सिहातहैं। बड़े बड़ेबनिय तबीग बलवान बड़े यातुधान यूथपनि ताते बातजातहैं ४५ लोथिनसे लोहूके प्रबाह चले जहां तहां मानहु गिरिन्ह गेरु झरना

झरतहैं। शोणित सहत घोर कुंजर करारे भारे कूलते समूल बाजि बिटपपरतहैं। सुभट शरीरनीरचारीभारीभारी तहां शूरन उछाहकूरकादर डरतहैं। फेकरिफेकरि फेरु फारिफारि पेटखात काककङ्कबालकोलाहल करतहैं४६ ओझरीयझोरी कांधे आंतन की सेलोबांधेमूड़के कमण्डल खपर किये कोरिकै। योगिनि जमातिजारि झुण्डबनी तापसीसी तीर तीर बैठीसो समरसरि खोरिकै। शोणित सो सानि सानि गूदा खात सेतुआ से प्रेत यकपियत बहोरिघोरि घोरिकै। तुलसी बैताल भूतसाथलिये भूतनाथहेरि २ हँसतहैं हाथ२ जोरिकै ४७॥

स०। पालिबेको कपिभालु चमूयमकाल कालहुको पहरीहै। लङ्कसे बङ्क महागढ़दुर्गम ढाहिबे दाहिबेको कहरीहै। तीतरतोम तमीचरसैन समीरको सनुबड़ो बहरीहै। नाथभलो रघुनाथमिलै रजनीचर सैनहिये हहरीहै ४८ जाकीबांकीबीरता सुनत सहमत शूर जाकीआंच अबहूं लसत लङ्का लाहसी। सोइहनुमान बल वान बांको बानइत जोहैयातुधान सेना चलेलेत थाहसी। कम्पत अकम्पन सुखायअति कांप २ कुम्भऊकरण आइरह्यो पाय आहसी। देखेगजराज मृगराजज्यों गरजधायो बीर रघुबीर को समीरसूनु साहसी ४९॥

क०। अङ्ग २ दलित मनहुं फूले किंशुक में हनेभट लाखन लखनयातुधानके। मारिकै पछारिकै उपारि भुजदण्डचण्ड खण्डि खण्डि डारते बिदारे हनुमानके। कूदत कबन्धके कदम्बबम्बसी करत धावत देखावतहैं जोर तोड़ बानके। तुलसी महेश बिधि लोकपाल देवगण देखत बिमानचढ़े कौतुक मसानके ५०॥

—※—

तीसराभाग रसकवित्त॥

जिसमें ॥

बसन्तऋतु। ग्रीष्मऋतु। पावसऋतु। शरदऋतु। हेमन्तऋतु। शिशिरऋतुके कवित्त सवैयाहैं। दूसरे विशेषरसकवित्त व सवैया। तीसरे बांसुरीविषयके कवित्त सवैया। चौथे स्वप्नवर्णनके कवित्त सवैया। पांचवें सिंहावलोकन छन्द। छठे परस्परवार्त्ताके कवित्त सवैया। सातवें उपमाके कवित्त सवैया। आठवें समिक्षाके कवित्त सवैया। नवें फाग व होलीसमयके कवित्त सवैया। दशवें फारसी व भाषा संयुक्तके कवित्त सवैया॥

बसन्तऋतुके॥

स०। आजसुभाय नहीं गईबाग बिलोकि प्रसूनकी पाँतिहो पगि। ताहिसमय तहँ आयेगोपाल तिन्हैंलखि औरौ गयो हियरो ठगि। पै द्विजदेवन जानिपरयोधौं कहां त्यहिकाल परे अँसुवा जगि। तू जोकहैसखि लोनोंस्वरूप सो मोंअँखियानमें लोनीगई लगि १ भूमैभूले मलिन्दन देखिनितै तनभूलिरहैं किनि भामिनियां। द्विजदेवजू डोले लतानचितै हियेधीरधरै किमि कामिनियां। हरिहायबिदेशमों जायबसे तजिऐसेसमय गजगामिनियां। मनबौरैन क्यों सजनीअबतो वनबौरी बिसासिनि आमिनियां २ आहकै काँपि कराहिउठी दृगआँसुन मीचि सकोच घरीहै। लैकर कागदकोरोलला लिखिबेकहँ बैठी बियोग कथाख्वै। ऐसेमों आनिकहू द्विजदेव बसन्तवयारि कढ़ीतितहीहै। बातकीबातमों बौरीतिया अरु पीतहै पाती परी करसेख्वै ३ फूलनदे अबैटेसू कदम्बन अम्बन बौरन छावनदेरी। री मधुमत्त मधकन पुञ्जन कुञ्जन शोर मचावन देरी। क्यों सहिहै सुकुमारि किशोरि अरी कल कोकिल गावनदेरी। आवतही बनिहै घरकन्तहि बीर बसन्तहि आवनदेरी ४॥

क०। कीधोंमोरशोर तजिगयोरी अनेकभांति कीधोंउतदादुर नबोलतनयेदई। कीधोंपिक चातकचकोर कहूं मारिडार्‌यो कीधों बकपांति कहूं अन्तरगत ह्वैगई। झींगुर झिंगारैं नाहिं कोकिल बिसारैंनाहिं बैनजयसिंह दशोदिशहूं सोसोगई। जारिडारेमदन मरोरिडारे मोरसब जूझिगयेमेघ कैधों दामिनी सतीभई ५॥

स०। मदमाती रसालकी डारनपै चढ़ीआनँदसों योंबिराजती हैं। कुल जानिकीकानि करैनकछू मन हाथ परायहि मारतीहैं। कोउ कैसीकरै द्विजतूहीकहै नहिं नेकोदया उर धारतीहैं। अरी कैलियाकूकि करैजनकी किरचैं२ किये डारतीहैं ६ झूरिसेकौने लियेबनबागये कौनेजु आंबनकी हरिआई। कोयल काहे कराह तिहै बन कौने चहूं दिशि धूरि उड़ाई। कैसी नरेश बयारि बहै यहकौनधों कौनेसो माहुरनाई। हाय नकोऊ तलाशकरै एपला-शनकौने दवारिलगाई ७॥

क०। कूलनमें केलिन कछारनमें कुञ्जनमें क्यारिनमें कलित कलीन किल कन्तहैं। पद्मपदमाकर परागहू में पौनहू में पातिन में पीकन पलाशन पगन्तहैं। द्वारमें दिशान में दुनीमेंदेश देशनमें देखौ दीप दीपनमें दीपति दिगन्तहैं। बीथिनमें ब्रजमें नबेलिन में बेलिनमें बननमें बागनमें बगर्‌यो बसन्तहैं ८॥

स०। आयो बसन्त दहन्तसखी घरआये नकन्त नआये संदे-शन। शम्भुकहैं पथिकायेसबै अरु कोऊ बिदेशी रहेन बिदेशन। चन्द्रमुखी दृगते अशुवांढुरि आनिपड़े कुचयाही अंदेशन। मानो मयङ्क सरोजनमें मुक्ताहल लैलै चढ़ावैं महेशन ९॥

क०। जबतेहमारे प्राणप्यारेहैं पधारेउत धीरनहिं धारेजात पीर हियमेंजगैं। शीतल समीरभयो तीर कालिन्दीके तीर बीर बलबीर बिननीर दृगतेडगैं। केशरीसमान जब बिरहपरैहै भान योगज्ञान एमयन्द यूथ तबही भगैं। बोली कोकिलानकी करैहैं शूलहूलहमें ऊधो ए कदम्बनके फूलगोलीसे लगैं १०॥

स०। शुभ शीतल मन्द सुगन्ध समीर कछू छल छन्दसे छ्वै गयेहैं। पदमाकर चांदनी चन्द्रहूके कछु औरही डौरनच्वैगयेहैं।

मनमोहनसों बिछुरेइतही बनिकै न अबै दिनद्वैगयेहैं । सखिवै हमवै तुम वैहीबने पै कछूकेकछूमन ह्वैगयेहैं ११ ॥

क० । औरैभांति कुञ्जनमें गुञ्जरत भौंरभीर औरडौर झौरनमें बौरनके ह्वैगये । कहैपदमाकर सो औरैभांति गलियान छलिया छबीले छल औरै छबि छ्वै गये । औरै भांति बिहँग समाजमें अवाजहोत ऐसो ऋतुराजके न आजदिन ह्वैगये । औरै रस औरै रीति औरैराग औरैरङ्ग औरैतन औरैमन औरैबन ह्वैगये १२ ॥

स० । गेजबते उतनन्दलला तबते निजहालन पूछतकोई । तानतरंग तजौतुरते बलदेव मिलेपर आनँदहोई । पाइबसन्तन सन्तरहैमन काबिधिसे निजभाव बिगोई । माल बिशाल दियो हितलालभये बिरहाल यही लयसोई १३ कामकलाधरके मिस से यह खास प्रकाश बिगारि दियो है । देखहुकै हितसों बलसों बलदेव हियेबिच बास लियोहै । साजिसुगन्ध प्रफुल्लितभो बन भौंरनभीर अधीर कियोहै । नन्दकुमार कहांमिलिहैं कबतेअधरा-मृत नाहिं पियोहै १४ होतेरहे नव अंकुरकीछबि छाहँ कछारन में अति न्यारी । त्यों द्विजदेव कदम्बन गुच्छन एई नए उनए सुखकारी । कीजियेबेगि सनाथ इन्हें चलिये बन कुञ्जन कुञ्ज बिहारी । पावसकालके मेघनये नवनेहनई वृषभानदुलारी १५ एब्रजचन्द्र चलोकिन बाब्रज लूकै बसन्तकी ऊकनलागीं । त्यों पदमाकर पेखो पलाशन पावकसीमन फूकनलागीं । वेब्रजवारी बिचारीबधू बन बावरीलौं हियेहूकनलागीं । कारीकुरूप कसाय नैये सु कुहूकुहू कैलिया कूकनलागीं १६ ॥

क० । पातबिन कीन्हें ऐसीभांति गणबेलिनके परतन चीन्हें जेये लरजत लुञ्जहैं । कहैपदमाकर बिसासीया बसन्तकेसो ऐसे उतपात गात गोपिनके भुञ्जहैं । ऊधोयह सूधो सो संदेशो कहि दीजोभले हरिसों हमारोह्यांन फूले बनकुञ्जहैं । किंशुक गुलाब कचनार औ अनारनकी डारनपै डोलत अँगारनके पुञ्जहैं १७ ॥

स० । बायु बहारि२ रहे क्षितिबीथी सुगन्धन जातीसिंचाई । त्यों मधुमाते मलिन्दसबै जयके करखान रहेकछु गाई । मङ्गल

पाठ पढ़ैं द्विजदेव सबैविधिसों सुखमा उपजाई। साजिरहे सब साजघने बनमें ऋतुराजकी जानिअवाई १८॥

घनाक्षरी। चहँकि चकोरउठे शोरकरि भौंरउठे बोलिठौरठौर उठेकोकिल सुहावने। खिलिउठी एकैबार कालिकाअपार हिलि हिलिउठे मारुत सुगंध सरसावने। पलक न लागी अनुरागी इन नैननपै लपटिगये धौं कबैतरु मनभावने। उमंगि अनन्द अँशु-वान लौं चहूं घालामे फूलि फूलि सुमन मलिन्द बरसावने १९॥

क०। खातो हरषातो रसजातो मदमातो हिये कातोसीलगातो टेर बिरही बिघातो की। जातोलै किरातो मत आतो नादयातो नाचपातो तालगातो ना पिरातो उतपातो को। पातोकेहू भांतो तौ बिसातो जो पोसातो औ धरातो सियरातो जो व्यथातो तातो छातीको। न्हातो छतजातो मैं नोचातो रोमपातो काढ़िगातो लै जलातो जीभ कैलिया कुजातीको २०॥

ग्रीष्मऋतु बर्णन

क०। फहरैं फुहारनीर नहर नदीसी बहै छहरैं छबीन छाम छोटिन की छाटी है। कहै पदमाकर त्यों जेठकी जलाकैं तहां आवैं क्यों प्रवेशबेष बेलिनकी बाटीहै। बारहू दरीनबीच चारहू तरफ़तैसो बरफ बिछाय तापै शीतल सुपाटीहै। गजक अँगारको अंगरसे ऊंचोहै कुच आंसवअंगरको अंगरहीकी टाटीहै १ धौर हर धौलधूप धापहू धसै न जामें चहुंघा दुआरके सुगंध सारशालास। मणिदीप माला मणिभूषण बलित बाला खासे परयङ्क वासे सु-मननि माला से। व्यञ्जन उशीर नीर मलयज समोय ह्वै पर्यंत समीरहै सरस शीतकालासे। जिनहेतु बिरचे बिरञ्चि हैमसाला ऐसे व्यथित न होत ते निदाघ जात ज्वालासे २॥

स०। ऋतु ग्रीषमकी प्रतिबासर केशव खेलतहैं यमुनाजलमें। इत गोपसुता वहिपार गोपाल बिराजत गोपिनके गणमें। अति बूड़तिहै गतिमीननकी मिलि जायउठैं अपनेथलमें। यहिभांति मनोरथ पूरिदोऊजन दूरिरहैं छबिसो छलमें ३॥

पावसऋतु वर्णन

स०। आई सोहाई नईबरषा ऋतुरीझ हमारी कही पियकी जिए। जैसेही रंगलसै चुनरी पिय तैसोही पाग तहूं रंग लीजिए। झूला पै झूलहिं एकही संग मुबारिक एतो कहो पुनि कीजिए। जैसे लसे घनश्यामसो दामिनि तैसे तुम्हारे हियेलगि भीजिए १ मल्लिकान मञ्जुल मलिन्द मतवारे मिले मन्द मन्द मारुत मुहीम मनसाकी है। कहै पदमाकर सुनादत नदीन नित नागरि नवेलिनकी नजरि निशाकी है। दौरत दरेरे देत दादुर सुदूदै दीह दामिनी दमकुनि दिशानिमें दिशाकीहै। बद्दलनि बुन्दनि बिलो क्यो बगुलानिबाग बंगलनवेलिन बहार बरषाकी है २॥

क०। केकिनके नाच गान कूहूं कूक कोकिलकी रटनि पपीहरा कीनाम धुनिठानीहै। बूंदनके पातअलि लोचन अवतजात जाय तृण जात पुलकावलि निशानीहै। मालहैं बिशाल बकपांतिनकी दीनद्याल बारिवाह नये वृन्द गन्दना बखानीहै। झला झल चपलाकी द्युतिध्यानभई आय पावस न होयभक्ति कला प्रगटानीहै ३ घनकी फनकघन घण्टा घनकत आली दामिनि दमकदेत दीपक प्रकाशहै। बूंदनके फूल जाल धनुलै बिशाल माल आये झुकिमेघ सो प्रणामको हुलासहै। मोरन के शोर चहुं ओर बिनय दीनद्याल पवन झकोर जोरकरं आसपासहै। पूजनकरत प्रीति रीति प्रगटाय यह पावस न होय परमेश्वर को दासहै ४ श्यामछबि धरेफिरैं धुरवा धरनि छवैरी इन्द्रधनु पीतपट चटक दिखायोहै। दामिनि दमक द्युति देत दुहुंओर सोई कुण्डल अमोल लोल गतिचमकायोहै। बिशद बलाकमकी पांतिबनमाल अलि मन्द मन्द मेघबांसुरीलौं सुरगायोहै। आवनि अवधिरही प्यारे मनमोहनकी सावन सोहावन सो साज साजि आयोहै ५ पावस मैं जागि अनुरागिरी सरोज नैन रैन दिनदेत उपदेश को मनोजमुनि। नन्दके किशोर बिन कैसे रहै जीवछिन पीउ२ होति पपिहा की चहुं ओर धुनि। अंग थहरान लगे लता लहरा न लखि सखि नहिं धीर पीतपट फहरान गुनि। घटा

घहरान क्षणछटा छहरानलगी हियोहहरान लगोझरि झहरान सुनि ६ झमतझुकत झूमि झूमि घूमि घूमि चले भूमसोंभिरत मनोबलके उमङ्गये। बार २ गरज सुनावैंबरजे न जाहिं नहीं है उदारधारे मदके तरङ्गये। दन्तबग पांतिते डरावैंबिनकन्तभारे अंकुश समीरहिन मानैं कारे रङ्गये। करियेसहाय आययाहिक्षण घनश्याम होहिंन सयन घनमदन मतङ्गये ७ सांझहूसकारे झनकारे होतनदीनारे पावसकेमांझ झांझझिल्ली न तजतये। दामिन मसालको दिखावैताल दादुरदै मोरचहुंओर नाच नाटको सजत ये। धुरवामृदङ्गनको धोरधुन्दकार ठान राते नयनमाते कलगान को भजतये। शोकको जनम ब्रज ओकमें भयोहैऊधो सांवरे विरहते बधावरे बजतये ८ सावन सोहावन विशेषिनभ धनुलेखि यादिहोति झटपट प्रीति अभिरामकी। तकिबगपांति बिलापाती अकुलातीमति आवतिसुरत वह मौलशिरी दामको। मोर चहुंओरदेखि मुकुटसुरतहोति चपलाचमकपेखि कुण्डल ललामकी। ऊधो ब्रजबाम कैसे धीरधरैं सूनेधाम लखि घनश्याम सुधिआवे घनश्यामकी ९ सांचीकहैं खबरेसों झाखरेलगैं तमाल आवैज्यहि कालसुधि सांवरे सुजामकी। फूलभार भरीडार जैसे यमजार ऊधो कालिन्दी कछारसजै धारज्यों कृपानकी। चपलाचमक लगैं लूकहू अचूकहिये कोकिल कुहूक बरजोर मोरवानकी। कूक मोरवानकी करेजाटूक२ करैलागतहै हूकसुनि धुनिधुरवानकी १० पावसमें मोरदै न छाड़ैंक्षण दामिनहूं किमि न रसिक मनमोहन को क्योंतजैं। अचलापुरानी पुलकावलीकोआनिउर धायरजवती सरिसिन्धु सङ्गकोतजैं। नीरको नपुंसक कहतकवि धीरसबै होय कै अधीरतेऊ नारी २ कोभजैं। कुसुमित लतालखो लपटो तमालनसोंलालनसों कहौऊधो क्योंनअजहूं लजैं ११ कल न परहिंये कन्हैयाकी सुगैयालखे चलन समैया में ललनकह्यो आवनो। औधि आश श्वासरही प्यास अधरामृतको आयो यह सावनो न आयो मनभावनो। पीरेया दुकूलकी सुरतिआये शूलउठै कूल कालिन्दीको हूललागत डरावनो। पावस रसमदेखि दहतअसम

बान ऊधोकयों खसमकह्यो भसमचढ़ावनो १२ गयेकहि आवन न आये यहिसावनमें ऊधोमनभावनभुलाय रहेहैं तहीं। ह्वैरहीं बिहालबाल ब्रजकीगोपाल बिना रैनदिन नैनते अपारधार ह्वैबहीं। बैठिजन पुञ्जठाम यमुना निकुञ्ज धाम छांड़ि श्याम पाहिं छांसुहात नहिहै कहीं। गरजैहैं घनघोर लरजैहैं बनमोर नन्दकेकिशोर सुनी अरजैं अजैं नहीं १३ ऐहैं कबहूं धोंहरिकहो तुमसूधोऊधो ब्रजकीबधूटी जूटी बूझतीहैं बेरिबेरि। देहकोपरस मृदु सरससनेह वह होयगो दरश घनश्याम कोकि नाहिफेरि। आयो यहसावन न आयेमनभावन क्यों लगोहै डरावन मनोज जनुफौजघेरि।द्रुमैद्रुम डारछोर झूमैं पिक बरजोर घूमैं घनघोर मोर जूमैं चहुओर टेरि १४ जादिनते प्राणरखवारेहैं पधारे ऊधो तबतें हमारेउरभारे खेदहैंसबै। कोकिल कुहूक हूकलगैं बिज्जु कलालूक टूक २ करैंहियो मेघगरज जबै। घेरे दुःख मयन मनि धीरज सकै न धरिआवत न चैन दिनरैन मनमें अबै। पैहैंसुख नयनममलखेसुखमाकेअयनआये सुखदैनयहबैनसुनिहौंकबै १५॥

क०। दूबरीभईहै देह कूबरीसनेह सुने ऊबरी न शोक सिन्धु पायज्ञान वीहितैं। रही अकुलाय हायकरैं गिरको नवावे कहैं यदुरायरहे केतदिन कोबितैं। गाढ़ये असाढ़देखि बाढ़त बियोग बिथा दामिनी दमकमोर शोरहैं जितैं तितैं। आये घनश्याम काहबामने सुनाइटेरि चौंकि २ उठी चन्द्रमुखीचहुं घाचितैं १६ बाटिका बिहङ्गनपै बारिगात रङ्गनपै बायुबेग गङ्गनपै बसुधा बगारहै। बांकीबेन ताननपै बंगले बितानपै बेष औध पाननपै बोधिन बजारहै। वृन्दाबन बेलिनपै बनिता नबेलिनपै ब्रजचन्द्र केलिनपै बंशीबट मारहै। बारिके कनाकनपै बदलत बांकनपै बिज्जुली बलाकनपै बरषा बहारहै १७ हरषे हरौलहै अमरषे अनंगहेत करषे कलापी चोपि चातक चमूपिली। उमड़ घटाहैं मानिकरने छटाहैंछटा फेरत पटाहैं ठटाशूरकी हटाकि ली। घेरिकै अड़ेहैं बिनबूंदन लड़ेहैं औध आनँद खड़ेहैं देखि दादुर बड़ेदिलो। कादर बियोगी हारि चादर बलाकि फेरबादर

बहादुरको नादिर फ़तेमिली १८ एरीऋतु पावसमें मोरघोररोर करैठौर २ मण्डुक कठोरघोरबै रह्यो। देखिकै बकालिरी कपालौ अरिजालौ हालौ अलीबनमालौ बिनकालौ मोहिकैरह्यो। दामिनी दमकबिच यामिनी बिलोकि नितकामिनी सकातबात मुखपै नथैरह्यो। झिल्लीझनकार मेघबारिधारझारैं पिककोकिल पुकारैं यों महेमदत ह्वै रह्यो १६ फुही २ बूंदझरैं बीर बारि बाहनते कुहूकुहू सुनिपरै कूक कोकिलानकी। ताहीसमयश्यामा श्याम झूलत हिंडोरे चढ़े बारिछबि कोटिनमैं रतिपँचबानकी। कुण्डल लटकसोहैं भृकुटी मटकमोहै अटक चटक पटपीत फहरानकी। झूलतिसमय कीसुधिभूलतिन हूलतिरीझुकनि झुकनि झकोरनि भुजानकी २०॥

स०। नभमण्डलतेरे घुमण्डिघटा अरुमेघ चहूं दिशि छायरहे हैं। पावसके बिछुरे बनिता अरु आवन हारतेआइरहेहैं। कोइली बागन शोरकरैं पपिहा बन शोर मचायरहेहैं। क्यहि कारण कन्त बिवाहिहमैं हरिहाय बिदेशमें छायरहेहैं २१ भूमि हरीचहु ओरु भरेजलहैं सुथरीऋत आईअषाढ़ी। मीठी महाधुनि मोरन की कबिराजसुने सबकी रुचिबाढ़ी। झूलत गोपी गोपाल मिले वृषभानके आंगन भीरहैगाढ़ी। हेरेहरीमिस वाकीवटा भरिफेरि घटामैं अटापर ठाढ़ी २२ आई अषाढ़की कारीघटा घहरानलगे बदराचहु ओरके। दूजेजो कन्त बिदेशगये सुधि पाईन नेकरही मगहेरिके। उमगाय स्वभावबिहंग कहेमृदुबैन कहैजो सखीकहे टेरिके। सोनेसेचोंच मढ़ैहौंतेरी बलिजैहौं पपीहा पियाकहुफेरिके २३ कबिबेनीनई उनईहै घटा मोरवा बन बोलत कूकनरी। छहरैं बिजुली छतमण्डल छवैं लहरैं मन मयन भभूकनरी। पहिरौ चुनरी चुनिकै दुलही सँग लालके झूलत झकनरी। ऋत पावस योंही बितावतहौ मरिहौ फिरि बावरी हूकनरी २४ भादा किकारी अँध्यारी निशालखि बादर मन्दफुही बरषावै। श्यामाजि अपनेऊंचे अँटापै छकीरस रीति मलारहे गावै। तासमनागरके दृग दूरिते चातक स्वाति किमौजमेंपावै। पौन मयाकरि

घूंघटटारै दयाकरि दामिनि दीपदिखावै २५ लागो अषाढ़ सबै सुखसज्जनमैं जियमें बिरहा दुख बोई । सावनमें सब केलि करैं मैं अकेली परी सँग साथनकोई । कैसे जियों घरहे सजनी फिरि भाँदवमें घनश्याम न होई । कौनसी चूकपरी बिधना बर-सात गई पिय साथन सोई २६ लागे अषाढ़सबै घर आवतहैं बिदेश रहै नहिंकोई । मानुषको कहियो तो कहा पशु पक्षीसबै बस कामके होई । कोरी सखी मुखमोरि हँसै यहपावस मास त्रियारति जोई । कैसेये प्राण रहैं घटमों बरषातगई पियसाथन सोई २७ दुखदूरि भयो वहप्रीतमको करिबे पिक चातक गान लगे । चपला चमकैं लखि चारिदिशा निशिमें जुगुनू दरशानलगे । गिर धारन पावस आवतही बकवृन्द अकाश उड़ान लगे । धुरवा सब ओर दिखानिलगे मोरवानके शोर सुनानलगे २८ ॥

क० । कारे २ बादर डरावने लगत अब दादुरकी धुनि सुनि भूलै दशा तनकी । बूंदकी झकोर झकझोर पुरवाई करै हरै मन मोर शोर चहूं ओर बनकी । हरीहरी लतिका करावैं घरी घरी यादि इन्द्र गोप लखि लाल मुज्ञ माल गनकी । नन्दके कुमार बिनलागैउरआर ऊधो पपिहा पुकार झनकार झींगुर नकी २९ घेरि घटा उनई चहुंओर क्षणेकमें बिज्जु छटा लखि छायहैं । श्रीपतिराय कहा करबी अरबी करिकै पिक चातिकगा-यहैं । कारो पिछौराउतारि हहाअब चूनरीलाल अनूपसोहायहैं । हौंमैंसुनी घड़ी चारिकमें तिय आज तिहारे पियाघर आयहैं ३० आई ऋतुपावसकी आयेनहीं प्यारेमेरे मेघन बरजुआली गरज सुनावैंना । दादुरन रोंकु कान बकिर फोड़ैंनहीं पिक का हटकु शब्द पीरका सुनावैंना । मैंतोपरी बिरह बिथामें देव व्याकुलहौं जुगुन दमकि तन चिनगी लगावैंना । कोयलन गावैं मोरशोरन मचावैं घन घुमड़ि छावैं जौलौं लालघर आवैंना ३१ गँगन गरजिछायो मेघ जोर झरिलायो शीतल समीर बहै त्रिबिधि भयावनी । कोकिला कलोलैं करैं मोरबोलैं चहुं ओर कोयिकाम आयोजू अकेलीजानि कामिनी । ऊधोजी शरीरसुख सबकोऊ

चाहतहैकठिनकठोरहै पराईपीरपावनी। मारेडारैमदन मरोरेडारै दादुरवदाबेमारैबादर दबायेमारैदामिनी ३२ ॥

स० । उतकारीघटा इतमोंअलकें बकपांतिउतै इतमोंतिलरी। उत दामिनिदन्त चमक्कइतै सुरचापउतै इतभौंहतनी। उतचातकतो पिउपीउरटै बिसरै न इतै पिउएकघरी। उतवृन्दअगाध इतै अँशुवा बिरहीते मनों घन ह्वोड़परी ३३ ॥

क० । घूमिकै चहूं घाधाय आवै जलधरधार तड़ित पताकेबांके नभमें पसरिगे। द्विजदेव कलिन्दीके समीपन के नीपनके पात पातयोगिनी जमातनते भरिगे। चातक चकोर मोर दादुरसुभट जोर निज २ दांउठांउठवन सँभरिगे। बिनयदुराय अबकोजैकहा मायहाय पावसमहीपके चहूं घावेरे परिगे ३४ उमड़िघुमड़िघन छोड़त अखण्डधार अतिहीप्रचण्डपौन झूंकन बहतुहै। द्विजदेव सन्ध्याको कोलाहल चहूं घा नभ थैलते जलाहलको योग उमहतुहै। बुधिबल याकोसोई प्रबल निशाकोमेघ देखि ब्रजसूनोबैर आपनो गहतुहै। एहोगिरिधारी राखो शरण तिहारी अब फेरि यहिबारी ब्रजबूड़न चहतुहै ३५ लीनेलेत ज्ञान कोऊ छीने लेत आनिबानि लूटेलेतकोऊहठि लाजके समाजको। द्विजदेवकीसों याअँध्यारीकी अँधा धुन्धीमें कोऊलेत कान्हसुख सम्पतिके साजको। एरीमेरी तोहिजऊ मानिमान दोषतऊ समयबिचारि कीजे ऐसे २ काजको। तोहिंइत मानके अनादरन घेरोउत बादरनघेरो जाय२ ब्रजराजको ३६ आवत चलीहो यह बिषम बयारी देखु दबे२ पायनकी बारन लरजिदे। कैलिया कलङ्किनीको देरीसमुझाय मधुमाती मधुपालिन कुचालिन तरजिदे। आज ब्रजरानी के बियोगको दिवसताते हरेहरेकीर बक बादिन हरजिदे। पीपी कैपुकारिबेकी खोलैंज्योंन जीहनत्यों बावरी पपीहन के जूहन बरजिदे ३७ सावनकेमास मनभावनके संगप्यारी अटापरठाढ़ी भईघटा अँधियारीमैं। दामिनीकेधोखे चकचोंधेदृग कबिनाथ छबिनसों मुरिदुरै पियअङ्क वारीमें। कोटिरतिवारों ऐसीराधाजूके रूपपर रम्भारङ्क कहाशङ्कशचीके निहारीमैं। पागिरही रसजागि

रहीज्योति लाजनिमें नेहभीजो वेहमेहमीजोश्वेतसारीमें ३८ ॥

शरदऋतुवर्णन ॥

स० । शीतसमय परदेशकोपीय पयानसुन्यो वहरोवनलागी । याऋतुमें हर क्योंहूं रहैंघर देवतापूजि मनावनलागी । औरउपावत क्योंनकहू तब साजिकै बीन बजावनलागी । प्यारी पूबीरा भरेसुरमेघ मलारअलापिकै गावनलागी १ ॥

क० । फूले आसपासकाश बिमल अकाशभयो रहीन निशानी कहूं महिमें गरदकी । गुञ्जत कमलदल ऊपरमधुपमयन छापसी दिखाईआनि बिरहफरदकी । श्रीपति रसिकलाल आलीबनमाली बिन कछूनउपाय मेरे दिलके दरदकी । हरद समान तन जरद भयोहैअब गरद करतमोहिं चांदनी शरदकी २ ॥

हेमन्तऋतुवर्णन ॥

क० । अगरकी धूप मृगमदको सुगंधबर बसन विशाल जाल अंगढांकियुत हैं । कहै पदमाकर सुपवन कोन गौन जहां ऐसे भौन उमँगि उमँगि छाकियतुहैं । भोगऔ संयोगहितसुरत हिमन्तहीमें एतेसबसुखद सुहाये बाकियतुहैं । तानकी तरंग तरुणापन तरणि तेज तेल तल तरुण तमूल ताकियतुहैं १ छाईहै हिमन्त बात तन्तकी बताये देत अन्तको बराय जिय अन्तको न जाइये । द्विज बलदेव कहै कस कहि दूरि करि कामकी कलोल कान्ह कामद मचाइये । अतर तमोल तेल तूलनके तुंग साजि तातीसी सुहाती सेज तापै इतआइये । करतहैं आनतजि मान कोसमान नेक मानिये पमाण निशि भानउर लाइये २ ॥

शिशिरऋतुवर्णन ॥

क० । गुलगुली गिलमैं गलीचाहैं गुनी जनहैं चिकहैं चिराकैं हैं चिरागनकी मालाहैं । कहै पदमाकर हैं गजक गिजाहू सजी सज्याहैं सुराहैंहैं सुराहीहैं सुप्यालाहैं । शिशिरके पालाको न व्यापत कसाला तिन्हैं जिनके अधीन एते उदित मसालाहैं । तान तुकतालाहैं बिनोदके रसालाहैं सुबालाहैं दृगालाहैं बिशाला चि

त्रणालहैं १ माणिक महलमें प्रमाणिक बिछाये सेज हीरनके हार तेजसेजपैधरेभले। द्विजबलदेवत्योंहीं कञ्चन लतासीबाल पूर मनमोदके कपूर अंगमेंमले। अमित अरामैं भोगदेत बसु जामें अरु प्रीतके तमामैं ते समामैं जायके जले। गिरिधरको सोंकरन सोईहै वशीकरन हीकरन हेतुपिया तो करतहैंगले २॥

बिशेष रसकवित्त व सवैया॥

स०। पानदियो हँसि प्यारीको प्यारेसो प्यारो बहूलखि भौहैं मरोरी। बांह गही ललचाय ललामुरि नाहीं करी मुसक्याय किशोरी। तोरी न जात सखीनकी कान सो देबढिठाई करी नहिंथोरी। लाल ज्यों ज्यों चितवै त्यहिकोत्यहि त्यों त्यों चितौत सखिनकी ओरी १ कौनहै तू कितजातचली बलिबीती निशा अधरात बेहाने। मैं पदमाकर भावतिहौं निजभावतेपअबहीम्व हिंजाने। तूअलबेलीअकेलीडरैनहिं क्योंडरौं कौनसहायकलाने। हैंमेरेसंग मनोभव सूभट कानलौं बाण प्रासार ताने २ हमरो मन मोहनसों हितहै चुगुलीकरिकोइकहाकरि है। अबतोबदना मभई ब्रजमों गुरु लोगन जानि कहाडरहै। कहैं ठाकुरलालके देखिबे कोब्रजभूलो सबै बिसरो घरहै। तुमआपने कामतेकाम करो कोउ आपनो जानि कुआं गिरिहै ३ नैननको गति कोरन लौं अरु कोरनको गति कानलौं जानौं। काननको गति जीभ लौंहै गति जीभको कण्ठतरेलौं बखानौं। कण्ठ तरेते निरा गतिहै यशवन्त सदा रसना लौं मानौं। है रसना गति होंठन लौं गति होंठनको मुसुक्यान लौं मानौं ४॥

क०। नूपुर नबेली अलबेली हौं अकेली बांधिकेलीके भवन हेलीबेली मन अटका। घुंघुरू घनेसो कसि हँसि यशवन्त प्यारे गलीगहि चलीभली हरैमन नटका। चटपटलागी मग पगअटपटदेत झटपट सांकर निशाकरनिझटका। चारौं ओर पिञ्जर चिरीसीफिरै फरकत ननँद निगोड़ी मूंदिराखो द्वारफटका ५॥

स०। आजुहीते घरबाहरके मिलिके मतगौन कियो करिबेको।

चाउर चारुसधाई सों काढ़िधरे यशवन्त भिजै धरिबेको। साथ न कोईहमैं लैचलै यहदेहदई दुःखही भरिबेको। काल्हि सबेर-हिते सबजायगे चारिदिनालौं चरीचरिबेको ६ आजु तिहारे कहे सखि औरमैं सोवतिहौं यहिभवनकेअन्दर। भोरहि पैन कलङ्क लगाइयो लोचन लोल झुमाय कलन्दर। तोरिहै हार सँभारन अंगमें राखिहौं सौं हमैं देतपुरन्दर। काल्हि जो आयो हुतोवहि बेर सो आइ है फेरि अचानक बन्दर ७ गौनेकी रीति मिलाय दई सखियान अटापर रूपजवाहिर। सोयगयो पिछली रतियाँ भहराय भजे सुनि गज्जर गाहिर। पीतपटी चुनरी बदली त्यहि लाजसों लागत चारसों जाहिर। भौनके कोनेसे बैन कढ़े अरु बैन बरोठेसे आवत बाहिर ८ भीषमकर्ण कृपा अभिमन्यु द्रयो-धन सोमसों भूरिश्रवाके। अर्जुनभीम युधिष्टिर धृष्टबिराट बली सहदेव प्रभाके। सो शरव्यर्थ भये इनहू के कहाकहिये निरदीन दयाके। मेरेकटाक्ष बचैंन मुनीशकहैं कबि सोशरकी समताके ९ लिखिलालको पत्रधरो नवलापर लाजनसों नहिं जातपठायो। अलि आंखिनते उमड़े अँशुवा झमड़ैं बरुणी तरुणीन लखायो। अबचाहत लैकै पतोदिय पैकैदियो नहीं जातनयो दुख छायो। कहिबेको सँदेशभयो जियरा पैकह्योनगयो हियरा भरिआयो १० चन्दन खौरिपै खौर जरायके बेंदी चुनीनको भाल उज्यारी। चूनरी छोटी बुंदीन गुंधी सो गुही टिकरी कलधौति किनारी। पीतमपास लयावनको अँगुरीकोगहे सखियाँ हितकारी। चाबुकी आलिनकी बरजारसों आवत अश्व अड़ै लसि प्यारी ११ ॥

क०। चन्दन चपेटीजात सुखमा समेटीजात पीछे चली चेटी जात भेटी जात कानकी। चालअटपेटी जात सखि लेखि लेटी जात सकुचि सुझेटीजात छेटीजात सानकी। जाकेसुख फेटीजात चन्द्रछबि मेटीजात छबिहू धुरेटीजात टेटीजात भानकी। मदन दपेटी जात लाजन ससेटीजात अतर लपेटीजात बेटी वृषभान की १२ जरीदार कंचुकीके ऊपर झलकि आई लखित ललाई मानों चूनिन प्रभाकरी। अंगअनुकूले फूलेफूलसे बिलोकियत

लपटि दुकूल भुजमूलते सुभाकरी। ऊंचे २ निपट निवासचढ़ि चन्द्रमुखी झांकत झरोखे चोखे बदन सुधाकरी। अगम जिरह पैंधि गिरह उजेरोकर बिरहा नबेलीआज आपही बिदाकरी १३

स०। कानिकरैनहिं नन्दजेठानिकी घेरेरहै फटकानकोनाका। आलिनहीं मैं धकाधकिकैचले घालिब्रेको करकहै चलाका। आपनेरूप गिनेनहिं औरको लाइये पूरणजो शशिताका। ऐसेनिशंक निलज्जनसों करि प्रीतिको बांधिये कौनपताका १४ परसों वह गौनेजो आईथी ग्वालिन आलिन सायगई शरलोहै। तिरछे नँदलालकी ओर चितैसो चितैन रही ब्रज मोपरलोहै। उतते बन धेनु चरावत आवत गावत तानकको हरलोहै। छकिसी छबिदेखि रही जकिसी थकिसी थहरातगई घरलोहै १५॥

क०। भोरहै किसांझ अरु घरहै कि बन मांझ सालहै कि मास यहयामहै कि छिनहै। हिमहै कि ग्रीषम बसन्तहै किपावसअरु भूमिहै कि गगन सुमेरुहै कि तिनहै। आगिहै कि पानीयह नन्द हैकि देवरानी जलहै कि थल बिधि युगहै कि खिनहै। आनँदको कन्द नँदनन्दको बिलोकि मुख आनँद उमंगभूलो रातिहै कि दिनहै १६॥

स०। लाल किबो परदेशको गौनसो भावैन भौन सखीनसोहाई। भोरभये जललेनगई कविराजमनों भवताप सताई। कूप तड़ाग नदीज्यहि जायसो रीतीह्वै जायपरे परछाई। सांझसमय अगरी अतिरूपकी लैगगरी फिरि रोवति आई १७ हूजे न आतुर हूअबहीं वहजानैकहा रतिकी परिपाटी। खेलतसाथ सहेलिन के फिरै आंगन मोनहिं अवघट घाटी। बूझिपरै कबिराजअकूअब मैनमहीप कि लागीहै सांटी। योबन जामतयों उकसैं छतियां क्षितिज्योंगुण आंकुर माटी १८ लाजकरो सबकी चहिये सजना रहिये सब अङ्गछिपाये। शील सयान सिखोचहिये कबिराज न जाइये भौन पराये। औरकी ओर नहीं तकिये चलिये अबतौ निजमाथ नवाये। घेरुकरै घर हाय इतै पर पापलगै तरुणाईके आये १९ प्रीतम गौन सुनो गज गौनीसो भोजन भौनसबै बि-

सरोहै। अंगपरी तलबेलीमहा कबिराज तहांभरि आयोगरोहै। नैननते धरि धार धँस्यो जल अञ्जनते उर आनि परोहै। चोरिबे को त्यहिकोहियरा बिरहाबढ़ई मनों सूतधरोहै २० रावरे कौन कहावतहौ कहोक्यों परभौन मों जातहौधाये। जातियशोमति पासचली कहिहौंजू कछूबलिजू करिआये। सांसउसास भरैकबिराज सखीनिरखी निरखी नखवाये। कौनचला यहनन्दलला तुमछीनिछला छगुनीते होलाये २१ राधे सखीनसों खेलनको कबिराज कहैं अतरञ्जपसारी। जानेन आवत आयगये मिलि बैठिकै खेलन लागे बिहारी। काहूकहो अकिआई यशोमति आवतथी कोउ गोपकी नारी। श्याम चले दुरिबेको तहां मुख मोरि हँसी वृषभान दुलारी २२॥

क०। नवलनवेली कहाजानैं कामकेलीयह काल्हिलौंतौखेल साथ सखिन सुहाईजू। रावरे रसिक रस रासही सों कीजै बश बिवश बिहाररस कौन रसकाईजू। कीन्हीचैनबरखाई तबकेहूं बीरीखाई सुखदैसिखाई कबिराजआजआईजू। मतिफूलकीसी माल कुम्हिलाय जायबालआतुरनहूजेलालचातर कन्हाईजू२३॥

स०। देखे बिना वृषभान दुलारीके भावैहरीको घरीकोघरौ ना। कामचढ़े कबिराज कछू ब्रजराज समाजमें आय इरौना। राधे बिलोकि सखीनमों श्यामसों भौंहनमें कहो ऐसीकरोना। प्यारेगह्यो बनमाल गरेतर प्यारीगह्यो कर कानतरौना २४ हाथ हियेन लगाओलला हठिकै हरिजू अँगियान उतारो। ताकत हौ फुंफुदीकि फुंदीतन ताकतबासु कुबासु न्यवारो। अंगभरो अधरा रसकोपिय क्यों बनिहै कबिराज बिचारो। सासुलखै करिहैबिन प्राण हहातुमकान्ह इहांते सिधारो २५॥

क०। हँसत खेलत मन्दभई चन्दद्युति कहतकहानी अरुबूझ न पहेलीजाल। केशवदास अपने २ ठौर नीं दबश ह्वैके हरेहरे उठिगये बालिका सकलबाल। घेरिउठेगगन सघनघनचहूं दिशि उठिचलेकान्ह धायबोलि उठी त्यहि काल। आधी रात अधिक अँध्यारीमांझकैसेजैहौराधिकाकीआधीसेजसोयरहौप्यारेलाल२६॥

स० । पायनको परिबो अपमान अनेकसों केशव माननैबो । सीठीतमूर खवायबोखैबो बिशेषिचहू दिशिचोंकि चितैबो । चीर कुचीलन ऊपर पौढ़िबो पातहुके खरके भगिएबो । आंखिनमूंदि केसोखत राधिका कुञ्जनते प्रतिकुञ्जन जैबो २७ आवतजानिके सोयरही हरिये हरिपायन जातजगाई । साहसकैउरमध्यधरोकर जागतरोमकी शोच जनाई । नीर बिमोचत चौंकिउठी पहिचान झुकी बतियां कहवाई । दिनका गायें गँवार चरावत आवत है निशिसेजपराई२८मोहनसाथ कहां निशिद्योस रहोसतरज्ञहिकी मिसबैठी । केशवकाहूसुने महतारी तो सखिहैंरी घरहीमहँपैठी। हौंशिष औ सुखदेशिपत हितमोह चढ़ायके दीठ अमैठी । कौन लड़ैतो स्वरूपन कापै तुही कछुजात अकाशहि ऐंठी २६ सांची कहोहमसे मनमोहन काकेकहे तुमप्रीति तजीहै । आंखिनदेखे बिना नहिचैनसो प्रीतिकोरीति कहां बिसरीहै । कहाकछु मोहू से चूकपरी तुम्हरेचितकी जोचाह घटीहै । मेंकपटी किधौं तू कपटी कितो वह कपटी ज्यहिंऐसी ठटीहै ३० चूनरी शाल बिशाल बनी अरु घांघरेकी छबिहै अतिन्यारी । मांगगुही गजमोतिन सों कहिजायनहीं तिनकी उपमारी । देकर अंजनखंजनसे दृगदृष्टि मिलायदियो सुखभारी । उतरदैत्रियमांगतहौं तुक चारहू आदिके अक्षरप्यारी ३१ बालकही मुसक्याय तबैपिय चातुरता हमसों नहिंकीजै । गैलमें दैन बनैनहमें पिय आतुरताको बिदा करि दीजै । आधीरात घरीकके भीतर प्रेमसहित बिधिसों रसलीजै। कामरी ओढ़के साँवरेजी तुम चारहू आदिके अक्षर लीजै ३२ माईके नीको उछाहलगे कहु सासुके पाइँ कबै परिहौं । तजिहौं गुड़ियानकोखेल कबैपटघूंघुटओट कबैचलिहौं । पदमाकर ऐस्यहु छोहनसों पर्य्यंकपै जोर कबै धरिहौं । अबऔर कछु न सोहाय सखी कहु कन्तके कण्ठ कबै लगिहौं ३३ यह भोगिगई धौं कितै अँगिया छतियाधौं कितै यह रंगरँगी । उबटेहून छूटत दाग हहा कबकीहौं छोड़ावत ठाढ़ीठगी । सुनिबात इतै मुखनाइनके उत सूधीसयान पगी सो पगी । मुखमोरिइतै मुसक्यानि तिया उत

नाइनहूं मुसक्यान लगी ३४ ऐसीहीचाहि चवायचहूं कहैंएककी बातहजार बखानी। द्योसछसातक सांचरचा ब्रजमण्डलमें अति ही अधिकानी। सोनकछू समुझै द्विजदेव रहीधौंकहां हियमेंअब ठानी। बादिहीमोहिं दहैदिनरातसखीयहजारिबे योगजवानी ३५ पति प्रीतिके भारन जातैउनैमतिसे दुखभार न सालेपरी। मुख बाततेहोती मलीनसदा सोइ मूरति पौनके पालेपरी। द्विजदेव अहो करतारकछू करतूतिन राचरी आलेपरी। यह नाहकगोरी गुलाबकलीसी मनोज के हाथ हवाले परी ३६ करिबेई तुम्हैंवह बीसबिस्वे हितजैसेकछू अक्रूरकरो। द्विजदेवजूतातें बिचारिहिये मनकेभ्रम भायन दूरकरो। कहतेसुनतेजो भयोहमसों वहमाफ हमारो कुसूरकरो। इत प्राणपयान करैं न करैं तुम कान्ह पयान जरूरकरो ३७ आईबिलोकन कुञ्जइतैहुतेलाल उछालतेकन्दुक जामहिं। ताहिलै ऊपरही द्विजदेव बरायचलीहूं निकुञ्जके धाम हिं। ज्योंइनआइ गह्योकरिहां तिमि होठहूं दाबिझुकी गहि दामहिं। गेंदचुरायतनीकेतलेपै भलेईभले सिखयेगुणश्यामहिं ३८ आननश्वेत हरोपियरो रँगनैन तरूपरहे बिलखानी। अंगनितोरि मरोरि मुरी अलकैं खुलिफैलि रहीं सरसानी। ज्योंतकियातझुकी उतको इत हाथही हाथ लिये ठकुरानी। सेज पै बारि कुमारि सबै तबटेरि उठी अति आरत बानी ३९ सुंदर गोल कपोलनपै अनमोल सुकुण्डल डोलनि प्यारी। होहलकैं द्युति मोहन की झलकैं सुथरी अलकैं घुंघुवारी। वा मुसक्यानि बिलोकतही कुलकानि सबै तजि होत बिदारी। लागिजोजाय तो कीजैकहा सखिये अँखियाँ रिझवार हमारी ४० है अतिभीत चवायन की हँसिहैं अरि पापिन दैकरतारी।। लाज गई ब्रजराज बिलोकत आजुलौं मैं कुलकानि सँभारी। आवत जातसदायहिगैलसोछैल छबीलन कुंजबिहारी। लागिजो जायतो कीजैकहा सखि ये अँखियांरिझवार हमारी ४१ देतसदाशिष तूसजनी अरुमैंहूबिचारतहूं हितकारी। मानकिये गुणमान कहैं सनमान बड़े फिरहै हित भारी। मोहनी मूरति मोहनकी अवलोकत लोक रिझावन

हारी। लागिजो जाहि तो कीजै कहा सखिये अँखिया रिझवार हमारी ४२॥

क०। नन्दके कुमार को सबेरही मिलाऊं तौन बार बार सौ प्रकार सों बुझाय हारीमैं। कहा उपचार करूं कछु न बिचार चलै चारोओर ढूंढत दयाल गिरिधारी मैं। सूखिगयो है शरीर चीरको न सुधिबीर पीवैनहीं नीर धरोरहै तीर झारी मैं। मित्र श्यामके बिचित्र चित्रको बिलोकि बाल बैठि रहैचित्रसी बिचित्र चित्रसारी मैं ४३॥

स०। छोटीसि नारिचितैचली मोहनरूपकीआगरि यौवनबौरी। थोरेसे केश धरे छतियांपर झांकन जात झरोखन दौरी। गोरीसि बालबनीमुखचन्द्र मनोबक पांति घटायनघौरी। कहैं कबिगंग उठो नंदनन्द इतैलैजावउतैभरिकौरी ४४ तूहीको चाहतबैचितमों अरु तूही हियो उनपै ललचावत। मैंही अकेली न जानति हूं यहभेद सबै ब्रजमण्डली गावत। कौनसँकोच रहोरी नेवाज जोत तरसै औ उन्हैं तरसावत। बावरीजो पै कलङ्कलग्यो तौ निशङ्क ह्वैकाहे न अङ्क लगावत ४५ चैननहीं दिनरैन पड़ै जबते तुम्हैं नयनन नेक निहारे। काज बिसारि दये घरके ब्रजराजमें लाज समाज बिसारे। मो बिनती मनमोहनमानिये मोसों कहू मति हूजिये न्यारे। मोहिं सदाचितसे अति चाहियो नीकेकै नेह निबाहियो प्यारे ४६ गतिमेरी यहीनिशि बासरहै नितते री गलीनको गाहि बोहै। चितकीन्हों कठोर कहा इतनो अबतोहिं नहीं यह चाहि बोहै। कबिठाकुर नेकनहीं दरशै कपटीनको काह सराहिबोहै। मनभावे तिहारे सोईकरिये हमैं नेहको नातो निबाहिबोहै ४७ यहप्रेम कथा कहिबे कि नहीं कहिबेहि करौकोउ मानतिहैं। पुनिऊपर धीरधरायो चहौ तनरोग नहीं पहिचानतिहैं। कबि ठाकुर जाहिलगी कसकैं नहिंसों कसकैं उरआनतिहैं। बिनआपने पांय बेंवाईगये कोउपीर पराईको जानतिहैं ४८ गोकुलको बसिबो न भलो अनदेखेही लोग कलङ्क लगावत। मैंन सुनी हरि कौनस्वरूप कहैं सब तेरेलिये इतआवत। जोयहसांची करी

सबहूमिलि तौ शिवनाथ सबै बनि आवत। रीवह अम्बुजसे मधुरी मुसक्यानिसोमूरत काहेनभावत ४६ किङ्किणी छोरिछिपाय कहूं अरु बैजनी पायल पायंते नाई। त्यों पदमाकर पातहु के खरके कहुं कांपि उठैछबि छाई। लाजहिते गड़िजातकहूं अड़िजातकहूं गजकी गतिभाई। बैसकी थोरी किशोरीहरे २ याबिधि नन्दकिशोर पैआई ५० जायकहो यदुनन्दनसे जिनदासीके सङ्ग सनेह बढ़ायो। ग्रीषम बीतगई सिगरी बरषै अतिबुन्द महाडरपायो। शर्दमोंचन्द्र प्रकाशकियो बिरहातनजारि हेमन्तजरायो। शिशिरहू जातरही नँदलाल सो बीतो बसन्त पैकन्त न आयो ५१ ज्यों २ चवाउ चलै चहुं ओर धरैचितचाहये त्योंही त्यों चोखोकोई सिखावनहार नहीं बिनलाजभये बिगरैल अनोखे। गोकुलगांव को येती अनीति कहांते दई धौं दई अनजोखे। देखतिहै मोहिं मांझगली मैंगही इनआनधौं कौनकेधोखे ५२ अबका समुझावत को समुझे बदनामी को बीजतो बोचुकीरी। तबतो इतनो न बिचारकियो यहिजालपरे कहोकै चुकारी। कबिठाकुर योंरसरीति रँगी सबभांति पतीब्रत खोचुकीरी। अरीनेकी बदी जोबदीहुती भालमें होनी हुती सोतो ह्वैचुकीरी ५३ रूप अनूपदईदियो तोहिं तु मानकिये न सयान कहावै। और सुनो यहरूप जवाहिर भाग्य बड़े बिरले कोउ पावै। होतनसूमकी जाति कोऊ जोउदार सुनै सबही उठिधावै। दीजिये ताहि देखाय कृपाकरि जोचलि दूरते देखनआवे ५४ नाइनि राधेगई अन्हवावन कंचुकी खोलि धरी सुथरेकी। भावै अनन्द दोऊकुच ऊपर शोभा बिलोकत रूपखरेकी। दागलखो हिय पूछलगी तहँ बोली सखी वहहास परेकी। भेंटतहीमें गड़ी यहिके मुकताहल माल गोपाल गरेकी ५५ ॥

क०। कसिकुच कंचुकीमें बिमल बिरचिहार मालतीके सुमन धरेई कुंभिलाइगे। गौरीगारु चन्दन बगारु घनसार अब दीपक उज्यारतम छितिपर छाइगे। बारधूप अगर अगारु धूप बैठीकहा अमरेश तेरेअग्र भूलिसे सुभाइगे। शरद सुहाई सांझ आईसेज साजु अस कहतसुवाके आंशुवाके नयनआइगे ५६ ॥

स०। औधिबदीहरि आवनकी मनभावनकी उपजो मनचाकै। कामकीपीर बढ़ी अभिमन्यु धरैंनहिं धीरयहै बकबाकै। दै बिधि पांखमिलौं उड़िजाय अधायबुझाय हियेलगि बांकै। जोपरि मा-खनयोऊ मिलै सखीपांख जोहै चकई चकवाकै ५७ कहौंयक बात बुरीजनि मानहु कान्हहिंदेखि कहामुसक्यानी। मैंधोकबै चितयो यहिओर पै दाऊंकी सों तुमऔर गुमानी। आपनों सो जियजानति औरको ताते अनन्त यहै जियजानी। कहौ जू कहौ अलिजोकह्यो चाहती दूधको दूधसो पानीको पानी ५८॥

क०। सुन्दर सजोले परलम्ब सहजोले राधे परम लजीले शुभ काजन कंजीलेहैं। बीलिन बसीले अलि बीलिन हसीले आदिरसमें रसीलेरूप यशमें यशीलेहैं। नेहरस सीले पर नेह परसीले अनुनैन बहँकीले चटकीले मटकीलेहैं। तेरेकुचनीले कूटि छबिसेछबीले मानोंपन्नग रँगीलेमैनमंजबतकीलेहैं ५९॥

स०।कंचुकीकौचसीं कैसीकसीलसी सीपरसेलसेगुच्छ बिछा लहैं। मीती लरैं विहरैं खँजरैं खगरैंसी जरीजरी जालरसालहैं। येती लहे छबि चेतीकहा कुचकेती कहै सुखराम सुमाल हैं। आइयेलीजिये दीजियेजूकछुबीचकिनारेलगे लाखोलालहैं ६०॥

क०। छातीलागी उचन सकोचनि सकानलागी खानलागी पानकी उनान रसबतियां। कटिलागी घटनि गँटनिचढ़ि जान लागी बैनलागी रटनि जगनलागीं रतियां। चालुलागी चलन सुधारन अलकलागी जेवलागी जगन पगनलागी गतियां। नैन लागीफेरनि निहोरनि सखिन लागी मनलागी चोरनि पढ़न लागी पतियां ६१॥

स०। बाहैंधरैं मुखनाही करैं उठिआंगुढ़रैं अंगमें अंगचोरैं। हाहाकरैं उठिभागधरैं तुतुरातिलरैं तकिभौंह मरोरैं। लालकरैं हितबालअरैं हठिभाललरैंगहिदांतसोतोरैं। सांसैभरैंअतिरोसैं करैंपरिपाटीधरैं फुफदी जबछोरैं ६२ आधकयाम करौबिसराम कुमारअरामकी कुंजइतैहै। अन्त बसन्तके ग्रीषमकी लपटैं न घटैं दिनसांझ समैहै। छांहघनी पियनीरजनी सुशीत समीर

लगे सुखदेहै । हाललखौ फललाल रसीली रसा ललता मैंकहू मिलिजैहै ६३ ॥

क० । चूमौ करकञ्ज मंजु अमल अनूप तेरो रूपके निधान कान्ह मोतन निहारदे । कालिदास कहैमेरे ओर हँसिहेरि हरि माथेधरि मुकुट लकुटकरि डारिदे । कुंवर कन्हैयामुख चन्द्रकी जुन्हैया चारु लोचन चकोरनकी प्यासननिवारिदे । मेरेकर मैं-हदीलगीहै नँदलाल प्यारे लटउरझीहै नेकबेसरिसम्हारिदे ६४ न्यारीहोहु नीरते तोदेहिंचीर ऐसीसुनी न्यारीभई नीरहूते तीर में कढ़ेकढ़े । कहैंगिरिधारीदेत कसन बसनश्याम रसनापिरानी हाहा बिनती पढ़े पढ़े । मीतजो महीकी बीच नीचकरि पावती तौ कौतुक दिखावती बिनोद बढ़े बढ़े । छीनिलेती अम्बर पि-तम्बर समेतअब कहौकान्ह बातैं जू कदम्बमें चढ़े चढ़े ६५ ॥

स० । बारिजसोमुखमीनसेनयनसेवारसेबारनकोसुखदासी । कम्बुसों कण्ठलसैं कुचकोकसों भौंरसोंनाभि भंवी भ्रमभासी । गोकुल धारसी रोमावली लहरीसी लसै त्रिबली छबिरासी । लाल विहार करौ रसमें वहबालबनी सुखकी सरितासी ६६ ॥

क० । कहालिखि पठवों संदेशो आली ऊधोहाथ उनके तो मन मांझ वहै बसी खबरी । बारेके बहेवा कान्हकारे अति अंग हीके कारी २ बातैं सुनिहोतहै अजबरी । कहैंगोपीनाथप्राणनाथ जियऐसी ठानी जोपै जिय आनी ऐसी गहीदांत दूबरी । कहिबे कोघरमीहैं देखिबेको नरमीहैं बड़ेईसुकरमीहैं कूबरीनऊबरी ६७ शशि उरबासी सीगरे पहिरे उरबासीसी पियाउरबशीसी छबि देखे दुख सरकिजात । कञ्च की कसीसी बहुउपमा लसीसीरूप सुन्दर धसीसी पर्यङ्क परथिरकिजात । कहैं हरचरण रही चमक बतीसी प्यारीजामें लागी मीसी हियसौतिन दरकिजात । भुजमें कसीसी सिन्धु गंगज्यों धसीसी जाकेसीसी करिबेमें सुधासीसी-सी ढरकि जात ६८ ॥

स० । आजुगईहुतीहौं यमुना जललेन धरेशिर गागरिवाली । देखो जो कौतुक मैं तटजाइकै सो अबतोसों कहौं सुन आली ।

गुंफित पल्लव फूलनकी बनमाल हियेयों लसै बनमाली । नील पहारके मध्य बिहारकरैं मिलिकै मनो हंस सुव्याली ६६ गोपी नहाय चली गृह कोरहे गोपसबै तकिसी नँदनन्दहि । मारगमें चलिराधे कह्यो गिरि बेसरि मेरी कियो छलछन्दहि । ढूढ़नको गइ लौटि जवाहिर जानैं नहीं कछु या फर फन्दहि । शीशनवाय कै ह्वैरैं जलेतले हेरैं लगी हँसि श्रीब्रजचन्दहि ७० ॥

क० । जेतेछन्द जानतिहौं तेते सब जानतिहौं नयेनये छन्द बन्दकहांलो बनाइहौ । सो कबि जनारदनबहिरन काढ़ोगी तौ जो रावरि दौरि कहा घरहीमें आइहौ । हारि मानिलेहौ तौ बनैगी बात मोहनजू चतुरिनके आगे चतुराईका चलाइहौ । छलसों छलीहै तैसे मोहू को छलनचाहै छालनि छबीले छाह छुवनि न पाइहौ ७१ ॥

स० । मेरि पीछे ते बेनी मरोरिलई उरहार खसोटि लियो गरिका । पुनिहौ हँसिकै मुख चाहिरही मुंदरी मनतोरि तनी तरिका । भनि तेगपानि मटुकी दर डारिलई भरिअङ्कअली दरिका । सुउराहनो देति यशोमति पास लड़ाइते लोगनके लरिका ७२ राधेकी ठोढ़ीको बिन्दु दिनेश किधौं बिश्राम गोबिन्दके जीको । चारु चुम्यो कनको मणिनीलको कैधौं जमाव जम्यो रजनीको । कैधौं अनङ्ग खड्गारके रंग लख्यो बरबीच बस्योकर पीको । फूलेसरोजमें भौंरी बसी किधौं फूलसमीमें लग्यो अरसीको ७३ ॥

क० । गौनको नवेली तू भवनते न बाहरहो कुचतेरो कञ्चन मनोज द्युति हरिहैं । फूल ऐसीमाल औ दूकूल ऐसी चपलासी ललितन देखे चिलकनसी न जरिहैं । कहै द्विजनन्द प्यारी पतरी छपाये चलोअवतोयेनैन तेरेरीपषान फरिहैं । ऐसी कसबाती तूतौ नेकना डराती काहूछाती ना देखाउ कोऊ छातीफारिमरिहैं ७४ ॥

स० । चोट लगी इन नैननकी दिनहू इन खोरिन सो कढ़ती हौ । देखतमें मनमोहि लियो छिपि ओट झरोखनके झकतीहौ । देवकहै तुमहौ कपटी तिरछी अँखियांकरिकै तकतीहौ । जानिपरै न कछूमनकी मिलिहौ कबहूं कि हमैंठगतीहौ ७५ भोरहिते वह

कौनसी पाहुनि आई तिहारेही न्योति बुलाये। छोटीसी छाती छबीलौ बेनी नरोत्तम रूपकी लूटिसी पाये। सारी हरी अंगिया घनबेलिकी घूमतसो लहंगा थिरकाये। कञ्जसो आनन खञ्जसो नैननि एड़िन इंगुरसों लपिटाये ७६ ॥

क० । प्यारीको बुलाय चित्रसारी देखिबेके मिसल्याई वह सखीजहां सोइबेको धामहै । प्यारेको निहारि परयङ्कमें मयङ्कमुखी शङ्कमानि भाजी राजी लङ्क अति छामहै । बेनी मृगनैनी को कुंवर कान्ह गहिलई ऐसीभांति भई न बखान अभिरामहै । भौंरनकी चारु चरकीलीकी परतचाहै तमक्यों चढ़ावत कमान मानो कामहै ७७ ॥

स० । चन्दनछूटिगयो कुचकुम्भनि जातरही अधरानकी लाली । अञ्जन धोइगयो दृगखञ्जनि देखिपरै मुखकी न बहाली । कम्पितगात सशङ्कित अङ्कित स्वेदकेबन्द लसैं छबिशाली । कौनोअरी मनमेरो निराशपी पापीकेपासगई किनआली ७८ फैलि रहो बिरहा चहुंओरते भागिबेको कोउ पार न पावै । जानतहौं परबंतसबै तुमजालको मीन कहांलगिधावै। चाहौंकछूक संदेशो कहौसोतो जीमहँ आवतजीभ न आवै । ऊधोजू वा मधुसूदनसों कहियो जो कछू तुम्हैं रामकहावै ७९ ॥

क० । आज आली माथेते सुबेंदी गिरै बार बार मुखपर मोतिनकी लरी लरकतिहैं । धरतहों पगकील चूरेकी निकरि जाति जबतक गांठिजूरेहूकी भरकतिहै । जानिना परत प्रहलाद परदेशपिउशशिउउरोजनसों आंगी दरकतिहै । तनी तरकति कर चूरी चरकति अंगसारी सरकति आंखिबांइँ फरकतिहै ८० आई एकप्यारी गौन सोनेसे शरीरनोने रूपरसरतिके प्रकाश दरसातहैं । अतर सुगंध रंग भूषण बसनबोरे लाल दृगडोरे मनों फूले जलजातहैं । कबिर घुलाल सेजआये सुख दान जाके नखशिख छबिके छरासे छहरातहैं । अङ्कुरित योबन कुचेतेलङ्क संकुरत इंकुरत जंघ अंग कुंकरत जातहैं ८१ ॥

स० । गोकुल गैलमें छैलफिरैं अतिफैल करैं मनमैन जगावै ।

नक बिलोकत मोहत मोहन मानिन मानके दूरिभगावै । बिष्णु बिरञ्चि बिचार मनावत गावत कीरति मोद पगावै । बावरी जो पै कलङ्क लग्योतो निशङ्क ह्वै काहे न अङ्कलगावै ८२ ॥

क० । श्याम द्रुम श्यामतन श्यामनिशि श्यामबन श्यामनभ श्याम श्याम श्याम घनश्यामहै । श्यामनैनी श्यामबेनी मूंदी श्याम माणिकसों दीन्होंश्याम खौरिकरै चली श्यामकामहै । मंसाराम श्यामचलो भुजनिकसीहै बाम धरे श्यामचीरधाईभौंर भीर श्यामहै । श्याम कुंजधाम सराजाम श्यामकै कैगई श्यामा श्यामजहांश्याम जहां श्यामश्यामहै ८३ ॥

स० । हौंमनमोहन सों मिलिकै करती उहांकेलि घनी तरु छाहीं । सोसुख बीग्न कासों कहौं मनुमारि बिसूसनि हीं मुरझाहीं । पातगये झरिधूमके पुंजन कूहपरी सिगरे बनमाहीं । गांउको लोग महानिर्दय जो पलाश्न कोउ बुझावत नाहीं ८४ मानिसबै मनुहारि बहू मुसुक्याइ उठै अँगियानउतारै । मण्डन डोरीके छोरतही रिसिकै मिसकैअँगुरी गहिमारै । ललाअपनो मन भायो करै सुचुरीखनके जब हाथनिझारै । कोयलसी कुह कै पिहकै सिसकै सतराइ झुकै झझकारे ८५ घांघरा घूमघमेरो लसै तनचूनरी रंग कुशुम्भके गाढ़े । दूलरी तीलरी चौलरी कंठ उरोजनकचुकी मोलसेबाढ़े । रामसहाय बिलोकतहीं घनश्याम निकुंजके बीचमें ठाढ़े । लाजभरी अँखियांबिहसीं मिलिचौबिस मासको घूंघुट काढ़े ८६ जाकेलगे सोइजाने व्यथा परपीर में कोउ उपहास करैना । सागरजोचुभिजातहै चित्त तोकौटिउपाय करै पै टरैना । नेकसी कंकरीजाकेपरैसोइपीरकेमारेपैधीरधरैना । कैसे परै कलयेरीभट्ट जब अँखिमें आंखपरै निकरै ना ८७ ॥ जाकेलगे गृहकाज तजै अरु मातुपिता हितसाथ न राखैं । संग मैलीन ह्वै चाकर चाहकै धीरज हीनअधीनह्वै भाखैं । तल्फतमीन ज्योंनेह नवीनमें मानोदई बरछीनकी साखैं । तीरलगै तरवारि लगै पै लगैजनि काहूसे काहूकिआंखैं ८८ ॥

क० । सूझत नवारपार लिख्यो पूरे महै अपार मिलन अथाह

देखि धीरज उड़ातिहै । पातीको अधार पाय परत सनेह सिन्धु बिरहा लहरि मांझ हियरा हेरातिहै । तौलगुणी बन्दी ढूढ़तरतन औधि मूरति मरजवाकी नेकना थिरातिहै । एक बेरबांचि पुनि फेरिखोलि फेरिबांचिबांचिबांचि प्राणप्यारी बूड़ि बूड़िजातिहै८६॥

स० । नैननको तरसैये कहांलौ कहांलौ हियोवह आगि में तैये । एकघड़ीनकहूं कलपैयेकहांलौतौ प्राणनको बेलमैये । अबै यही अबजीमें बिचार सखी चलिसौतिहूके गृह जैये । मानघटे ते कहाघटिहै यदि प्राण प्रियाकहँ देखन पैये ६० अपबादकोऊ किनकीबो करो हमनेक नहीं सक मानतीहैं । वहिछैल छबीले कि चाहनते द्विजपूमकी बारुणी छानतीहैं । वहिफूंकके पांवधरे सिगरो अपनेको सदाजो बखानतीहैं । नहिंकाज भले औबुरे ते कछू हमजानतिहैं किअजानतीहैं ६१ भूत परेतको फेरोबचै यहि नैनको फेरो हियोतोड़िडारे । तीरचलैं तरवारिचलैं अरुशम्भुको बाण छुटैं अतिन्यारे । बज्रको फेरोबचैतो बचै अरुप्राणबचै नरसिंह हुकारे । कालको फेरोबचैघड़ि द्वैक बचैनहिं नयन चपेट के मारे ६२ ॥

क० । कारीअँधियारी रैन बिजली चमकैऐन दादुरके बैनमेघ बरसत फुहूं फुहूं । पौनकोर झोरकरै झिल्लिन केशोरघोर चात्रिक चकोरमोर कुहकत कुहूं कुहूं । ताहि समैसुधि करिछातीसे लगायो प्यारे आंग चलैलागे प्यारे नयननसे लुहूं लुहूं । मसकि मसकि प्यारे ज्योंज्यों लपिटात जात त्योंत्योंमुख मोरिमोरि करत उहूं उहूं ६३ लिपिटि लतासिपरयंक पटियामोरही डोलैना डोलाय कर पायन दूहूं दुहूं । केतीकेती बातनसों हरिजूबुझाय हारेको-किला किनाई प्यारी कुहकै कुहूं कुहूं । मेरीओर फेरमुख बीराहू न खातकाहे उरसे लगायकर बोलत मुहूं मुहूं । मसकि मसकि प्यारो ज्यों ज्यों लपिटातजात त्योंत्यों मुख मोरि मोरि करत उहूं उहूं ६४ ॥

स० । ऐसीन देखीसुनी सजनी धनि बाढ़तहै जोबियोग की बाधा । त्योंपदमाकर मोहनको तबतेकलहैनकहूं पलआधा। लाल

गुलाल थलाथलमें दृगठोकर दैगइ रूपअगाधा। कैगई कैगईचेट-कसी मनलैगई लैगई लैगईराधा ९५ धीरसमीरसो तीरतैंतीक्षण ईछन कैसहुना सहतीमैं। त्योंपदमाकर चांदनीचन्द चितै चहुं ओर न चौं कतजीमैं। छापबिछाय परैनकेपातन लेटतीचन्दनकी चौकीमैं। नीचकहा बिरहाकरतोसखि होतीकहूं जोपैमीचु मुठी मैं ९६ देकहि मीर शिकारनिते यहिबाग न कोयल आवनपावै। मूंद अरोखन मन्दिरके मलयानिल आयन छावन पावै। आयो बिनारघुनाथ बसन्तको ऐबोन कोऊ सुनावनपावै। प्यारीकोचाहो जियैको धमारितो गांवमेंकोऊन गावनपावै९७ बालम लालबिदेश गये दुखऐसोजरी हमकामकराकैं। जे चुरियाकरआवत नाहिंरीते चुरियां भइठौरफराकैं। आलमलाल बिसूरतिबालमबोलतहीपि-यधारधराकैं। कंचुकोमेंकुचयोंहुलसेकिगयेबंदटूटितराकतराकैं९८॥

क०। शोचन हमारेकछु त्यागेमन मोहनके तनको नशोचजो पै योंही जरेजायहैं। कहैं पदमाकर न शोचअबयेहू यहां आये हैं तौआयहैं न आयेहैं नआयहैं। योगको नशोच अरुभोगको न शोच कछू याही बड़ोशोच सोतो सबनिसोहाय हैं। कूबरीके कूबरमें बेध्योहै त्रिभंगता त्रिभंगको त्रिभंगीलाल कैसे सुरझायहैं ९९॥

स०। जाकेलगे घरबारकुटै अरुमातुपिता सुनिके मनमारवैं। जाकेलगे दुखहोतहै सोसब ताकेलिये मनलेतहै सांसैं। कबिराज कहै परगोली लगी अरछी बरछी तिरछी ह्वैखापैं। तीरलगैं तर वारलगैं जनिलागैं केहू कि कहूसन आंखैं १०० घूंघटके पटढाल बने बरछी कित्रनोझुलनी झलकावै। नागगती दोउ यौबनजोर सो नयन महावत हूलतआवै। ध्यानडिगैं मुनि ज्ञानिनके जब कामिनि नयन के बान चलावै। घायलसे घुमरैं कितरे बिधना यहि नयनके बान बचावै १०१ खेलनको बनकुंजनमें सुनि पुंज सखीनके संगगईरी। सामुहेंभेंट भईब्रजराज लख्यो मनमोहन मयन मईरी। छांड़ीनलाज छिपायके अंचल घूंघुटओट पिछौंड़ी भईरी। मोंजत हाथहिये पछितात सोपीठमें दीठ दई न दई री १०२ गुणअौगुण का कहिये क्यहिते अपनोतन आप जराने

परयो। सबगांवमें नेलमें गोकुलमें गुरुलोगनदेखि लजानेपरयो। सरदार बिचार बिनाबनके बनके बिन काज बिकाने परयो। बिनजाने अजाने सुजानेहमैं करिप्रीति महापछिताने परयो १०३॥

क०। कमलउछाह जैसे सूरजप्रकाश होत कुमुदउछाह जैसे चन्द्रमा परसतें। भौंरन उछाह जैसे आगमबसन्त जानि मोरन उछाह जैसे बरषा सरसतें। हंसन उछाह जैसे मानसर बीच होत साधन उछाह इच्छा आवत अरसतें। सबको उछाह यहि भांतिकरि होतहै हमरोउछाह प्यारी आपके दरशतें १०४॥

स०। कोऊकहै कुलकी तजिकान अरुकोऊ कहै मैं बाज न ऐहौं। कोऊ हँसै करतारी बजाय तो काहू कि सीखते सीख न जैहौं। सांवरोरूप बसौ उरमांझ सोदेखेबिना अँसुवा बरसैहौं। लाग्यो तोलाग्यो कलङ्कसखी अबतो मैंनिशङ्कह्वै अगलगैहौं १०५ लेनगई हुतिबागहि फूल अँध्यारीलखे डर लाग्यो महाई। रोम उठे तनकम्प छुट्यो मतिराम भई श्रमकी सरसाई। बेलिन सोंउरझी अँगिया छतियां अति कण्टकके छतछाई। देहमें नेक सँभाररह्यो न यहांलगुभागि मरूकरआई १०६ न भयोकछु रोगको योग दिखात न भूतलगो न बलायलगी। नाकोउ टोनो डिठोनो कियो नहिंकाहूको कीन्ही उपायलगी। द्विजदेवजू नाहकहीसब के हियऔषधि मूलको चायलगी। सखीबीस बिसे निशिआहि कहूं बन बौरेबसन्तकी बायुलगी १०७ बैनसुधाकी सुधासीहँसी बसुधामें सुधाकी सटाकरतीहैं। त्योंपदमाकर बारहिबार सोबार बगारि घटाकरतीहैं। बीर बिचारे बटोहिनपै यक काजही तौ बलटा करती हैं। बिज्जु छटासी अटापै चढ़ी सुकटाक्षन घालि कटा करतीहैं १०८ यों अलबेली अकेली कहूं सुकुमार सिंगारन कैचलैं कैचलैं। त्यों पदमाकर एकनके उरमें रस बीजनि बैचलैं बैचलैं। एकनसों बतरायकछू छिनएकनको मनलैचलैं लैचलैं। एकनको तकियूंघटमें मुखमोरिकनैविन दैचलैं दैचलैं १०९ यह प्रीतिकीबेलि लगाई जोहै त्यहि सों चिभले सरसाइयेजू। नित सांझसकारे कृपाकरिके पगधारिसुधारस प्याइयेजू। कबिकालिका

यों करजोरि कहैमति देखिबेको तरसाइयेजू। इनआंखैं हमारी-कुमोदिनिको मुखइन्दु ललादरशाइयेजू ११० आपहीते मनहेरि हँसे तिरछेकरि नैनन नेहकेचावमें। हायदई सोबिसारिदई सुधि कैसे करौंसो कहोकितजावमें। मोतसुजान अनीतिकहायह ऐसो न चाहिये प्रीतिकेभावमें। मोहनीमूरति देखिबेको तरसावतीहौ बसि एकहीगांवमें १११॥

क०। आईहै निपटसांझ गैयांगई घरमांझ ह्वांतेदौरि आईमेरो कहोकान्ह कीजिये। मैंतोहूं अकेली और दूसरो नदेखियत बनकी अंध्यारी से अधिक भैहै भीजिये। कविमतिराम मन मोहन सों राधिका कहतबात सांचीए हमारीतो पतीजिये। कबकीहौं हेरतन हेरेहरि पावतिहौं बछराहिरानो सो ढूंढ़ायनेक दीजिये ११२॥

स०। जिनको नितनीके निहारतथे तिनको अँखियाअब रोवतिहैं। मुखको निशिबासर एरीसखी अँसुवानकी धारनधोवतिहैं। घनआनँदजानि सजीवनको सपनेबिनपावन खोवतिहैं। नखुलो मुंदो जानिपरैं कबहूं दुख हायजगो किधौं सोवतिहैं ११३॥

क०। आवतिहैहांसो उपहांसो कान्हकथासुने किङ्करीको खासो मणि कीन्हो अवतंसकी। फांसोफँसेताहिको उदासोरहैताकेबिन नाशीसब लाज महाराज यदुबंशकी। भोरीमतिभई कहां रावरे सिखायोकिन जोड़ीनहीं बनै सुनो ऊधो बकीहंसकी। कहांसुख रासो ब्रजराज शंभु हिरदैबासो जगत प्रकाशो कहोकहां दासोकंसकी ११४॥

स०। यामिलि मोहनसों मतिराम सो केलिकरी अतिआनँद वारी। तेई लताद्रुम दुखतदुःख चले अँसुवा अँखियानते भारी। आवतिहौ यमुनातटको नहि जानिपरै बिकुरे गिरिधारी। जानतिहौंसखि आवनचाहत कुञ्जनतेकढ़ि कुञ्जबिहारी ११५ अभिलाष न लाखन भांतिभरी तरुणीन के रोषसों कांपतीहैं। घन आनँद जानि सुधाधर मूरति चाहनअङ्गसों चापतीहैं। टुकलायरही पल पांवबड़ेके शुचि सों रुचि चोपहिं झांपतीहैं। जबते तुम आवन अवधिबदी तबते अँखियांमग नापतीहैं ११६ पापी पपीहा की कूक

बुरी घरपीउनहीं पिउ पीउपुकारै । मैं बैठीअचेत सचेतभरी अरु पीउकी पीरको कौन सँभारै । कोई नहीं ब्रजमण्डलमें जो पापी पपीहाकी चोंचउखारै । अधिरात समय दुखदेतहमैं घरपीउनहीं पिउपीउपुकारै ११७ सब शङ्कतजे गुरुलोगन के कुलकानि कि आनि न आनतिहैं । करिकोटि उपाय बुझावैकोऊ अपनी यकटेक-हि ठानतिहैं । परमेशज और न जानैकछू यकपै मकोपन्थ पिछानतिहैं । सखिप्यारी तिहारेनिहारे बिना अँखिया दुखिया नहीं मानतिहैं ११८ आजुगई बनबाग बिलोकन आइतहां नँदलाल गयोरी । सांकरीखोरि उतैबलदेव इतै मगधूमत भेंट भयोरी । मोहनमों बहियांगहिकै बरजोरकियो उरलाय लियोरी । कम्प छुटोतन स्वेदबड़ो अरुनैनदुऔ जलदानदियोरी ११९ गौनकियो ब्रजचन्दजबै तब येनगये सँग प्राण अभागे । जानकहैं अबतो नितही बलदेवकहा ह्वैहै गतिआगे । नीरनदीचषसों उमगात उसासनके दल दीरघजागे । लाजभये कछुना कहि जात मनोजहुगात सतावनलागे १२० जानतहौं सबनेह लला मन वादिनते बसिही करिराखो । हालचवाइन सों बलदेव कृपाइभलीबिधि ना कछु भाखो । मोमुखचन्द चकोरकियो दृगह्वैन निशङ्क सुधारसचाखो । कुञ्जनमें मिलिहौं ब्रजचन्द धरो उरधीर तजो मनमाखो १२१ ॥

क० । श्यामघनघोरश्याम सदनमेंमोर श्यामाचली श्यामओर श्याम बसन बनायकै । द्विज बलदेवकहै कारीनिशि कारीदिशि कारी कंचुकीकोकसि कारेकजलायकै । कामदसे कारेकेश कचरिकारेफणेशकारी हितकारीवै कलिन्दीतटआइकै । तनकृष्णमन कृष्ण धनकृष्णकृष्णकृष्ण कृष्णहरेकृष्णहरे कृष्णरटलायकै १२२ ॥

स० । कौनभली यहरीतिचली कै गलीमें खड़ेनँदलालइतैहौ । त्यों बलदेव अबैंफिरि आइहौं याहीलता ढिग सांझबितैहौ । जानतलाड़ कियोयशुदाब्रजवासिनके समप्राणहितैहौ । मैंनसजाय करों मनमोहन मोतनको तनकी जो चितैहौ १२३ ॥

क० । केते राजकाजदेखे सुखनके साजदेखे दीरघसमाजदेखे खरेखान पानमें । द्विजबलदेवकहै दानिनके दानदेखे मानिनके

मानदेखे ध्यानीदेखे ध्यानमें। सुन्दरसुचालदेखे बड़े२ मालदेखे लालदेखे तौनजौन पूरेपूरी तानमें। देखेसब लेखेहैं अलेखोएक यहीप्रभु मित्रके मिलनसम सुख न जहानमें १२४॥

स०। आऊँनजाऊँ रहौंघरहीमें सहौं सुखदुःख परेकठिनाई। नीचगँवारनके वह डोलत आवतजात न बार लगाई। मेरेहिआगे गईकितनेगृहमेंनदियो पग पोंरिपराई। कारणकौन सुनोमहराज पियामोहिं सिन्युसुता ठहराई १२५॥

क०। जोरि जोरि जोरि दृग मोरि मोरि मोरि मुख चोरिचोरि चोरि चखचखनि चितैगई। झुकि झुकि झांकनि झरोखा झांकि झांकिजात ताकि ताकि तीक्षणसे तारतन देगई। सुमतिप्रवीण मुख चन्द्रसों उदोतहोत मृदु मुसक्यानि में चकोर चित्तकैगई। लुकि लुकि लोचन सकोचनि सों हेरि हेरि लागीसी लगाय कै लपेटिमन लैगई १२६ डारैकहूं मथनि बिसारैं कहूं घीकोभांड़ा बिकलबिगारैं कहूं माखन मठामहीं। भूमि भूमि आवत चहूं घा तेतु याहीमग पूमपय पूरके पूबाहन मनोबही। झरसि गईधौं कहूं काहूको बियोगझार बारबार बिकल बिसरति जहीतही। एहोब्रजराज एक ग्वालिनी कहूं कीआज भोरहीते द्वारपै पुकारत दहीदही १२७ आयोएकपथमहि परभृतभावकरि ताकोगुणतोहिं यशुदाहूसो सुनाइहौं। दूजेचढ़ियायो क्रूरकुटिल अक्रूरबनितायश युगहूनगावत सिरायहौं। अबयहआयोऊधो सुधोसोदिखातअलि कालिहीतोयाहूको कुसङ्गफलपाइहौं। होयजोसोहोय कहिकोटि समुझावकोय माथुर न आलीअब काहून पत्यायहौं १२८ वृन्दा बन कुञ्जनमें बंशीबट छांहअसि कौतुक अनोखोएक आजलखि आई मैं। लगोहुतो हाटएक मदनधनीको तहां गोपिनको वृन्द रहो जुड़ि चहुंवाईमैं। द्विजदेव सोदाकीन रीतिककु भाषीजाय ह्वैरहीजो नैनउनमदकी दिखाईमैं। लैलै ककुरूप मनमोहनसों बीरवै अहीरनै गँवारीदेह हीरनबटाईमैं १२९॥

स०। प्यारीकोनेह लग्योहरि प्यारेसों ध्यानमें प्राणरहै दिन राती। भेंटिबेकोन उपाय बनै गुरुलोगन के उपहास सकाती।

जानके प्रीतमके तनके मिलकैमिलबेको हिये अकुलाती। भूषण बासअबासके कोनमें बारहि बार लगावत छाती १३० ॥

दो०। फिरफिर दौरति देखिये निचलेनेक रहैन।
ये कजरारे हौन परि करत कजाकी नैन ॥

क०। कजरा कबचहिये बरुनी केशरलियेभौंहैं धनुकिये जेते बार जंगऐनहैं। इनकी कजाकीआगे कजाकी कछूनचलै बहूमल हाथ येतो बाहु दुःखदैनहैं। वाकी सधी चितवनि दोऊ तरवारि बांधैं करैं आधेआधे काहु मारत डरैं नहैं। कहै ऊधोराम सजेबजे रहैंआठौयाम मैनबादशाहीके सिपाही दोऊनैनहैं १३१ ॥

दो०। सकतन तुव तातेबचन मोरसको रसखोय।
खिनखिनऔटे खीरत्यों खरोसवादिलहोय॥

क०। मोतेतो कछूनअपराध परयोप्राणप्यारी मानकररहीयों ही काहेको अरसतें। लोचन चकोरमेरे होतहैं शीतलतेरे तरुण उदित मुखचन्द्रकेदरशतें। कहैमतिराम उठिलागी कण्ठमेरेकत करत कठोरमन आनँदबरसतें। कोपेतें कटुक बोल बोलतिहै तऊ मोकोमीठे होत अधा सुधा रसते सरसतें १३२ ॥

दो०। मोहिं भरोसो रीझिहै उझकि झांकि यकबार।
रूप रिझावन हारवह यह नैना रिझवार ॥

स०। सुन्दरजो कहिये तो तिहूं पुरमें इक नन्ददुलारोइहै। यामैं कहा कहनावतिहै कछु प्रेमको पन्थ नियारोइहै। नेक झरोखाहै झांको बुलायत्यों मोहि भरोसो तिहारोइहै। रिझवार हैं तो दृग रीझैंगे वह रूप रिझावन हारोइहै १३३ ॥

दो०। अलियन लोगन शरणको खरो विषय सञ्चार।
लगे लगाये एकसे दोउन करत शुमार ॥

क०। शरजाके लागै ताहि सुधि न रहत कछू जो हनततताके उर रञ्चक बिथानहै। तिनते अधिककुसुमायुधके पांचौ बाण जिनकेलगेते टरैं मुनिनको ध्यानहै। कृष्णप्राणप्यारेकी दुहाईजिय जानि अली सबहीते बिषम बिशेष नैनबानहै। दुहुंन बिकल करैं जतन लगै न आनदुहूं भांति लगेहूलगायेहू समानहै १३४ ॥

दो०। हैहिय रहत हईछई नईजुगत जगजोय।
डीठिहि डीठि लगे दई देह दूबरी होय॥

स०। देखत देखतहू न लहै कलपू म मरूरि उठै अतिभारी।
देखे बिना न सोहाय कछू पुनि हार रटे अति होत दुखारी।
व्याकुलहै अकुलाय महा मुरझाय रहै निशि नींद बिसारी।
नैन लगैतन दूबरोहोय अनोखी सनेहकी रीति निहारी १३५॥

दो०। चकजकीसी ह्वै रही बूझे बोलत नीठि।
कहूं दीठि लागी लगी कै काहूकी दीठि॥

स०। अजचकीसी जकीसी कहा कछु अंग सँभार हिराइसि हेरी। बूझेहु नीठिकहै मुखबैन हलै न चलै जनु चित्रन केरी। मेरीलखे यह तेरीनई गति मोमति शोच समोह न घेरी। दीठि लगी किधौं काहूकी तोहिंकि दीठि लगी कहुं काहूसों तेरी १३६ तुम्हरेई लिये ब्रजबीथिनमें फिरिके बिनदेखे तईतो तई। नहिं काहूकी खोरिहै यामेंकछूदई मोहिं व्यथाजो दईतोदई। हनमान इतो बिनतीहै सुनो बिकुरे निशि मेरी गईतोगई। उनहीं को लगाओ लला छतियां हमको बदनामी भईतोभई १३७ छांडि पतिब्रत पीतिकरी निबही नहिं तौन सुनी हमसोऊ। मौनभये हरियोंही परयो सहनोई परयो जो कह्यो कछु कोऊ। सांची भई कहनावतिवा कविठाकुर कानसुनी हुतिजोऊ। मायामिली नहिं राम मिले दुबिधामें गये सजनी सुनोदोऊ १३८ सबशङ्क तजे गुरुलोगनके कुलकानिकी आनन मानतिहैं। करि कोटिउ-पाय बुझावैकोऊ अपनीयक टेकहि ठानतिहैं। परमेशज और न जानै कछूयक पू मको पन्थ पिछानतिहैं। सखिप्यारी तिहारे निहारे बिना अँखियां दुखिया नहिंमानतिहैं १३९ अबतोजोभई सो भईसोभई हमवाहिमें आनँद लीबो करैं। इनकाननकी यह बानी अरे बतरानि सुधामद पीबोकरैं। कबिराम कहै अभिराम स्वरूप चितै चितवाहिमें दीबो करैं। सखिहौं वा रँगीले के रङ्ग रँगीये चवायनै चौचंदकीबो करैं १४० आजुलौं जो न मिलेतो कहा हमतो तुम्हरेसब भांति कहावैं। मेरोउराहनोहै कछुनाहिं

सबै फल आपने भागकोपावैं । जो हरिचन्द भईसो भई अब प्राणचले चहैं तासोंसुनावैं । प्यारेजू है जगकी यहरीति बिदाके समय सबकण्ठ लगावैं १४१ दिलसांचो लगेज्यहिको ज्यहिसों त्यहिको तितको पहुंचावतिहै । बलिहंस चुनें मुकताहलको अरु-चातक स्वातिको पावतिहै । कबि ठाकुरयों निज भेद सुनों अरु झावतसों सरुझावतिहै । परमेश्वरकी परतीति यहीमिलोचाहिये ताको मिलावतिहै १४२ सुनिबोल सुहावनतेरे अटायह टेकहिये में धरोंपैधरों । मढ़ि कञ्चनचोंच पखावनमें मुक्ताहल गूंथिभरों पै भरों । तुहि पालि प्रवालके पींजरे में अरु औगुण कोटि हरोंपै हरों । बिछुरे हरिमोहिं महेश मिलैं त्यहिकातें हंसकरों पै करों १४३ गेजबते ब्रजराज उते तबते बिरहागि मनोंभवव्वै लिया । हौंबलदेव निहारिरही त्यों अलीगण गुञ्जनको प्रणछ्वै लिया । फोहाकरो जो पपीहा मिलै उपहासिनके सँगमें शठह्वै लिया । कूकन लागी कटारीलिये जनुबैर परीहै कसाइनि कैलि-या १४४ कोऊमने न करैं इनको हठ ठानिमनें अनतैकरिराखैं । धीरधरैं न टरैं निशिद्योस अरैं अतिहो करिहो अभिलाखैं । त्यों बलदेव तृषासरसैं बहुज्योंहित बारिध पानि पचाखैं । जानत पीरजरे जियकी जबहोती कहू अँखियानकी आखैं १४५ ॥

दो० । नेहु न नयननको कछू उपजो बड़ी बलाय ।
नीर भरे नित प्रति रहैं तऊ न प्यासबुझाय ॥

स० । एकपलौ न लगैं पलकैं ललकैं लखिबे क्यहि लागी चटी । नीर भरो निशि द्योसरहैं न मिटैतऊ भूरि तृषाउपटी । आठहु याम तपैं तरफैं उपचारहू सों न घटै न घटी । यहप्रीति लगी नहीं आंखिनको कोउ पावक व्याधि प्रलय प्रगटी १४६ ॥

दो० । यश अपयश देखतनहीं देखत श्यामलगात ।
कहा करैं लालच भरे चपलनैन चलिजात ॥

स० । सासु रिसात झखैं ननदीजनित सिखवै सखि सीखके बैना । हैबूजबास चवाय भई चहुंओर चलै उपहास किसैना । देखत सुन्दर साँवरी मूरति लोक अलोकके लोक लखैना । कैसी

करौं हटके न रहैं चलिजात तऊ लचि लालचीनैना १४७॥

दो०॥ सोहत सङ्ग समानसों यहैकहैं सबलोग।
पानपीक ओठनबनै काजर नयननयोग॥

स०। ग्रंथमते यहबात प्रमाणहै योंचलिआयो मतौ सबही को। जैसेको तैसोई योगजुरे तब होतमहा सुखदायक जीको। जोविपरीति विलोकिये संगकुढंग तहीं रँगलागत फीको। पान कि पीक बनैपिय ओठन आंखिनहीं लगै काजरनीको १४८॥

दो०॥ तोहीं निरमोही लग्यो मोहीं यहै सुभाव।
मन आये आवैनहीं आये आवत आव॥

क०। नेहभरे नैननकी जबते नजर मिली तबहीं ते चित्त की तो लग्यो अति चावहै। मिलत मिलत मन हिलमिल एक भयो परयो प्रेमफन्दको अनोखो उरझावहै। कहिन सकततेरो हियो निरमोही अति मेरो हियो गह्यो कछु ऐसोई सुभावहै। तेरे मनआये मनआवै ह्वै रहत मुहिं तेरे आये आय जातप्यारो तन आवहै १४९॥

दो०। आपदयो मन फेरलै पलटैं दीनी पीठि।
कौनचालयहरावरी लाललुकावतदीठि॥

स०। नन्दलला उरझाइहियो अब देखिबेको तरसावतहौ। अबतौ हमको यहजानि परी यह लाजइतै नहि आवतहौ। तुम मोहि दयो अपनो मन आपही फेरलै क्यों फिरनावतहौ। अब तो पलटे इत पीठि दई हरिकाहेको दीठि लुकावतहौ १५०॥

दो०। खरी पातरी कानकी कौनबहाऊ बान।
आकफली नरली करै अलीरजियजान॥

स०॥ बोल सिरोरुह बन्धन नाहिंनै गन्ध सुहातन गन्धफली को। आरति मालतिकी नरते लवलेश न भावतहै लवलीको। पाही दूषन दैन बकै बसि कौन कहाऊं कनैरकलीको। माधुरीको मधुपाई बँध्यो न चलै चितअंककी ओर अलीको १५१॥

दो०। नीको लसत ललाट पर टीको जटित जराय।
छबिहिं बढ़ावत रवि मनौ शशिमण्डलमें आय॥

स० । यौवन ज्योतिजगामग होति शिंगार प्रभासर लावतहै रीझि रहैं लखि लालके लोचन मोद हिये भरआवतहै । सोहत टीको जराय जरयो तिय भाल महा छबिछावतहै । मानहुं चन्द्र के मण्डलमें दिन नायक शोभा बढ़ावतहै १५२ ॥

दो० । इततें उत उततें इतें छिन न कहूं ठहराति ।
जकरनपरचकरीभई फिरिफिरिआवतजाति ॥

स० । जबते अटकी नवनागरसों तबते न कहूं मन लागतहै । ठहरात नहीं छिन एककहूं निशिबासर ज्यों बहरावतहै । कबहूं इतते उतधावतहै कबहूं उततेइत आवतहै । चकरीजिमि आवत जात बधू पलकौ न कहूं कलपावतहै १५३ ॥

दो० । सकैंसताइन तमबिरहनिशिदिन सरससनेह ।
रहै वहै लागी दृगनि दीप शिखा सी देह ॥

स० । वा मृगलोचनि के बिछुरे जुभई गति सो नहिंजात उचारी । शुद्धदशा परि पूरण नेह निबात थली उर अन्तर धारी । यद्यपि दीप शिखा सम नैननु लागि रहे तनकी द्युति प्यारी । तद्यपि सूझे हिये न कछू भरि पूरि रह्यो विरहातम भारी १५४ ॥

दो० । थाकी यतन अनेक करि नेक न छांड़त गैल ।
करी खरी दुबरी सुलखि तेरी चाह चुरैल ॥

स० । रोमनि २ भोय गई हियमें धसि प्राणन मांझ खगीहै । हौं करिथाकी उपाय सबै हरियंत्रन मंत्रनहू नजगीहै । देहसुखाय करी दुबरी तब बावरी ज्यों सुधि बुद्धि भगीहै । येते पै वाकी न छांड़त गैल चुरैल ह्वै रावरी चाह लगीहै १५५ ॥

दो० । कहा कहौं वाकीदशा हरि प्राणनके ईश ।
विरह ज्वालजरिबो लखैमरिबो भयोअशीश ॥

क० । प्यारेमनमोहन तिहारेबिछुरेते वृषभानुकी कुमारिभई खरी कलिकानहै । जलबिन मीनज्यों विकल तलफत अतिकहै कबिकृष्ण ऐसीहोत आनबानहै । ज्यों २ करियत उपचारन की भीरत्योंत्योंबढ़ैतदूनीपीरर आंखिनहीं पानहै । विरहाकिज्वालनि सों जरिबेकेलेखे वाकोमरिबेको वनअशीशके समानहै १५६ ॥

दो० । मरी डरी किटरी विथा कहा धरी चलिचाहि ।
रहीकराहि कराहिअति अबमुख आहि न आहि ॥

स० । ऐसीको छांड़ि विदेशगयो हरिजो कबहूं बिछुरी न धरी है । हाय यहै रटलाय रहीगति याको लखे मतिमेरी हरीहै । बालदियो बर जानि भरी बेकराहनि क्यों अबहीं बिसरीहै । पीर टरी कि परीहै मरी चलिदेखु अरीकहा दूरिखरीहै १५७ ॥

दो० । मरनभलो बरुबिरहते यह बिचार चितजोय ।
मरन मिटै दुख एकको विरह दुहूं दुखहोय ॥

स० । नेकहीके बिछुरे सबहो सुखसाज भयेदुखदायक भारे । नैनन नीर झरी बरसैं तरसैं छतियां बिन प्राण पियारे । आली वियोग बिथा ढरिबेते भलो मरिबो मन मान्यो हमारे । एकको दुःख मरे मिटिजात वियोगमें होतहैं दोऊदुखारे १५८ ॥

दो० । सोवत जागत स्वप्नबश रस रिस चैन कुचैन ।
सुरत श्याम घनकी सुरत बिसरेहू बिसरैन ॥

स० । बाहर जाउं तो बाहरको घर आऊंतो आवत संगलगेहो भौनके कोनेमें बैठि रहौं हरि पैठिरहै हियमें पहिलेही । नींदहू में न कयानी करै छिनहूं छिन आवतहै सपनेही । सोवत जागत रैन दिनामनमोहन मोहन चैन न देही १५९ ॥

दो० । बिरहजरी लखिजी गननु कह्यो न उहिकैबार ।
अहे आव भजि भीतरी बरसत आज अँगार ॥

क० । बैसको किशोरी गोरी शोभा बरणी न जात गातकी निकाई छबिनाही काहू योनमें । बासर गँवायो खोलि जियमें बियोग बेलि सांझसमय बिथा बाढ़ी बैठि पिय भौन में । औधिके व्यतीत भये रञ्चको न कलपरी व्याकुल सी भई जातसारे मन्द योनमें । नीचे ले उठाय नारि डीठि पर जागना सु आगि आगि आगिकैके भाजिगई भौनमें १६० ॥

दो० । नेकन झरसीबिरह झर नेहलता कुम्हिलात ।
छिन २ होत खरी २ खरी फैलती जात ॥

क० । नन्दके दुलारे प्यारे न्यारे भये जबहो ते तबहो ते तातो

ह्वैकै छाती अकुलाति है । सुधि आये घरी घरी झालसे मलत उरप्राण परे परवश कछ न बिसातिहै । दारुण बिरह झर यदपि सनेहलता झरसी तदपि नेकहू न कुम्हिलातिहै । दिन २ छिनछिन उमँगि अधिकहोत हरी हरी खरी खरी झालरति जातिहै ६१॥

दो० । छुटी न लाजन लालचौ पिउलखिनेह गिरेह ।
सटपटात लोचन खरे भरे सकोच सनेह ॥

स० । मायके में मन भावनको लखिप्यारी निशङ्कहै देखिसकैना । देखिबेको तरसै हियरा दिख साधलगी चितचैन लहैना । छूटै न लाज अडूटै न लालच लोककी लीक उलङ्घ परैना । ता ते सकोच सनेह भरे अकुलात खरे जलजातसे नैना १६२॥

दो० । समरस समर सकोच बश बिबश न ठिकठहराय ।
फिरि २ उचकत फिरि दुरत दुरि २ उझकत जाय ॥

स० । आनन मांझबसी पियमूरति नैनन मांझ सकोचिबेको। झांकिझरोखा दुरैफिरि झांकै दुरै बहुरौं इहरात न एकौ । आगइते गुरुलोगनकी उत लालच मोहनके लखिबेकौ । लाजचौ कामके बीचहुबीच परीयां चलाचल हाल हियेकौ १६३ पड़ैदिन रैन छिनेक न चैन भये अतिही निज नैन दुखारी । कासोंकहौं दुखकौलौं सहौं अब हाफ़िजहौं धुनिमें मैंतिहारी । हायदई सो बिसारिदई कहो काहभई तकसीर हमारी । नैनके बान जो मारहैंतानि तो आनिकरो हिय प्रानपियारी १६४ चात्रिक मोर करैं अतिशोर उठो घनघोरहैं श्याम घटा । चमकै बिजरी अतिजोर भरी अरु लागीझरी लिये ठाटटटा । शोक भरी पछितावै खरी बिरहागि जरी शिरखोले लटा । काहिके हाय करै पछिताय सो हाफ़िज देखिकैसूनी अटा १६५ हमैं चितनैन नहीं पलहू जब ते वह प्राणपियारी सिधारी । फीकीलगै सिगरी सुख संपति ऐसोभई बिरहा अधिकारी । युक्तिनहीं मिलिबेकी चलै अरुपै म प्रबाह उठैनित भारी । लागीसो लागिगई अखियां हियपै म बनो रखियो तुमप्यारी १६६ नैनके बाणलगे जबते तबते कलहै छिनहूं नहिंप्यारी । चैनपड़ै नहिं हाफ़िज हाय रहैदिन रैनमहा

बेकरारी। का तक्सीर भईहमसे जो बिसारिदई सुधिहाय हमारी। लोगसबैयकहैं सुनु प्यारी किबाजतहै दोउहाथन तारी १६७॥

दो०। ज्यहि नदाय दुपहरभई रहित माघकी राति।
त्यहि उसीरकी रावटी खरी आवटी जाति॥

स०। लाल तिहारे बियोगते बालबिहाल खरी तरफै सफरी सी। बातन तापके त्रासनते सखि कोऊ न जायसकै नियरीसी। ह्वैरहे जे टकि ज्वालनि में जहां जाड़ेकी राति तुसार भरीसी। ताहीं उसीरके धाममेंबामसोजाड़े की रातिमें जात बरीसी १६८॥

दो०। बामा भामा कामिनी कहि बोलौ आवेश।
प्यारी कहत न लाज नहिं पावसचलत बिदेश॥

स०। आयेहो मांगन मोपै बिदा इत पावसमें उमड़े घनकारे। कामिनि भामिनि बामके बोलहु प्यारीकहौ जिन नन्ददुलारे। रञ्चकहू न लजात हियो हितके अबये दुखदीजत भारे। ऐसेमें छांड़िबिदेश चले कहो मेरीकहा गति प्राणपियारे १६९॥

दो०। कहाभयो जो बीकुरे मोमन तोमन साथ।
उहीं जाव कितहीं गुड़ी तऊ उड़ायक हाथ॥

स०। जो करतारची सोसही बिधिऔरबिचार अकारथहीहै। बेदपुराण पुराणैंसुनी सब कोऊ कहैं यह गाथहीहै। अन्तर बीचपरयो तो कहाभयो मोमन तो तुव साथहीहै। जाहुगुड़ी किततूं उड़िडोर उड़ावन हारके हाथहीहै १७०॥

दो०। श्याम सुरतिकरि राधिका तकति तरणि जातीर।
अँसुवनि करतित रोसको खिनक खरोहै नीर॥

स०। श्री मनभावनके बिछुरे वृषभानु सुता अतिही अकुलानी। भोजन भौन सखी न सोहाय सोहाय रटै निशिबासर बानी। सूर सुताहि निहारि रही उनहारि कछू हरिकी पहिचानी। आंसुनके परबाह करयोखिन एकखरी होत रासकोपानी १७१॥

दो०। समय समय सुन्दर सबै रूप कुरूप न कोय।
मनकी रुचि जेती जितै तित तेती रुचिहोय॥

स०। सुन्दर रूपकहौं क्यहि कामहै जो अपने चितमें नहिं

आवै। जो चितमांझ कुरूप चभ्यो तो वहै उरको अतिमोद बढ़ावै। होत समैई समै सब सुन्दर रूप कुरूप न कोई लखावै। जाकी जितो ज्यहिठौर बढ़ै रुचिसो त्यहिठौर तितो रुचिपावै १७२ ध्यान रहै दिनरैन तेरो छिनहूं बिसरै नहिंप्राण पियारी। आदिकरौं सिगरी बतियां जब शोकबढ़ै चितमों अति भारी। लोभीचहै जिमि सम्पतिको त्यौं हीं लागि रहीदर्श आश हमारी। हाफ़िजहाय कहांमिलिहै अबदेखनको वहशक्ल तिहारी १७३ ॥

बांसुरी विषयके कवित्त सवैया ॥

क०। बाजी उठियांई बाजीदेखबेकोदौड़ीआई बाजीमुरझांई सुनितान गिरिधरकी। बाजी न धरतधीर बाजी न सँभारैंचीर बाजिनकी बिरहअनल अतिभरकी। बाजीहँसि बोलैंबाजी करत किलोलैं बाजीसङ्ग लागिडोलैंसुधिरहीनाहिं घरकी। बाजीकहैंकहांबाजीबाजीकहैंकहूं बाजीबाजीब्रजबांसुरी तोसांवरेसुगरकी १॥

स०। बाजीहती मनमोहन के मुख तादिनते मन मोहिलई है। घायलसी घुमरौं घरमें अह वादिनते मेरी सुद्धिगई है। कासों पुकारिकहैं। सजनी तिगरेब्रजमें बेपोर भईहै। यहि बांस कि बंशीको नायकरौं ज्येहि बांसकी बांसुरीगाज बईहै २ ॥

क०। खगमोहैं मृगमोहे नगमोहे नागमोहे पन्नग पतालमोहे धुनिसुनि नासुरी। सुरमोहे नरमोहे सुरन सुरेशमोहे मोहि रहे सुनि कै सुर अरु आसुरी। भनतगुमान कहौ मोहिबेकी कहा बाचि चर औ अचर मोहे उमंगि हुलासरी। गोपिनकेवृन्द मोहे आनँद मुनिन्दमोहे चन्द्रमोहे चन्द्रके कुरङ्गमोहे बांसुरी ३ ॥

स०। बगहै मुरली स्वरलीन किधों २ कूल कलिन्दीके टोहन गो। किधों पीतपटालखि बालकुटी किधों मोरपखा कबिजोहन गो। किधोंलालके मालके मध्यफँस्यो किधोंकाम कमानसी भौंहन गो। हमकासों गदाधर योगकरैं मनतो मनमोहन गोहनगो ४ ॥

क०। भूल्यो खानपान भूल्यो पटपरधान सबै लोगनकोभलि गयो बांसु औ निवासुरी। चकिरहीं गैयांचारु चोचन चिरइयां

दाबि चितवनि चलचुख चेतचितु नासरी। हैधरी भरीसीहै परी सी वृषभान जाई जीवतजनावै देगआवै दृग आंसुरी। कान्हरस कैसेकै छुँड़ाई मेरीबीर कविकबिकी बिसासनि बगारै बिप्र बांसुरी ५ बांसुरीके बीचएकभोंर डारिल्याईसखिढांकिपट पल्लवसों महाबुद्धि भारीसों। भनतपुराण यामें आपुहीते धुनिहोत कान दैकै कह्योसुनौं राधा सुकुमारीसों। रीझि २ वारी ताहि आपही मगन भई नभतन चितै मुखमूंद्यो श्याम सारीसों। आंचरमें गांठिदै बिहँसि उठि चली आली प्यारी कही आजु ह्याहीं रहो न हमारी सों ६॥

स०। द्वारे न जैये लजैये सबै बरिआई कलङ्क लगाइबोहै। सुनिकै क्यहि भांतिसों धीरधरौं मृदुबांसुरी तानको गाइबो है। यहिबांसकी कौनकहै ऋषिज्र पातिव्रतपूरो छुड़ाइबोहै। सुनुरी सजनी ब्रजको बसिबो तरवारिकी धारको धाइबोहै ७॥

क०। जलको न घटभरैं मगको न पगधरैं घरको न कछु करैं बैठो भरैं सांसुरी। एकैसुनि लोटिगई एकैलोटपोटभई एकनकेदृग ते निकसि आये आंसुरी। कहै रसनायक सो ब्रजबनितन बधि बधिक कहायेहाय हुईकुल हांसुरी। करिये उपाय बांस डारिये कटायनाहीं उपजैगो बांस नहि बाजै फेरि बांसुरी ८॥

स०। मोरपखा धरिकै शिरऊपर पैन्हिगरे बनमाल सोहाई। लेपकियो मृगनाभिको नागर ओढ़िपितम्बर बंशी बजाई। कान्ह चलेकहि कौनधौं है कबिराज उतै जितते धुनि आई। राधे रही मुंहफेरि लतानमें हेरिहरी हँसिकै हियलाई ९ गायकै तानबजाय कै बांसुरी मोहिकै मोहनी मोंशिर दीनी। ऐंठिकैपाग उमेठिकै पेंचनि टेढ़ीसी चालचलै रसभीनी। रीझी रिझायकै जातभई मकरन्द कहीसो कहागति लीनी। जाउरी कापर नाउरी बूझन जानति मूरति सांवरीकीनी १० जानत ना कछुभेद भटू सहजै मनमानि लियो इन आइबो। मोहन वादिनसों बलदेव सिखो यक मोहनी जाल चलाइबो। कानपरैधुनि बांसुरीकी तबक्यों बनिहै चितलै गृहजाइबो। हांसकिये अधरापै धरी अब चाहत

वैसहीफेरि बजाइबो ११ एकसयम मुरलीधुनिमें रसखानि लियेरे कहिनाम हमारो । तादिनतेयहबैरी बिसासिनि झांकन देतनहीं हैदुवारो । होतचवाउ बवाऊमें क्योंकरक्योंअली भेंटियेप्राण पियारो । दृष्टिपरी तबहीं चटकोअटको हियरेपियरे पटवारो १२ ॥

क० । वादिनगईतो ब्रजदेखन करीलबन झकमें जोपरी आय बंशीके बनासुरी । ताक्षणते आलीफिरौं बावरीसी रावरीसों द्विजदेव नेकहूं रुकी न पर सांसुरी । आजकछू आईहिये सूरत समानहुती रश्चक बिहानीरैन धरकत पांसुरी । कीजैकहा राम अब जावैक्यहि ठामएरी फेरि बनवैरिनबजोरी बनबांसुरी १३॥

स० । चलि देखुरी वा निकसो बनिकै ब्रजराजको लाड़िलो गावतुहै । मुखचन्द्रकि चारु मरीचिनसों बलिनैन चकोर सिरावतुहै । जबडीठिको ओंठनको पटको मुसुक्यानिको रङ्गमिलावतु है । तबबांसुरी बांसहरेको लला सुरचापके रङ्गदिखावतु है १४

गोकुलमें न कितो कुलनारि पतिब्रत पालनवारी प्रबीनो । और न सीखन कौनेसुनो सतशीलकी पद्धति कौने मलीनी । पेखत बानरनागरकी छबिकौन भई बहिरूप अधीनो । वा मुरली धुनि कानपरे कुलकानि बिदाकरि कौने न दीनो १५ ॥

दो० । कितीनगोकुल कुलबधू काहिन कहिसिखदीन ।
कौने तजी न कुल गली ह्वै मुरली सुर लीन ॥

स० । कौनठगोरी मरीहरिआज बजाईहै बांसुरिया रसभीनी । तानसुनीजिनहीं जिनहीं तिनहीं तिनलाज बिदाकरिदीनी । घूमे खरीखरीनन्दकेबारन बोनीकहा अरुबालप्रबीनी । याब्रजमण्डल में रसखानसो कौनभट सुलटू नहिंकीनी १६ ॥

दो० । लईसोंहसी सुननकी तजिमुरली धुनिआन ।
कियेरहत दिनरात दिन कानन लागे कान ॥

स० । मोमनकी मुरलीकीअली जबते मधुरीधुनि कानपरीहै । बालभई तबहीं तेलट इहकाज समाजसबै बिसरी हैं । कानन कानन ओरकिये रहैं कामवरी कुलकानि करीहै । बात सोहात न होतकछू सुनिबेकी मनोमन आनिकरी है १७ ॥

दो०। उरलीनेअति चटपटी सुनिमुरली धुनिधाय।
हौं निकसी हुलसीसुतो गोहुलसी उरलाय॥

स०। भौनके कोनेमें बैठीहुतीहौं कछूगृह काजके साज पगी री। बारककान्हकरी तबही मुरलीधुनि प्राणन आनखगीरी। हौं लखिबेको उछाह भरी निकरी वह दीठिपरयो न ठगीरी। नैनन कोअरु काननको मनको तबते तलाबेली लगीरी १८॥

दो०। वतरस लालच लालको मुरलीधरी लुकाय।
सौंहकरै मोहन हँसै दैन कहै नट जाय॥

स०। आजलखो वृषभानललीं मनमोहनसों रसखेल टरी है। बातनके चसकै सुरलो मुरलीहरिकै दबकाय धरीहै। ज्योंज्यों हहाकरि मांगैलला वह त्योंत्यों कछूअठिलात खरीहै। देन कहै मुकरैहँसै भौंहनु सौंहकरै रसभाय भरीहै १९ क्योंइन आंखिन सों निरशङ्कहै मोहनको तन पानिपपीजै। नेकु निहारे कलङ्क लगै यहगांव बसे कहौ कैसेकै जीजै। होतरहै मनयों मतिराम कहूं बनजाय बड़ो तपकीजै। ह्वैबनमाल हियेलगिये अरुह्वैमुरली अधरारस लीजै २०॥

क०। नीरबलबीर छबिहीन दृगमीन ऊधो कैसेजिये दीनता के तापमें तपायकै। और न उपाय यदुरायसों कहोंगे जाय चूक को बिहाय ममबिनती सुनायकै। नन्दकेदुलारे ह्वैकबैनकहैं चैन बारे प्राणनके प्यारे ह्यांहमारे ढिगआइकै। मुरलीको टेरि अधरानिधरि हेरिहमैं फेरिएक बेरि जाहिं दरश दिखायकै २१ किधौं है बशीकरकी सीकरकरत कैद जानि नहिंदेत कहूं मनके मतङ्ग को। किधौंहै उचाटन भुलावैघाट बाटनतैं हाटनतैं धावैबधू छाँड़ि सबसङ्गको। किधौंनेह घटाछजै दन्तछन छटाछोर एरीबीर बरसै सरस रसरङ्गको। किधौंयह मोहनकी बांसुरी बिमोहनहै सोहन लगतिलिये गोहन अनङ्गको २२ भईहैं बियोगीबाल भोगीहोत हैंबिहाल तारसक भोगीभयेयोगी तजिकैतुरी। तपनसुताकोरी लगीहै ज्यों तपन तीर भूलिकै अपन पिउ कोगति बेगते मुरी। शारद बिशारद की भारद भईहै सुनि बीणको दुरायकै

प्रवीण दरी मैंदुरी । भूलै सबबांसुरी सुनैहैं जबबांसुरीको आं-सुरी न रोंकि सकैं आसुरीहू न औसुरी २३ जनी जड़बंधते अ धर अवतंश बनी गनीहै असारनमेंहै हियेकी खालीरी । हरैम-नधनको करैहैमाधुरीसों बात उठैं उतपात याके कुलते दवाली री । छिद्रनको लियेहिये गांठिते भरी कठोर बोलै मुहुंजोर बर जोर ये कुचालीरी । कालीके दमन कहु कैसेप्रीति पाली याते कहैं बनमाली जगमें प्रवीण आलीरी २४ सही शीतभीत बर-षातपकी उतपाति राति दिनयाने बहुभांति तपको किया । ज-नमते बाढ़ी प्रीति एकपग ठाढ़ीरही डाढ़ी गई गाढ़ी नहीं नेकु कसक्योहिया । कीजै नाहिंरोष यापै दीजैनाहिं दोष बीर देह को सुखायधीर नेहू ब्रतको लिया । परखि सुलाखि तायलीन्ही ब्रजराय याको ताते यहबंशी आयभई श्यामकी प्रिया २५ बंशी ने कियो अधीन गह्यो श्याममन मीन रखैं बसुयामलीन लखैं भलेभायरी । अंगको त्रिभंग करे एकपग सेवैंखरे अतिसे उमंग भरे जासु संग पायरी । रीझेहैं कलापै याकी ललापै न रह्योजा-य तपके कलापै याके कापै कहि जायरी । सेज अधरानपै सोय आयकै सनेह लाय नितही पलोटैं पायँ जाके यदुरायरी २६ ॥

स० । बांसुरी आजधरे अधरान बजावतहैं श्री कुञ्जबिहारी । ध्यान छुट्यो शिवशंकरको अरु भूलिगई यमुना जितहारी । ब्र-ह्मावेद छुट्यो भनिबो अरु भूले समाधि सबै ब्रह्मचारी । हाफ़िज़ जफेरि सबै ब्रजकेजन काहेन प्राण करैं बलिहारी २७ आज बजी यमुनातट फेरि कहू मुरली जग मोहनहारी । ध्यानछुटे मुनि आदिनके अरु भूलिगई रम्भा नृतकारी । मोहिकै हाफ़िज़ धायचल सब औरकहैं मनमें य बिचारी । हाययहतान पड़ै जब कान रहै नहिं ध्यान औ ज्ञानसम्हारी २८ ॥

स्वप्नबर्णनकेकवित्त व सवैया ॥

स० । सोवत आज सखी अपने द्विजदेव जु आय मिले वन-माली । जौलौंउठी मिलिबे कहँधाय सो हाय भुजान भजान पै

घाली। बोलि उठेइ पपीगन तौलगि पीउकहां कहि कूर कुचाली। सम्पतिसी सपनेकी भई मिलिबो ब्रजराज को आजको आली १ आवतमें सपने हरिको लखि नेसुक बाट सकोच न छोड़ी। आगे ह्वै आड़भये मतिराम महूं चितयो चितलालच ओड़ी। हों ठनको रसलेनको आलिरी मेरी गही करकांपत ठोड़ी॥ और भईन सखीकछु बात गई इतनेहीमें नींद निगोड़ी २ व्याकुल काम सतावत मोहिं पिया बिन नेक न लागत कोई। प्रीतमसे सपने भइभेंट भली बिधिसों लपटाय कै सोई। नैननउघारि पसारिकै देखौं चौंकिपरी कितहूं नहिंकोई। एरी सखी दुखकासों कहौं मसक्याय हँसी हँसिकै फिरि रोई ३ पौढ़ी हुती पलँगापरमैं निशि ज्ञानरु ध्यान पिया मनलाये। लागिगई पलकैं पलसों पल लागतही पलमें पियआये। ज्योंहीं उठीउन के मिलिबेको जागिपरी पियपास न पाये। भोरन और तो सोयकै खोवत हौं सखि प्रीतम जागि गँवाये ४ लै सपने अपने मनकी दुलही उलही छबि भाग भरीसी। अङ्क निशङ्कसों लै पर्यङ्क ललामुख चूमि सुचारु धरीसी। यों लपिटी चपिटी हियसों यशवन्त बिशाल प्रसून छरीसी। नैननके खुलते वहमूरति पास परी उड़ि जात परीसी ५ भेंटतही सपनेमें भटू चष चञ्चल चारु अड़े के अड़रहे। त्यों हँसिकै अधरान हूं पै अधरान धरे ते धरेके धरेरहे। चौंकि नवीन चकी उझकी मुखस्वेदके बुंद ढरेके ढरेरहे। हायखुली पलकैंपलमोंदिलके अभिलाषभरेकेभरेरहे ६॥

क०। सपनेमें आयो सुखसांवरो सलोनो वहनिज अंग आगे जो अनङ्गहि लजायोहै। मोहनी सी बातैं कहि कहि गहि गहि बांह हँसिहँसिहरष हजारउपजायोहै। शिव कबिकहैं मोपैकह्यो न परतकछु बिरहादुसह दुखनेक ना भजायोहै। जौलौंमैंहियेमें लगाऊंरी रसिकराउ तौलौं बजमारे जौलौं गजरबजायोहै ७॥

स०। आज भटू सपने नँदनन्द मिले मुसक्याय सनेहसों चीन्हों। आनँद ह्वै बलदेव इतै निजसैन कृपाधर आसनलीन्हों। जानि दशा हियकी सिगरी उरलावनके हित सैनहिं कीन्हों। तौ

लगि जागिरही चषसों हठि बैरिनि नींददगा करिदीन्हों ८॥

क०। काहू काहू भांति राति लागी थी पलक तहां सपने में आयकेलि रीति उन ठानीरी। आय दुरे जाय ममनैनन मुंदाय कछु हौंहू आली ढूंढ़िबेको तब अकुलानीरी। एरी मेरी आली यह निराली करताकी गति द्विजदेव नेकहू न परत पिछानीरी। जौलौं उठि आपनो पथिकपिय ढूंढ़ौं तौलौं हाय इन आंखिन ते नींदई हिरानीरी ९॥

स०। जबते सुने देखे बसे मनमें तबते फिरि भेंटभईहि नहीं री। जलहीन सी मीन दुखी अँखियां तलफैं दिनरैनि बिथा री मईरी। उनसों अबै सोवतही सपनेमें सखीरी बनायकै भेंट भईरी। मनमानी भई नहिं सेवकसों अँखियांकी नींद कितो ई गईरी १०॥

सिंहावलोकन छन्द॥

लालहैं भालसेंदूर भरो मुखसिंदुर चारुरबांह बिशालहै। शाल हैशत्रुनको कबिदेव अति सिद्धित सोमकला धरे भालहै। भाल हैदेव जू सूरज कोटि सोकाटत कोटि कुसंकट जालहै। जालहै बुद्धि बिबेकन को यह पारबती को लड़ायतो लालहै १ नामहिं के सुमिरे सख पायहौं और न कामगिनौं जगकामहि। कामहि कोई नआयहै एसुत मातुपिता प्रियबन्धु औ बामहि। बामहिं हैं सिगरे भवके सुख होत नहीं क्षणहू बिश्रामहि। रामहिं राम ररौ रे ररौ सब वेद पुराणको है परिणामहि २ डरिहौं नहिं नेक यशोमति सों गहि मोहन को बश में करिहौं। करिहौं सब खेल गोपाल सों आज भले सुख साजि हिये धरिहौं। धरिहौं फगुआ मिसही मिससों पटपीत उठाय हियेभरिहौं। भरिहौं पिचकारिन रंग सुरंग उमंगसों लालन पै डरिहौं ३ धाये हैंआज घने घनघोर सो बोलत मोर बियोग जनाये। जनाय के मोहिं बियोग सों यौवन मारत काम के बाण चढ़ाये। चढ़ाय के लायेहैं श्यामघटा बदरा चहुंओर महा झरिलाये। लायके मोहिं

कहां बिलमें अजहूं नहिं पीउ बिदेशसों धाये ४ मोरी बिथासे अजानहै फागुन लायो अबीर अबीकन झोरी। झोरी गुलालकी कालडसी होरी कैसेखेलौंमैं पिया चितचोरी। चोरी कहाकरी सांचीकहो अबफाग नहीं कोऊ लाखकहोरी। होरी न होरी अहो रीसखी हियो दाहनकोहै यह बैरिन होरी ५ सांवरी मूरतिमोहि लियो मनगेह सोहात सोहात न गामरी। गामरीके धौं कुञ्जन में हरि हाय कितै अब ढूंढ़न जाउंरी। जाउंरी तो कुलकानि मिटै सबलोग लोगाई धरैं मिलि नामरी। नामरी तो अपनो करिले मोहिं आनि मिलायदे मूरति साँवरी ६ फागरी आयो सखीहम का बिनप्रीतम मैन की आगसी लागरी। लागरी मेरी गोहारि सखी करबेगि उपाय सबेरेही जागरी। जागरी होतहै रागचहूं दिशि मेरेहिये बिरहा दियो दागरी। दागतो मेरी जबै मिटिहै मिलि मोहनके संग खेलिहौं फागरी ७ करकी पसुरी जबलागि लई जबते ऋतु पावसकी बरकी। बरकी सुधिआयगई जबहीं बरषैं बरषा वो धराधरकी। धरकै नभबन्द महादुरकै सजनी न लखै द्युति चादरकी। दरकी छतियां सुमिरे बतियां पतियां न लिखै अपने करकी ८ बालरी आईं चहूं दिशिते तिनघेरि लियो नँदनन्दको लालरी। लालरी झोरी अबीर भरे मसकयाय रँग्यो सखी श्यामको भालरी। भालरी बेंदी भली झलकै उर सोहत मोतिनकी अति मालरी। मालरी लोनी न कोऊलखै अवलोकि रही बसुदेव को बालरी ९ बालरी आईं लिये रँग केसर खेलत मोहन के सँग फागरी। फागरीखूब मचो बृजमें अवलोकि बसन्त सोहावनो लागरी। लागरीनेह नयो हरिसों निरखैं निजपूरबकोकृतभागरी।भागरीलोनी न कोऊलखैअवलोकि रही नँदनन्दको बालरी १० अरजीलिखि मोहनको सजनी ऋतुआई बसन्त सबैलरजी। लरजी डरियां जो पलाशन की पग पायल कोकिलकी मरजी। मरजी सुनिकाम चढ़ोसजिकै शशि युवतिन की परजीपरजी। परजीपरजी अबदेहसबै लिखुरी मनमोहन को अरजी ११ फागरीआयो सोहायो चहूं दिशि गावत सुन्दरि

सुन्दर सागरी। रागरी मेरोगयो हरिलै अबकासों कहोंअपनो यह अभागरी। भागरीहूसे कुटैनशरीर रहो इन बातनको उरदागरी। दागतो मेरोतबै मिटिहै जब मोहनके सँग खेलिहौं फागरी १२ हारिगई मगहेरि चहूं दिशि दादुर शोरकरैं अतिभारी। भारी है दुःखमेरो जियमें। नहिंआये पिया मोरी सुद्धि बिसारी। सारी सँवारत गावतगीत बिनापिउ लागतमोहिं कटारी। टारि सकै बिधिरेख न कोउ मनशोधि कहोयह बिप्रबिहारी १३ आवतगाढ़े अषाढ़के बादर मोतनमें अतिआगि लगावत। गावत चाव चढ़े पपिहा जिनमोसों अनङ्गसों बैर बढ़ावत। धावते बारिभरे बदरा कवि श्रीपतिजूहियरा डरपावत। पावतेमोहिं न जीवतप्रीतम जो नहिं पावसमें घरआवत १४ नोखी भईहौ कहातुमहीं उमहीं रहती मतिदीन्ही नईदई। दईकाहूकी बीरी न लेतभटू तुम्हैं ये बतियां कहोको सिखई। खईमोंन बड़ोभयो कोऊकहूं छिनहीं अतिही रिस पूरिगई। गई भारमें नाहीं न नाहीं करो लखो कैसी घनेरी घटाउनई १५ गायहैं लोग लोगाईसबै जब आनँद कोटिहिये उपजायहैं। जायहैंखेलन फागसुहागन भागभरी अनुराग न छायहैं। छायहैंबीर अबीर गुलालन दम्पतिअङ्ग तरङ्ग न नायहैं। नायहैंकान्ह जोबेनी प्रबीण तोजातन प्राण बिलम्ब लगायहैं १६ लागरी ना इनबातनमें हरिआयहैं जानबड़े निज भागरी। भागरीबैरिनकी चरचाते तजैंगुरुमान पियारसपागरी। पागरीसोहै न पांयनमें कविपारसहै तुतोबुद्धिकी आगरी। आगरीलागै तिहारेहठैं मनमोहनके उठिकण्ठसों लागरी १७ बावरी तूतौबकै बहुतेरो लग्योनहिं तोहिंकहूं यह बावरी। बावरी घायल जानतहैं जिनके निशिबासर प्रेमसुभावरी। भावरी भोजन भौन ननी दहिये उरझी वहमूरति सांवरी। सांवरेरङ्गमें हौंमैंरँगी नचढ़ै अबदूसरो रङ्गरी बावरी १८ कोहैअरी वहगैल चलोगयो बेणुबजावत सांवरोसोहै। सोहैसदा अँगअंग बिभूषण बीरसुधा सबको मनमोहै। मोहिं बतावहि यहहितकै बलिगांव औ गङ्ग जहांअब जोहै। जोहै सोहै सुनुमेरी भटू जनिझाँक झरोखे को

जानिये कोहै १६ गायहौं देवी गणेश महेश दिनेशहि पूजतही फलपाय हौं। पायहौंपावन तीरथनीरसों नेकुनही हरिको चित लायहौं। लायहौं आछे द्विजातिनको अरुगोधन दानकरौं चरचाय हौं। चायअनेकनसों सजनीघनआनँदमीतहिकण्ठलगायहौं २०॥

क०। सूझैन मोंबन बागतड़ाग सबैबिधि फूलपलाशन सूझै। सूझैन मोंघर काजसखी नहिंसासु जेठानीकी बात नबूझै। बूझै न मङ्गदबेणु नये २ सैनन नैननमें नहिंसूझै। सूझैवही बनमाल गरे सिगरोजग सांवरो २ सूझै। कान्हकी बांसुरी ऐसी बजी मनमेरो हरोसुधि नारही प्राणकी। प्राणकी कौन गुमान करै अनुमान बिचारकियो सुरतानकी। तानकीतेग़ लगीजियमें हिय में अतिशोच करै वृषभानकी। भानकी भौनको भूलीफिरै जबते परीकानमें बांसुरीकान्हकी २१ लालहि घेरिरही ललना मनोहेम लता लपटानी तमालहि। मालहि टूटतजात न जानत लूटतहैं रसरास रसालहि। शालहि सौतिनके उरमेंचलरी उठिबेगि दै ताल उतालहि। तालहि देत उठी ततकाल लगायो गोपाल के गाल गुलालहि २२ तालरी बाजत भूरि मृदङ्ग छुटैबहु रङ्ग भयो नभ लालरी। लालरी गुञ्जनकी उरमाल अँबीर भरे भरि झोरिन सालरी। सालरीहोत बिलोके बिना नँदनन्दन आजु रच्यो बृज ख्यालरी। ख्यालरी लोनेकहा बरणै मनमोहन नाचत दैकर तालरी २३ हरीहै सबै सुधि बुद्धिहरी तिल सेजपरी तन चेतनरीहै। नरीहै कहां रति रूप रतीकन सोनेके सांचे ढरी पुतरीहै। तरीहै मनोज महानदकी नृपशङ्कर शोभित लोल डरीहै। डरीहै खरी यहि पावसमें पिकशोरसुने लखे भूमि हरीहै २४ गायहौं मङ्गल चारुघनेसखि आवतही तन तापबुझायहौं। झायहौंपाय गुलाबन सों कमखाबके पाउंरेपुञ्ज बिछायहौं। छायहौं मन्दिरबादलेसों शशिनाथजू फूलनकी झरि लायहौं। लायहौं सौतिन के उरशाल जबै हँसिलालको कण्ठलगायहौं २५ धावन भेज सखीवहि देश सबैजेहिदेश पिया मनभावन। भावनभोर था लूकलगी तनबीच लगी सियरा झरसावन। सावनमें न भयो हनमन्त दोऊ मिलि

झूलि मलारहि गावन । गावनमोहिं सोहात नहीं बदरा बदराह लगेजुरिधावन२६हरजीवननेहभरीनरहैधरजीमनमोहनके गरजी। गरजी सुनिकै उनकी मुरली ततकाल हियेमें लग्यो शरजी । शरजीबन देहनऐसी परीसोमनोंधनप्राणगयेधरजी । धरजीभगई लटराय तऊ मुखसें निकसें हरिजी हरिजी २७ लैगई मोहिं कलिन्दीके कूल दुकूल देखाय ठगोरीसी कैगई । कैगई आजबिथा तनमें मनहीं मनमैन मरोरन दैगई । दैगईदाग दगाकरिकै अवधेशकहैं तनतापन तैगई । तैगई नेकन लाईकछू सुधि गोरीगुवालिन मोमन लैगई २८ धन्यवे तात अरु मातजनो जिनदेह धरी सोघड़ी धन्यहै । धन्यहै कविठाकुर धामवही जहांडोलै लली सो घड़ी धन्यहै । धन्यहै उनको जो तुम्हैंदरशें करसें परसें जो महा धन्यहै । धन्यमैं धन्यतू धन्यतेरोहितू अरु जाकी धना सोधनी धन्यहै २९ छायके प्रेमगयेजबते तबतेमैंबचीसखीकोटि उपाय कै । पायकै पावसकी ऋतुसों अबकोबचिहै उठी कोकिलगायकै। गायकै सो नँदलाल कहैं चपला चमकै चहुंओरसों आयकै । आयकै हाय मिलेनहिं मोहन मेरी अटापै घटारही छायकै ३० कोरनलैं दृग देतीहौ काजरकारी घटाउमड़ीघनघोरन । घोरनते जो चली अलि सुन्दरि बोलत ज्यों सखी बागके मोरन । मोरन कीगति नाचतहै नहिं मानतहै हटको बर जोरन । जोरन अंजन देहुसखी अँगुरी कटिजैहै कटाक्ष कि कोरन ३१ आजरी देखुघटा घन सुन्दर सावन कीन्हो सुहावन साजुरी । साजुरी भूषण भोग शृँगार सोतेरोई आजु बनोसब काजुरी । काजुरी आज घरीवह नेहकी तेरे अधीनखड़े ब्रजराजुरी । राजुरीवारो तिहूंपुरको मुरलीधर आये मयाकरि आजुरी ३२ ॥

परस्पर बार्त्ताके कबित्त सवैया ॥

नन्दयशोदा बचन उद्धवप्रति ॥

सं० । बूझतनन्द यशोमति बातकहौ कुशलात उतैदीउभाई । आवहिंगे कब प्राणनिवास उदास सखा सब लोगलुगाई । पीत

पटी सरलै लकुटीकर वा यमुनाकीतटी सुखदाई । फेरिकहौकब देखिहौं उद्धव या बनचारत धेनु कन्हाई १ लालनगे जबतेतबते बिरहानल ज्वालनते मनडाढ़े । पालतहैब्रजगायन ग्वालहुतोजब आवत सङ्कटगाढ़े । श्यामबिना सुखधाम नहीं छिनहीछिन जात महादुख बाढ़े । फेरिकहौ कब देखिहौं उद्धव माधवमाखन मांगतठाढ़े २ डोलत बाल मरालकी चालन खेलतलाल फिरैंब्रज खोरी । सोहतमाल बिशालहिये तर सोहतनीलसो पीतपिछौरी। साथ सखा शिर मोरपखा धरि हाथ नचावतहैं चकडोरी । फेरि कहौ कब देखिहौं उद्धव श्यामलला बलरामकी जोरी ३ सोवत ढांकिहुते पट पीत सों भोर भये मुख पङ्कज खोलत । देजननी मोहिं माखन भावत धावत बालन सङ्ग कलोलत । लागत कै कहि तातगरे सुनिहौंकब तोतरे बैनन बोलत । फेरिकहौ कबदेखिहौंउद्धव माधवको इनआंगन डोलत ४ एकसमय लियगोहन ग्वालन मोहनचोरिके खातदही । उद्धवजू छलसों करिकै हरिकी यशुदा दोउ बांहगही । ऊखलबांधि दियो डरताक्षण आंखिनते जल धारबही । सो तकसीर भई हमते सुत जो उतयादि करैंतो सही ५ अवधेश नरेशकी प्रीतिसही प्रियकेबिनु प्राणपयान कियो है । सँग फूटत फूटसे फूटोनहीं मम पाहनहू ते कठोर हियोहै । हमतेबरु मीनपबीणबड़ो जलतेपलएक नहीं यह जियोहै । अब उद्धव हहा बलबीर बिछोहते क्यों बिधना मोहिंधीर दियोहै ६ ॥

क० । भाषत यशोदा पायँ परौं मैं तिहारे उद्धव कहियो यह बुझाय मेरीबिनती कन्हैयासों । जादिनपधारे पगगोकुलते प्राण प्यारे गोकुल बिचारे भूखेफिरैंता समयासों । पावहिं बिपुलपीर बछरा बिपिनगेह धावहिं अधीर नेह लावहिंन गैयासों । सूखिरहे कुञ्जपुञ्ज गुञ्जतन भौंरभीर एहोबलबीर कैसेरहोजाय मैयासों ७ बाणके अधारे मेरेबारेको भुरायल्यावें कहियो यह बुझाय उद्धव प्यारे बलभैयासों । बादिनकी बात तुम्हैं भूलिगई मेरेतात खात नहीं दहीभात उरझे जुन्हैयासों । खेलत उमँग भरे सङ्ग सखा बालनके लालनक्यों रोसिरह्यो ब्रजके बसैयासों । बड़त मँझार

धार निराधार गोपीग्वाल कीजै एकबारपार कृपामाय नैयासों ८॥

उद्धवबचन नन्द यशोदाप्रति ॥

क० । रहिये आनन्दमाहिं गुनिये अँदेशनाहिं सुनिये सँदेशनन्द निज प्राणधनको । कहियो पाँयलागन बड़ेई अनुरागनसों भूलि यो कन्हैया बलभैयाको न छिनको । कोऊनावलैया लेतमैयाबिनां मोहियहां होहिं दूबरी न गैयाकीजियो यतनको । माखनकियोहै नाहिं चाखत हूं जबहीं ते तबहीं ते आयोतजि आपनेवतनको८॥

ग्वालिन बचन उद्धवप्रति ॥

क० । सावन सोहावन ह्यां लागत भयावन सों आवन अवधि अबधोचैं गजगामिनी । आयहैं कबहु बलबीर ह्यांकि नाहीं उद्धव कैसेधीर धरैं ये अधीर ब्रज कामिनी । जहांतहां योगनकी ज्योतिजगैं ज्वालजैसे यमकी जमातसी जनातिजाति यामिनी । जारेहैं पपीहरा पुकारे पीउ पीउ टेरि घेरिमारै बादर दरेरिमारै दामिनी १० छाइ शीतलाई मुरझाइ कलाकुञ्जनकी मानोमन रञ्जनकी पायके जुदाईहै । कापैकहीजाय दिनहूं की लघुताईजनै, रही छलताईलखि प्रीति सकुचाईहै । रैन अधिकाई भयोबिरह सहायतासु शीत चहुंघाई बिनु मीतभीति धाईहै । पीर सरसाई फूली सरसों सरसमाइ हिमऋतुआई ना कन्हाई सुधिपाईहै११ गोपीमन रञ्जन निरञ्जन बनेहैंजाय कुबिजा सों नेहलाय नीकी मौनतालई । वैसहीसो हायसखा आयेहौ बसीठीतुम मीठीसी बनायहमें चिट्ठी योगकीदई । उद्धव हमध्यानधरें वेईदृगखञ्जन को अञ्जन की श्यामता हमारे दृगतेगई । रैनदिन धार येअपार भई खोरिखोरि कहियो निहोरिअब कूर कालिन्दीभई १२ फांसी निरबानगुने ज्ञानसुने हांसीहोय श्यामकी उपासी सबगोकुलकी डाबरी । भाषिहैं सुनामवाको रसनासों आठौयाम राखिहैंहियेके धाम सूरतिवह सांवरी । बकिबो वृथाहै सब बातकोन मानैंहम बिरहाकी बायते बनीरहैंगी बावरी । कुबिजै सुहागदियोहमको बिराग उद्धव बाजी तांति जानीगई राहरीति रावरी १३॥

स० । साजिचली दधिबेंचनको मटुकी धरिकैशिर ऊपरभारी। पहिरिके चीरसुरङ्गसुहावनो नीलीलसै शिरसुन्दरसारी। नूपुरखूब छमाछम बाजत पायलकी धुनिलागत प्यारी। यहिबिधि साजि चली बनिता तिनआगे चली वृषभानदुलारी १४ काहेको मांगत दानलला हमसों नईरीत कहातुम ठानी। छांछको दान सुनो नहिंकान भयेतुम आजनये हरिदानी। बाप चरावत गोरू हुतो अरु आपकरो कबसे रजधानी। अबलोंकोउ नाहिं भयो ब्रजमों तुमदानी भये हमने अबजानी १५ काहेको ठाढ़े सो का करिहो अरुक्यों इतनोहो रिसात कन्हैया। जानेतुम्हारेमैं नन्दबबा अरु जानी तुम्हारी यशोमति मैया। कंसमरो नहि राज्यगयो नहीं क्योंइतनो अड़िलातहो भैया। वासों हँसो जोहँसै तुमसो हँसि आवतहै कि अनोखे हँसैया १६ कृष्णकही उनसों तबयह तुम काहेकोरारि बढ़ावतीहो। सांचीकहो तुम्हैंजोरहै काकोओ कौनकी नारि कहावतीहो। फोरिसबै डरिहौं मटुकीतुमकाहेको देहजरावतीहो। इननैननसों नहिंफौज चढ़ै तुमकाहेको नैन दिखावतीहो १७ सुनिकै मनमोहन बैनतबै यहदेत जवाब सबैब्रजबाला। जानि अकेलीहमैं मनमोहन काहेको येतेबजावत गाला। सांझ को आजचलो घरलों जब मैयासों जायकहौं सबहाला। मारि कैखूब लगोदनसों तबलौटिकै पाउँपरो नँदालाला १८ काल्हि ही कंसको होतविध्वंस कहो जिनकेरसमें रसबानी। बाप तिहारे दईउनको तुमताहीते कंसविभव भरुहानी। देतिहो दान लली वृषभान किधौं मटुकी पटकी मनभानी। जाउलला तुम्हैं छांड़िदियो नतो आजहीतेरो उतारती पानी १९ काल्हिपरे पलनापर झूलत आजुउगाहन दानलगे हो। कंसकि यादिनहीं तुमको जिनके डरलालउहाँते भगेहो। पावैसुनै तोबिसाहिकहा पुनिबन्दि परेपितु मातु सगेहो। सोअब छांड़िये मेरीगली इन बातन केतक लोग ठगे हो २०॥

क०। होरीलगी अबहीं ते इतरान लागे तुम ऐसो जरिजाय ख्यालजामें लाज जायगी। पहिहै जोरङ्ग तौ तिहारीसों बिगरि

जैहैनई जरतारी नेकसारी भरिजायगी । नैशुक निहारतहौ मूठी फेरिझारतहौ गैयनके चरैयाहौ बलैया डरि जायगी । परिहै जो गुलाल मेरी आंखिन में लाल तौ गोपाल यहि ब्रजमें जमाल परि जायगी २१ ॥

स० । नन्दबबा किसौं मारिहौं सांट उतारिकै तौगहनो सब लैहौं । मोंह कमान तुकाहे चढ़ावति नैनन डाटेते नाहिं डरैहौं । देखतही क्षणएक में भीषम ग्वालन पै दधि दूध लुटैहौं । गूजरि गाल न मारुगँवारिहौं दानलिये बिनजा न नदैहौं २२ श्यामसजो घिरसारी दहीलैचले हँसिबेचनको हरषाने । त्योंबलदेव मिली वृषभानललो सोगलीमें किये हरिवाने । ह्वैसुर ऊंचे कहो बिन दानदिये कतजात हमैं नहिं जाने । घूंघुट खोल चुकावत मोल भयेहैं अडोल हिये हितसाने २३ ॥

उपमाके कवित्त सवैया ॥

क० । भोजन ज्योंघत बिन पन्थजैसे साथीबिनहाथी बिनदल जैसे दारूबिन बानहै । रावरङ्क रानीबिन कूपजैसे पानीबिनकवि जैसे बानीबिन सुवरबिन तानहै । रसरास रीतिबिन मित्र ज्यों प्रतीत बिन व्याहकाज गीतबिन आदरबिनदानहै । रंगजैसेकेशर बिन मुखजैसे बेसरबिन प्यारीबिन रैनिज्यों सुपारी बिनपानहै१ बिद्याबिन द्विज औ बगीचा बिनआंबनको पानी बिनसावन सोहावन न जानीहै । राजाबिन राज्य काज राज्यनीति शोचेबिन पुण्यकी बसीठी कहौकैसेधौं बखानीहै । कहैंजयदेव बिनहितको हितूहै जैसे साधुबिन संगति कलङ्क की निशानीहै । पानीबिनसर जैसे दानबिन करजैसे शीलबिन नरजैसे मोती बिनपानीहै२ गुन बिन कमान जैसे गुरुबिन ज्ञान जैसे मानबिनदानजैसे जलबिन सरहै । कण्ठबिनगीत जैसे हेतु बिनप्रतीत जैसे बेश्याबिन रीति जैसे फल बिन तरहै । तारबिन यन्त्र जैसे स्याने बिनमन्त्र जैसे पुरुषबिन नारि जैसे पुत्रबिन घरहै । बाणीबिनकबि जैसे मनमें बिचारिदेखो धर्म बिनधन जैसे दानबिन करहै३ चन्द्रबिन रजनी

सरोज बिन सरवर तेजबिनतु रङ्गमतङ्ग बिनामदको। बिनसत सदन नितम्बिनी सुपति बिन बिनधन धरम नृपति बिनपदको। बिन हरिभजन जगत सोहैजन कौन नोन बिनभोजन बिटपबिना छदको। प्राणनाथ सरस सभा न सोहै कबि बिनबिद्याबिन बातन नगर बिना नदको ४ नैन जैसे सलिल चाहैं सलिल जैसे बिमल चाहैं बिमल जैसे कमल चाहैं सीता ज्यों रामको। पावस ज्यों पपीहा चाहै बहिन ज्यों भैया चाहै राधा ज्यों कन्हैया चाहै परदेशी धामको। गर जैसे मोर चाहै चन्द्रज्यों चकोर चाहै चकई ज्यों भोर चाहै कामिनी ज्यों कामको। सुख जैसे तनचाहै शूर जैसे रणचाहै वैसाही मेरा मनचाहै प्यारी तेरेनामको ५ हीराकी झलक जैसे जुगुनूकी दमक जैसे दामिनी की चमक जैसे मोती झलकानहै। सुधाको सीर जैसे नावकको तीर जैसे जादूको बीर जैसे करत धयानहै। शोभाको मूल जैसे फुलझरीको फूल जैसे तेजक त्रिशूल जैसे राखो धरी सानहै। पुहुप बिकसान जैसे ज्योति शशिभानु जैसे कञ्चनकी खान जैसे तेरी मुसक्यानहै ६ अस्त्रबिन बीर भोंड़ो गांसी बिन तीर भोंड़ो स्वाद बिनक्षीर भोंड़ो नीर भोंड़ो झीलको। श्रीपति सुजान कहैं राहबाट रेत भोंड़ो भूपति अचेत भोंड़ो खेत भोंड़ो लीलको। पूरबकोपौन भोंड़ो ऊंट चढ़िगौन भोंड़ो बिद्याधर मौनभोंड़ो भौन भोंड़ोभीलको। सांझ भोर चैन भोंड़ो श्वाननको चैन भोंड़ो शील बिन नैनअरु बदन बखीलको ७ शीलवान नरनीको बालकको धरनीको दानयुत करनीको उजियारो चन्दको। बिद्याको बिवाद नीको रामगुण नादनीको कोमल मधुर स्वादनीको होतकन्दको। गऊको नवनीत नीको जेठमास शीतनीको श्री पतिजू मीत नीको बिन छलकन्दको। कारनीको झटपट श्याम रंग नीकी लट बटनीको बन्शीबट नटनीको नन्दको ८ फूल बिनबाग जैसे बाणीबिन राग जैसे पानीबिन तड़ाग अरु रूपबिन अङ्गहै। धनबिन साज जैसे शोचेबिन काज जैसे राजा बिनराज्य जैसे नदीबिन त्रंगहै। एक अंगी प्रीतिजैसे बेश्याबिन रीति जैसे प्रेम बिनमीत जैसे शोभा

बिनरंगहै। प्यारी बिनरैन जैसे हाफ़िज बिचारिदेखो शील बिन नैन अरु साधु बिन संगहै ६ नरनीको शील वान घर नीको धनवान करनीको युतदान कहत जहानहै। रूपवान नारिनीकी द्वारे चार गारि नीकी शीतल बयारि नीकी तेज जब भानहै। बिष बुझो तीर भोंड़ो बैद बिन पीरभोंड़ो ताल बिन नीर और मौनी बिद्यावानहै। रागी भोंड़ो तानबिन तलवार सान बिन हाफ़िज अधिक भोंड़ो मित्रको पयानहै १०माथे पै मुकुट देखि चन्द्रिका चटकदेखि छबिकीलटक देखि रूपरस पीजिये। लोचन बिशाल देखि गरेगुञ्जमाल देखि अधरको लालदेखि चित्तचोप कीजिये। कुण्डल हलनदेखि अलकैं खिलन देखि पलकैं चलनदेखि सर बश दीजिये। पीताम्बर छोरि देखि मुरली की घोरदेखि सांवरे कीओर देखि देखिबोई कीजिये ११॥

समस्याके कबित्त सवैया॥

स०। नई अबला रसभेद न जानत सेजगई जियमाहिं डरी। रसबात कही तबचौंकि चली त्योंही धायके कन्थने बांहधरी। उनदोउनके झक झोरनमें कटि नाभिते अम्बर टूटि परी। कर दीपककामिनिझांपिलियोत्यहिकारण सुन्दरि हाथजरी १ अंगमें सारसुगंधलगावतबासवही चहुंदेशको जहंको। करिआलो भ्रँमार अटाकोचली मुखदेखत लालनको लहको। कङ्कन एकगिरो कर सों वह सीढ़िनसोढ़ो फिरैबहको। कविगङ्ग कहैं यक शठदसुनो ठननन् ठननन् ठननन् ठहको २ रातिसमय रसकेलि कियोजब भोरभयो उठि मज्जनधाई। नीरकेतीरमें देहडुबो यमुनाजलसों जैसे चन्द्रकीछाई। लै बुड़की जलसोंनिकसी उलझीअलकैंमुख ऊपरआई। द्वैकर केश सवांरिलियो निकसो रविफोरि पहारके ताईं ३ एकसमय जलआननको घरसेनिकसीं अबला बृजरानी। जाति सँकोचमें डोलभरन जलखैंचतथी अँखिया मसकानी। देखतही छतियांडधरी कविसन्तकहैं मनसा ललचानी। हाथबिना पछितातरह्यो तेहिकारण कूपमहालतपानी ४ एसनरेश रहे अव-

धेनु सुरेशहुकीजिन कीन्हिसहाई। औरमहत्व कहालौं कहौंकरुणानिधिसे सुतगोद बिलाई। तेमतिमन्द छलीतियिा रघुनन्दन को बनपेलि पठाई। रामसोंबेटा बिछोहतहो हियफाटि गयो पै दरार न आई ५ उर गोमितहै बनमाल पिताम्बरबांसुरी बैन सुनावतहै। इकछैल सखी मुसक्यात इते नित आनि अकेलिहि आवतहै। मनमेरो कियोबश पूर्ममो आपने गोचबही जियछावतहै। दिनरातनहीं कल देखोंबिना त्यहिकारणभौननभावतहै ६ एकसमय वृषभानसुता उठिप्रातगई सरितानके खोरन। अञ्जन धोय अंगोछिकेदेह लगि बाहर बैठिके बार निचोरन। ब्रह्मभनैं त्यहिकी उपमा जलके कणिकाबहैं केशकेछोरन। मानहु इन्द्रको चूसतनाग अमीरस चंचल्यो पूंछकिओरन ७॥

क०। चतुरनको यहीकाम चतुराईमें कसरनाहिं करतही शृंगार सुधि नांहिकाममें छई। फिरतहीआतीतातो योवनकीमाती और बालमनादान रातियोंहीके बितैदई। दोषनाहिं बाबुल महतारी ओर नाऊको कस्मनकीछींट मेरी आनिकै उदय भई। कजरौटी करपट कटारी बिहगअखाय एक आंख आंजी एक आंजे बिन रहगई ८॥

दो०। मेरी भव बाधाहरो राधा नागरि सोय।
जातनकीझाईं परै श्यामहरितद्युतिहोय॥

स०। जाकीप्रभाअवलोकतहीतिहुंलोककी सुन्दरतागहिवारी। कृष्णकहैं सरसीरुह नैनकानाम महामुद मङ्गलकारी। जातनकी झलकै झलकैं हरि ताद्युति श्यामकी होत निहारी। श्रीवृषभान कुमारि कृपाकरि राधा हरो भवबाधा हमारी ९॥

दो०। शीशमुकुट कटिकाछनी करमुरली उरमाल।
यहबानिक मोंमनबसो सदा बिहारीलाल॥

स०। छबिसों कविशीश किरीटबन्यो रुचिआलहिये बनमाल लसै। करकंजहि मंजरली मुरली कछनीकटि चारु प्रभाबरसै। कविकृष्णकहैं लखिसुन्दरि मूरति यों अभिलाष हियेसरसै। वह नन्दकिशोर बिहारीसदा यह बानिक मों हियमांझबसै १०॥

दो० । मोरमुकुटकी चन्द्रिकनि यौंराजत नँदनन्द ।
मनुशशिशेषरकीअकस कियशेषरशतचन्द॥

स० । आजुलख्यो ब्रजराज कुमार सुदेशश्रृँगार बनेसिगरे हैं । रूपकि रीझ कहीनपरै अवलोकि बिलोचन नीरभरेहैं । कृष्णकहैं शिरसोहतमोर किरीटखंदा छबिपुञ्ज धरेहैं । मनो अकशे शशि शेषरसों हरिशेषरचन्द्र अनेकरेहैं ११ ॥

दो० । मकराकृत गोपालके कुण्डल झलकतकान ।
धरयोमनोंहियगढ़तमरज्योढ़ीलसतनिशान॥

स० । मैंनिरख्यों ब्रजराजलला द्युतिपुञ्जहिये हित साजिरहे हैं । कृष्णकहैं दृगदीरघदेखि प्रभातके पङ्कज लाज रहेहैं । मंजुल काननमें मकराकृत कुण्डलयो छबि छाजि रहेहैं । मानों मनोन धरयोहियमें अरु द्वारनिशान बिराजिरहेहैं १२ ॥

दो० । नितप्रति एकतही रहत बैश बरण मनएक ।
कहियतयुगुलकिशोरलखिलोचनयुगुलअनेक॥

स० । श्रीवृषभान सुता नँदलाल बिराजत हैं छबि पुञ्जछये । कवि कृष्णकहैं मनशील बहिक्रम चातुरता यकरङ्गरये । सुखदेखि सिहातलबै सजनी विधिसों बिनवैं अभिलाष नये । यह रूप बिलोकिबेको तनमो प्रतिरोमन लोचनक्यों न भये १३ जानतहैं गतिचोरकि चोर औसाह कि साह छलीकीछली । ठगकीठगकी मख कामखकी अरु जानत छैल छलीकी छली । कचलम्पटकी कचलम्पटगति मतिराम न जानै कहांधौं चली । क्यहुं फेरिदियो नथकोमुक्ता तिहिकारण फिरत गुलाबकली १४ काजलसी निशि सज्जलसे घन तज्जलमें चली सङ्ग न साथी । कुञ्ज अँध्यारी सिधारी हुसेन बिहारी पैजातथी सुद्धिमें नाथी । किञ्चित दञ्चत सर्पलग्यो पगसर्प घसीटत एकपगाथी । जोरजँजीर जरो जकरो मनोछूटि चलो मनमत्तको हाथी १५ ॥

फाग व होली सययके कवित्त सवैया ॥

क० । उतते कन्हाई लरिकाईके सखन लीन्हे करि चतुराई

केलि होरीकी मचाईहै। इत वृषभानकी कुमारी सुकमारी प्यारी आलीगण आलीमें रसालीसी सोहाईहै। लालन गुलालनकी लालन पै डारैं मूठि चलैंपिचकारीसुखकारी दुहुंधाईहै। केसररँग साने सुरङ्ग नेह सरसानेडारैं मानो बरषाने बरषाने झरिलाईहै १ होरीहोरी करत अबीर भरिझोरीलीन्हे खोरी २ फिरैंग्वाल बाल समुदाईहै। तामें नन्दलाललाल चीराजरी धरेगरे भावतबिशाल बनमालकी सोहाईहै। कीरति किशोरी सङ्गगोरी यूथ २ मिलि भरी अनुरागफागश्यामसोमचाईहै। केसररँगसाने सुरंग नेह सरसाने डारैं मानो बरषाने बरषाने झरिलाईहै २ आजुनन्दजूके आनन्दभरे खेलैंफाग कोटिचन्द्रते दुचन्द्र भालद्युति लालकी। आभरणहीर नखैं मानिक ललाईआई तैसीछबि छाईहै बिशाल बनमालकी। अबिर उड़ावैं मूठि २ सो चलावैं सखी देखिये लुनाई नटनागर गोपालकी। सजै पीटपट पर मुरली लकुटपर मोरके मुकुटपर गरद गुलालकी ३ कीरति किशोरी संग श्यामैं लखि भई भोरी होरी देखिआई आजप्यारे बलबीरकी। सारी जरतारीकी किनारीमें गुलालराजै तैसीछबि छाजै उत काश्मीर चीरकी। हरैं २ आवैं मन्द २ सुरगावैं दोऊमिलि मुसुकावैं द्युति धावैंरी शरीरकी। नैनकोर ओरपर बरुनीकी छोरपर भौंहन मरोर पर ओपहै अबीरकी ४॥

स०। नन्दकेमन्दिर जाउसबै दुलहीघर राखिमिलै फगुआके। होरी बढ़ावनको घरकेगये आयेहैं भोरभये रतियाके। भीतरभौन के लायधरी ये कँवार उठाय न जांय यहांके। सासुके ये सुनिबैन बिशालसो फूलिगये सब अंग तियाके ५ उद्दम एसोमचो ब्रज मों सबरंग तरंग उमंगन सीचैं। दै पिचकारिन कुञ्जन जातिन ह्वैछबि छाजत केसरीकीचैं। त्योंपदमाकर हौंहुंगई हुती पीछे गोपाल गुलाल उलीचैं। यकसंगहि जोफिरि भैंरपटी तौ वेभये ऊपर मैंभई नीचै ६ नाहक दोदिन मांहरहो अब फागुनते सब रंग मचैहैं। गोपनमें मिलिकै बलदेव इतै नँदनन्दनहू चलिऐहैं। त्यागिकिये गृहतौ न बनी बलबीर अबीर जरूर लगैहैं। नाकहि

बो द्वैपाख कछू फिरि आपनिखोर सबैजग रैहैं ७ फागकी रैन अँधेरी गलीनमें मेलभयो सखिसांवरे जीको । हौंधरिलीन अचानकदौरि लगावन काज गुलालको टीको । वाने गुलाल लगायो अली जबलीन्हों मुठीमें अबीर सो नीको । बस्त्रहुछांड़ि कन्हैया गयो न भयोसखिहाय मनोरथजीको ८ खेलनफाग सबैनिकसीं अरुरंग गुलाल लियेभरि झोरी । मूठी चलावत ग्वालिनपै अरु श्यामलके मुखआवत रोरी । जबहीं हँसि हेरिगह्यो अचरा परसादसीप्रीति गुलालसी जोरी । मोसेदुरैहो कहा सजनी निहुरे२ कहुं ऊंटकी चोरी ९ खेलिये फाग निशङ्क ह्वैआज मयङ्क मुखी बड़भाग हमारो । लेहु गुलाल दोऊकरमें पिचकारिन रंग हिये महँमारो । भावैतुम्हैं सोकरो मोहिं लालन पाउंपरौं जनि घूंघुट टारो । बीरकीसोंहमदेखिहैं कैसेअबीरतोआंखैं बचायकैडारो १० फागकेभीर अभीरनत्यों गहिगोबिन्द लैगईभीतरगोरी । भायकरी मनकीपदमाकर ऊपरनाय अबीरकीझोरी । छीनिपिताम्बर कम्मर तेसो बिदादई मीं जि कपोलनरोरी । नैननचाय कहीमुसक्याय ललाफिरि आइयो खेलनहोरी ११ ॥

फ़ार्सी भाषा संयुक्तके कवित्त सवैया ॥

स० । सांझसमय घरसे निकसी सब सखियन साथ वहसांवरीमूरत । रम्जो नाजनमूद सनमूबेताबशुदम् अफ़्जू द कदूरत। मुसक्यायकै मोतन देखिदियो तिरछी अँखियां चितवनकी मरोरत । होशम् रफ्त न मुन्दबदस्त शुदह दिल्मस्त ज़िदीदनेसूरत १ कौनघड़ी करिहै विधना जबरोये आं दिलदार बुबीनम् । आनँद होय तबैसजनी दरसोहबत यारे निगार नशीनम् । प्राणपियारी मिलै जबहीं दरबाग़े वस्ल गुलैश बिचीनम् । सूरत मित्रकी चित्रबसी कविगङ्ग कहैं चूंनक्ष नगीनम् २ चेहरे नूरबयान करूं महताब न लावत ताबेशफ़ाहै । अबू खूबबनी, महेनौ वगरूर जवानीका जौरो जफ़ाहै । क़द्की हद्दकहां लौ कहौं कबिराज कहैं सब देखिखफ़ाहै । हुरनकी यारबहार यही बसदीदने यारे

दिदार नफ़ाहै ३ तानसुनाय बजायके बांसुरीदिलकी बिथा इजा हार नुमायम्। चाहै अत्यन्त हृदय मिलिबो क्यहि भांति नजा। रयारे नुमायम्। लोग घवाई बसैं यहिगाँउ सोहाफ़िज मन न क़रार नुमायम्। चन्द्रमुखी मुखघूंघुटखोल किताअज़दूर दिदार नुमायम् ४ जा दिनते यमुना तटतोहिं बजावत बांसुरी नेक निहारो। होयम् रफ्त नमुन्द बदस्त उरध्यानरहै दिनरैन तिहा रो। हाफ़िज़ फ़िक्र कुदाम नुमायम् कोइ उपाय चलै न हमारो। कौनसी ह्वैहै सखीरी घड़ी की जो भरि अङ्क मिलैगो प्यारो५ कासों कहौं यहविथा सजनी चूं बुर्द दिलम् अजजौरो सितम्। दर्श सुधारस प्याइये जूजे जुदाईये तो मन् जां बलबम्। ताप बुझाओ हियेकी मेरे तुम गाह बगाह नमूदः करम्। चैननहीं दिनरैन परै अबहाफ़िज हालबेहाल जेगम् ६ बन्शी बजीबलबे यमुना चलोचलिये सखी सबमिल्के बहम्। तानबसी चूं नक़्शे नगीं अबचैन नहीं क्षणपल बदिलम्। शर्मो हयाकुलकी तजि के करलो दर्शनचलि निज़देसनम्। हाफ़िज़हाथसों हाथमिलाय के गीतकरैं हिर्दे हमतुम् ७ क्योंइतनों बतरावत हौ मनशर्मे हयारावसे मेदानम्। ऐसो उपायकरो मिलिके कि क़रार बिगी रद इ दिले ज़ारम्। हाफ़िज़ यामें न लाभ कछू अज़्गुतो शुनै मतलब दारम्। का समुझावत को समुझै दिले मारा बुबुर्द कि आंमहे पारम् ८ कासोंकही मनकी यहबिथा अपनो तनआप जरानो परो। खेशो बुज़र्ग अक्रारिब राहमें देखि अत्यन्त लजाने परो। तेरी मुहब्बतो उल्फ़तमें हमैं हाफ़िज़ हायबिकाने परो। दिलरफ्त जे दस्त न मुन्द बदस्त अफ्सोस महा पछिताने परो ९ बदनाम शुदम् दरक़ुबो जवार अबकौनसी बातको शोचरहाहै। हाफ़िज़खेशो बुज़गों अज़ीज़ अब मानों बुरोहम सोऊ सहाहै। होनी हुती सोतो होयगई इन बातनमों अबलाभकहाहै। मत-लबेमन न बर आमद हैफ़यह भागकी लागहमारे महाहै १० हरगिज़लाग किसीकिनहीं सब हाफ़िज़है तक़सीर हमारी। वक़्त बिदान किसीने कहा हमसाथ चलैं किरहैं बनवारी। सो कहते

नवनी कछुहाय करैं अबका-ब्रजनारि गँवारी। देखिचले सोसबै कहियो अबऊधवजीतुम्हरे बलिहारी११ जोवतराहथकी अँखियां अरु आये नहीं ऊधव गिरधारी। ज़ाहिरमें तो ख़ताहमसें नहीं कोईहुई गाहे जुज्यारी। हाफिज़ जात कही नबिथा कि भईहै कहागति हायहमारी। सो मरिहैं बिषखाय सबै ऐहैं जोनहीं यहां कुञ्जबिहारी १२॥

चौथाभाग॥

गूढ़ार्थ कवित्त व सवैया॥

स०। क्योंलग्योचन्द बिधुन्तुद आयके क्योंअरबिन्दन भृङ्ग छिपायो। क्यों भयेश्वेत अश्वेतमराल बियोगिनी क्योंघिसिचन्दन लायो। क्योंमृगराज मृगीनकियोबश क्यों गजराजगजी गिरनायो। सांचोकहौ पियभेदलहौं रजनी पतिकेगृह क्योंरबिआयो १ बाय बछानकोगाय ज्यवांवत बाघिनपै सुरभीसुत चोखैं। न्योरनको सहरावतसांप अहारन देव उन्हैं प्रतिपोखैं। व्याधिकथानहिं मैंनसुनी अपलोक बसेजहँकुण्डन वोखैं। नैनन रागमयी पिकके मरु बिग्रहबैन शरीरके धोखैं २ गङ्गनहीं मुक्तानभरीमांगहै चन्द्र नहीं यह उद्यति भालहै। नीलनहीं मखतूलकी पुञ्जहै शेषनहीं शिरबेनी बिशालहै। बिभूतिनहीं मलयागिरि शोभित बिजया है नहीं हरिबिरह बेहालहै। येरेमनोज सँभारिकेमारियो ईषनहीं यह कोमल बालहै ३ सरिता पतिको तनयापति बोलतसातौ पांच कछूनहिंकोजै। पङ्कजपीतमको रिपुबीतत माननीशैलसुता सुतकीजै। हेहर हार अहारसुत बन्धन तारनकेर समावतजीजै। तारनईश बिमानथके नँदरामकहैं उठिबाम चलीजै ४ चन्द्रनहीं बिष कन्दहैकेशव राहुयही गुण लीलि न लीन्हो। कुम्भज पावन जानि अपावन भोरिपियो पचिजान न दीन्हो। यासोंसुधाधर शेष बिषाधर नामधरयो बिधिहै बुधिहीन्हो। शूर सुभाय कहा कहिये ज्यहि पापीलै आपबराबर कीन्हो ५ जो त्रय मूरति के सुत को सुत ता सुतको सुतलेहु बिचारी। तासुनेवासके नामको जो सुत

तासुत वाहनको भवकारी। ताअरिपुरके द्वारबसै यक भूसुर तेज प्रतापहै भारी। तासुअहार बराबरदुःख भयो उद्धव मोहिं बिना गिरिधारी ६ जीवहैं द्वै रसनामुख एकहै तीनहैंनैनते रूपविशेषैं। तीनितिया बिबिकै रतिएकहै ताकेसपूतहैं शेष विशेषैं। होयनकूटकहैं कबिभञ्जन चातुरहोयहियेमहँलेखैं। बांझकोपूतहै आनिकि आंखि अमावसके दिन पूर्णिमादेखैं ७॥

क०। प्रथम पचीसहूं केबैरको न्यवारतिहौं छठयेअठारहऔर पन्द्रह चढ़ायके। चौबिस बत्तीस सत्ताइस सतावति हैं तातेछित सुतसो उठत अकुलायकै। भनैरामलाल प्यारी प्यारीको सँदेशो लिखि प्यारे मखबैनकहोपथिकबुझायकै। जीवतजो चाहैंकान्ह तुरत मों मिलैंआनि नातोनाक जातीहौं भुवनऋतु खायकै ८ अजबपखेरू एक हाड़है न चाम जाके आप उड़िजाय परपङ्खन देखातहैं। ताकेबार बीनिबीनि वसन बनावैंलोग ओढ़ित न मेलैं दिव्य रोजही देखातहैं। जपतप योगवारे षटरस भोगवारे लाल चन्द्र ओढ़ि२ हियेहरषातहैं। सुरमुनि ईशनको पण्डितकवीशन को मतसबकोहै यहै वाकोमास खातहैं ९॥

स०। मङ्गलहोतकहूं शिवराज कहोक्यहिकेदुखहोत विशेखो। कोनसभामहँ बैठि न सोहतकोनहिंजानतचित्तपरेखो। कौननिशा शशिकीन उदोतभो का लखिकै बिरहीदुखपेखो। बांझकोपूत बिना अँखियान कहूं निशिमें शशि पूरणदेखो १० सिंहके सिंहके अंशमें जो गुरु होहितो भूल्यहु व्याहनकीजै। मेखकेसूरज होहिं तोकीजिये भाषतपण्डित सोसुनिलीजै। गोदावरी असुरङ्गकेबीच में मेखहूके रविमैन कहीजै। पण्डितएक कहैगुण मण्डित जीमें बिचारि जनौ मतिदीजै ११ चन्द्रतेश्याम कलङ्कते उज्वलहैनिशि चन्द्र पै चन्द्रन होई। बर्षिसुधा सबको सुखदेत रहैजो महेशके मस्तकसोई। हैबिपरीत नहीं बिपरीत सो वेद पुराण कहै सब कोई। मासकेमध्यमें हेम गोपाल बन्दो नरताहि कहैकविजोई १२ कञ्जमरै रविकेदरसे कबहूं नमरै वह चन्द्रदेखाये। मीनमरैजल केपरसे कबहूं न मरैवहपावकपाये। नारिमरै पियकेदरशे कबहूं

न मरैं परदेश सुनावे । सन्तजो पापकरैं तो तरैं कबहूं न तरैं हरिके गुणगावे १३ ॥

दोअर्थी कवित्त व सवैया ॥

जेवर ॥

क० । लाईबीर तोहित बिशेष बरबांक जौन द्विज बलदेव लैले हरष हमेलैहैं । छल्ले मनभावै तो लखावो सबसोनसाज शोभित समाज मोपै कानफूल झेलैहैं । बेसरि छनी यों पायजेब सुख देती अति जानत बनै बिशदयोगनकी रेलैहैं । लटकन लेरी फिरवाकी पहुंचीन कसबाला बेसवारी जानिमुंदरी पछेलैहैं १ ॥

भोजन ॥

क० । केती बीरहागै औटिलखिये कढ़ी ललित करत बराबरी सो अधि छबि धोईमैं । द्विज बलदेव तौ बिलोक्यो कहिबे की कहाभांति भावसानी जगजानी सो कहोईमैं । पूरी तोरईतैं कछु अक्करहत ताहि जोवै काज राखेो करिनीकीभांति लोईमैं । चलिये चतुर लाल परस समय बिचारि जोई जोईचाहो सोई सोई हैरसोईमैं २ ॥

पक्षी ॥

क० । कस नईकीरति बिशेषद्विज बलदव श्यामा चटकीली कुहीका बिधिजकतहै । मैना कर बोलै है कबूतरी अटासों बनि गोधीमें न जानी कस सिकरै सकतहै । लालतो चकोरै मोरमानत कहोना कछु कैसी करबानक तिलोरी तें तकत है । कालीमति सरस पपीहा करिजात बेसराकी बाजआवै तूतियाका बकतहै ३ ततीहै अमोल और कोकिला सोहायबैन लखत तबीरकरि श्यामहिं सिखाईमैं । होतही तयारआई मन्दिर तिहारे आजमैना फिरिजानौं अतिहितसों पठाईमैं । आछेपर पक्षीहै अनूप रूप पेखियत भनत अनन्द शोभा दृगन बसाईमैं । देखिये देवानी गति लालकी नजानी अस बखत भुलानीतौचकोरहै चेताईमैं ४ मांगमैं तिलोरी तू बटेर मुनिआ तौ लाल तीतरके जायबेको

अति अकुलातहै। मोर कहामान तैं कबूतरको दीन्हो बालक्षेम करी राम तूतिया भाग सरसातहै। कहैं नन्दराम मैनाबकत पतैनारहै अबलौ कुहीहै बाज आइना लखातहै। आपही चकोर है सो वाको हालसारसहै सावनसों गीधहै महोका दरसातहै ५॥

ग्राम॥

क०। कानपुर कौनरति मोरगति छोड़ि पाली मालवाकी बर उरबासी निरधारो है। काबिल दिलीके गुण आगरे बिचारिदेखो सूरतिबिलोको मैनपुरी गुनभारोहै। सौरकहि ध्वाई शक्ति पुरमें न कीजेधाम रूप यशवन्त सौम धन्य २ धारोहै। सामके तरनिकरो पटना उदयपुर जो बिजयपुर कीन्हों भाग नगर हमारोहै ६ तोही-सों बनारस बिहारकरा जौनपुर तेरोई सोहागपुर पुरवा बखा-निये। अवधि तेहारी करि बिजयपुर आवतहै तेरो परनामै जैति-पुर अनुमानिये। आवै बिजनौर बातें भावैतो दिलीकेबीच आगरे गुनिनधन सिंह जवाजानिये। काश्मीर डोलैवर उरपट नाहीं खोलै मानिये सलोनो मति मैनपुर ठानिये ७॥

वस्त्र॥

क०। नीकी जोन लागै तौ लखाऊं अतलस आज तूल तजि भौन मारकीन इम गायोहै। खासे चारखाने चमलेट डोरिया सों लाय बलदेव बिशद बिचार ठहरायोहै। गाढ़ाहेत राखो तौ गवनहु दरेसहोत चिकनको टारि सुख जारी मनभायोहै। नैन सुखलीजै तनज़ेब लखि सारी लाल बिशद किनारी गुलबदन सोहायोहै ८॥

वृक्ष॥

क०। पीउ पर रिझायबे को सहज न जानै बाल अमली न जानैतैं अनारन रसाल है। बेल मतिकीजे थिर साबित तिहारे चूक बिसमय न पैहै अवररतसे बेहालहै। कहैं नन्दराम तूतौसन की रहतवासों मोसन बकैना नीबी कसत न हालहै। रूस रूस तूनकै साखू व कमरख बेर दूबतिन कासनीप चन्दन तमालहै ९॥

पांचवां भाग फुटकर काव्य ॥

कवित्त ॥

इस कवित्तमें २४ टुकड़ेहैं जहांसे चाहो छः टुकड़ेका एकपद बनाकर पढ़ो इसी तरह चारों पद कहलो तो २४ कवित्त फिर होवैंगे ॥

मोरपखा	बनमाल	बिराजत	बेनबजे
गुणभेव	सुपरसन	संगसखा	नन्दलाल
यभ्राजत	मोदसजे	यगसेव	तुक्करसन
दद्विचखा	करिख्याल	ह्रिलाजत	पावतजे
अतितेव	तुहरसन	ध्यानरखा	छाबजाल
ह्रिछाजत	स्वान्तरजे	बलदेव	सुदरशन

इस कवित्तमें भी एक बिश्रामसे दूसरे बिश्राम तक पढ़नेमें चारपदों को सदृश मिलानेसे एकछन्द होताहै इसीतरह हरएक बिश्रामको ख्याल करनेसे ३६० छन्द होवेंगे ॥

साजतहैं	सिधिपाय	इहांसवि	मोदरता	शुचिवेश	प्रणवर
आजतहैं	रिधिराय	छजेछवि	हेतरता	बलवेश	सुधाधर
छाजतहैं	बरभाय	मनैकवि	सुष्ठुमता	सुखदेश	गुणाकर
राजतहैं	यशछाय	यथारवि	रुद्रप्रता	पनरेश	कृपाधर

श्रेष्ठद्विज ॥

क० । सुन्दर सन्तोष दूरि करतहैं दोषसब नेकहू न रोष वेद शास्त्र पारगामीहैं । सुगम बनाते बलदेवयश छाते यग बोले पर आते हरिध्याते नितनामीहैं । परम प्रतापमान मण्डित महीपन में मंजुल विदित बैन औन इमिरामीहैं । रचित बिधान गति दायाके निधान अति ऐसे द्विजराजनको धन्यते न मामी हैं ३ ॥

दुष्टद्विज ॥

कवित्त। दानहठ ठानै दोषऔरके बखानै रीतिभांति नहीं जानै औन मानैं खांड़ पूरीसे। विद्याको न लेश त्यों न बेष रूपरेख कछू हुज्जत हमेश बाजआवे नहीं कूवीसे। खैंचिकै शिर आंखै बिषखैहैं इमिभाषै चटटेढ़ी करिआंखैं चीरिडारै तन छूरीसे। कलियुग काजनको साजैं तजि लाजनको ऐसे द्विजराजनको दण्डवत दूरीसे ४ ॥

कूर क्षत्री ॥

कवित्त। मावैंगीत गैतलसे भेद दरशावैं कभीकर चिटकावैं मठकावैं मुखफेरते। विप्रको न मानै पांयलागिबोनजानैं कहाशास्त्र को प्रमानै सुनि तादिशि न हेरते। लम्पट लवारीमें लखातसब लायकहैं लोहेकी झनकसुनि लुकिरहैं दूरीते। ऐसे क्षुद्रक्षत्री कूर काहे करतारकिये खायेलेत मानो वह दूरहूसे टेरते ५ ॥

दुष्ट रोटीकरा ॥

सवैया। भातमें लौन पहीतीमें पाथर डारिकरैं सब छूतिही छूकर। मांग्यहुसेपरसै न कछू खलमैले महामलको मानोंशूकर। व्यञ्जन याबिधि केहैं रचे मखसोह किये मन आवत थूकर। ये कबहूं नहिंडूबरो होत रसोईके बिप्र कसाईके कूकर ६ ॥

सिद्धिश्री सकल गुणगणके निधान शुभज्ञानघन बुद्धिमान जाहिर जहानहैं। विद्या के अपार जग पावत न पार कोई सरिता समूह सहसिन्धुके समानहैं। शीलवान धर्मवान दृढ़व्रतनेमवान जगमत इसलामसाहिब सुजानहैं। बन्नापुर शालाकरिपाठकसे रघुनाथ नाम श्री मोहम्मदहफ़ीजुल्लाखानहैं ७ ॥

दोहा ॥

प्यारी तुम्हरी सुधि हमैं क्षणहूं बिसरत नाहिं ॥ दरशन बिन जियजातहै हाफ़िज़ क्राहि कराहि १ मगजोवत नैना थके छुटीमि लनकीआश ॥ मुर्च्छितहै धरणीगिरें कोऊश्वास नपास २ प्यारी

तुम्हरीबिरहमें नदीभये निजनैन ॥ तन मन कटि२ योंगिरत ज्यों कगार दिनरैन ३ निशिदिन मनव्याकुलरहै बिरहदियो तनफूक॥ तुमबिछुरन सुधि जबकरौं उठै करेजेहूक ४ हाफ़िज़ प्यारे लाल बिन पड़ैनहीं क्षणचैन ॥ खानपान भावैनहीं सुधि बिसरत अब हैन ५ जोदीजे सो पाइये हाफ़िज़कहैं यहलोग ॥ प्राणदान जब हमदियो मिलो बिरहको रोग ६ हाफ़िज़ तुम्हरे दरशबिन तलफ़तहौं दिनरैन ॥ कबलौं प्यारीआयहौ पन्थ निहारत नैन ७ तुम्हरी सुधि बिसरैनहीं क्षण पल प्यारेलाल ॥ व्याकुल जल बिन मीनज्यों हाफ़िज़है अबहाल ८ प्यारे तेरे चरण के कहौं कहांलौं भेद ॥ क्षणबिछुरत जाके परैं झांबा छातीछेद ९ चमत्कार तव रूपकी मोपरकही न जाय ॥ हाफ़िज़ दरशन करतहै भानु सबेरे आय १० करलागैं अहटातनै देखत भरमत नैन ॥ उभरेसे कुच चित्रकी करी चित्तरी मैन ११ निर्मल मूरति पीउकी यों घटरही समाय ॥ ज्यों मेंहदीके पातमें लालीलखी न जाय १२ ऐसपने त्वहिं बलिगई क्षण मों बार पचास ॥ सहस कोस पीतम बसैं आनि सोलावै पास १३ शशि चकोर सूरज कमल चातक घनकी आश ॥ यों मनमेरो रहतहै सदा तिहारेपास १४ अञ्जनदेत सलाकसों उपमा कही न जाय ॥ खञ्जनमों कांपोलगो उड़नकाज अकुलाय १५ मुरीधार तलवारकी काटकरत ककुनाहि ॥ तेरे दृग ज्यों२ मुरैं त्यों२ काट कराहिं १६ प्यारी तुम्हरे दरश को अधर रहो जिउआय ॥ अबक्या आज्ञा होतहै घटमों रहै कि जाय १७ हाफ़िज़ अति अकुलातहै ताकत तुम्हरी आश ॥ बेगि आय सुधि लेउअब बिरहाकरत निराश १८ ॥

अथपत्र बिषय ॥

करकांपत पतियांलिखत जलभरि आवतनैन ॥ कोरो काग़ज़ हाथदै मुखही कहियोबैन १९ काग़ज़भीजत नैनजल करकांपत मसिलेत ॥ पापीबिरहा मनबसै बिथा लिखन नहिंदेत २० लिखन पढ़नकीहैनहीं कहीसुनी नहिंजात ॥ अपने जियतेजानियो

मेरेमनकीबात २१ यहिगुण पातीनालिखों धरेरहौं जिय मौन ॥ तुमप्यारी मनमेंबसो पाती बांचेकौन २२ पाती वाकोभेजिये जो होवै परदेश ॥ जोनिशिदिन मनहीं बसै ताको कौनसँदेश २३ का बातथोड़ो हितघनो हमपर लिखोन जाय ॥ सिन्धुमध्य जलबहुत है गागर कैसे समाय २४ प्यारे पाती ना लिखी गये बहुत दिन बीति ॥ अबदुनियांकी रीतिहै मुखदेखेकी प्रीति २५ पातीबांचत के समय सभामध्य जो होय ॥ यथा उचित सबसन कह्यो जोज्य हिलायक होय २६ पाती आधामिलनहै जोपहुंचैनिजपास ॥ तन मनको हर्षितकरै पड़ै मिलनकी आस २७ औषधि नैननसों लखे बिरहरोग नहिं जाय ॥ पातीभेजेकाभयो जबलों मिलोनआय २८ कर कमलन पातीलिखी प्यारी चतुर सुजान ॥ एकएक अक्षरन पै वारोंतनमनप्रान २९ जबसुधिआवे आपकी बिरहआग सर साय ॥ हाफ़िज़ व्याकुल ह्वैगिरो पातीलिखी न जाय ३० सबै हँसत कर तारिदै नागरि ताके नाउँ ॥ गयो गरब गुणरूपकोबसे गवाँरे गाउँ ३१ भतलगे मदिरा पिये सब काहू सुधिहोय ॥ प्रेम सुधारस जिन पियो तिननरहै सुधिकोय ३२ अद्भुत पंड़ाप्रेम को न्याय कहत सबकोय। नैननसों नैनामिलैं घाव करेजे होय ३३ प्रीतिन टूटै अनमिले उत्तम मनकी लाग ॥ सौयुग पानीमें रहै मिटैन चकमकआग ३४ अमी हलाहल मदभरे श्वेत श्याम रत नार ॥ जियत मरत झुकि २ परत ज्यहि चितवत इकबार ३५ मन चाहतहै मिलनको मुख देखनको नैन॥ श्रवण चहैं सुनिबो सदा प्यारीतुम्हरेबैन ३६ आवतही हरषैनहीं नैनन नहीं सनेह ॥ तुलसी वहांन जाइये कञ्चन बरषैमेह ३७ तुलसी जगमेंहैं रहत भांति २ के लोग ॥ हिलिये मिलिये प्रेमसों नदीनाव संयोग ३८ प्रीतितोवासों कीजिये जासोंमन पतिआय ॥ जने २ कीप्रीतिसों जन्म अकारथजाय ३९ प्रेमडोरि बेगीलहै बिनतोड़ी चिटकाय ॥ हाफ़िज़ फिर वह ना जुड़ै बीचगांठि पड़जाय ४० चातक चाहत स्वातिजल चकई चाहतभोर ॥ हमचाहैं तुम मिलनको जैसेचन्द्र चकोर ४१ जैसेफूल गुलाबको सोखे अधिक बसाय ॥ तैसइप्री-

ति असीलकी दिनपरदिन अधिकाय ४२ तुमबिछुरत क्षणमोंमरों कहां जियोंबिन तोहि ॥ तवसूरत मनमों बसै वही जियावत मोहिं ४३ ओछेकी हाफ़िज़ भला है निबही कहु प्रीति ॥ चारि दिवसमों गिर पड़ै जस बारूकी भीति ४४ हमपक्षी तुम कमल दलसदारहौ भरपूर ॥ हमपरकृपा न छोड़ियो क्यानेरे क्यादूर ४५ नैनओट जबसेभई पड़ैनहीं जियचैन ॥ व्याकुल जलबिन मीन ज्यों तलफतिहौं दिनरैन ४६ पीतम प्यारे मोहना सुधिबुधि सब बिसराय ॥ हमका व्याकुल छांड़ियां कहांरहे तुमछाय ४७ भले तुमसब जायवां प्रीति रीति व्यवहार ॥ जेती अवधि बदी हुती सो बीतो इक्रार ४८ हायदई कैसीकरों पड़ी नावमँझधार ॥ तुमबिन आये सांवरे होय न बेड़ा पार ४९ रथ्यौजिन मोहे महीं हाफ़िज़शील सनेह ॥ जानुउन्हैं पशु समयो धरेमनुषकीदेह ५० हाफ़िज़ जिनमों शीलनहिं सोनरवृषभ समान ॥ नाजानोंक्यहि कारणै कियो मनुष भगवान ५१ प्यारीदृग अञ्जनदिये यहैलुक-ञ्जन होय ॥ आय यहांमन लेगई देखि सको नहिं कोय ५२ मन राखौं हौं बरजिकै जी राखौं समुझाय ॥ नैना बरजेनारहैं मिलें अगाऊजाय ५३ जब बरजे तबनारहे गयेपै मरमलैन ॥ अपबश ते परबश भये येविश्वासीनैन ५४ पलन लगतहै एकपल क्षणन घटतहै सांस। साहस मन जबते चुभी नैन सैनकी फांस ५५ समझाये समझैनहीं पलक देतनहिं चैन। नीरभरे प्यासे रहैं निपट अनोखेनैन ५६ पियमूरति चितलायके अबरोवैंयहनैन ॥ बैरी आग लगायके दौड़ैंफिर जललैन ५७ अनियारेतीखे कुटिल अंकुशसे दृगबान ॥ लगत सीधे आयके पाछे खों चत जान ५८ लटपट पग धरती धरैं अटपट बोलत बैन ॥ कछु पियसों खट-पट भई सोटपटपटपकतनैन ५९ पातझरैंते इमिकहैं सुमनतरवर बनराय ॥ अबके बिछुरे कबमिलैं दूर परैंगे जाय ६० नेहनिबा-हनकठिनहै फिरचो जगत सबजोय ॥ बिमल प्रीति नहिंदेखिये स्वारथ लगसब कोय ६१ प्रीति २ सबकोउ कहे कठिन तासुकी रीति ॥ आदिअन्त निबहै नहीं बारूकीसी भीति ६२ जबतेमो

ऊपरपड़ी श्याम सलोनी ज्योति ॥ लोनी लागे भीतज्यों देहदू-
बरी होति ६३ गमन समय फेंटा गह्यो सुन्दर हित जियजान ॥
छटतही दोऊ छुटैं इतफेंटा उत प्रान ६४ आजद्वैज विदेश पिय
अधि निकसो यहि ओर ॥ ममनैना असुपीउके आयभये यक
ठोर ६५ मोमन मनसा येहुती जन्मन छांड़ांपांय ॥ बिछुरनअङ्क
जो विधि लिखे तासों कहा बसाय ६६ मुख ग्रीषम पावस
नयन जिय महियां जड़ काल ॥ पिय बिन तनतें तीनि ऋतु
कबहुं न मिटत जमाल ६७ बिन बैठे बिन उठि चलै बिन
बिन ठाढ़ीहोय ॥ घायलसी घूमति फिरै मरमन जानै कोय ६८
पियबिछुरत बिछुरेसबै तनमनके सुखचैन ॥ घरबाहर नस्वहायहै
तलफिकटै दिनरैन ६९ तनदुख मनदुख नैनदुख हियेभई दुख
खान ॥ मानोकबहू नाहुतो वा सुखसों पहिचान ७० हौ सजनी
जानतनहीं बिछुरो भूलेभाय ॥ अबकि बार जो फिरिमिलैं जन्म
न छोड़ां पाय ७१ अहमद मति अवतारकी कहत सबै संसार ॥
बिछुरे मानुष फिरिमिले यहीजान अवतार ७२ तुमबिन यैतीको
करै किरपा मोपर नाथ ॥ मोहिं अकेलो जानिके दुखकर दीन्हो
साथ ७३ मीरन प्यारे अस कहो सपने देखहु मोहिं ॥ तुमबिन
नींदन आवहो कैसे देखोंतोहि ७४ प्यारेमेरी नींदकी बात ति-
हारेहाथ ॥ आवतहै तुम साथहो गईतुम्हारे साथ ७५ लालपिया
के बिछुरते बिछुरगये सबचैन ॥ भूख प्यास नींदगई उर्द्ध बांह
भये नैन ७६ मनमाला तुवनामकी जपति रहौं दिनरैन ॥ नैनपि
यासे दरसके नेकन पावत चैन ७७ मेरो मन तोपैरह्यो तेरोमन
म्वहिमाहि ॥ होऊव्याकुल बिनमिले चैन शरीरहिनाहिं ७८ रो-
मावलि हियरे सखी नाहिन एसो नाहि ॥ श्याम ध्यान हियरे बसै
ताकोहैप रछाहि ७९ आजसखी हमइमि सुनी पह फाटत पिय
गौन ॥ पह अरु हियरे होड़है पहिले फाटैकौन ८० सूनो भवन
विदेशपिय ऊभिसांस तियलेत ॥ मूरतिआवै ध्यानमें उठिरआ-
दरदेत ८१ मन उहलावत दिनगयो महा कठिनहै रैन ॥ कहाक
रोंकैसेभरों बिनदेखे नहिचैन ८२ तलफौं अति व्याकुलपड़ी बि

रहलियो तनलूटि ॥ काकरिहौ फिरिआयतुम जबतनजैहैछूटि८३ हेरतमग अँखियांथकी भयोहाल बेहाल ॥ हाफ़िजजी कबआयहैं यहां पियारेलाल ८४ प्यारे तुम्हरे दरशको चलाचहै चितनित्त ॥ ज्योंलोभी मनमों चहै सुखसम्पति औ वित्त ८५ प्रीतिरीति तुमआ-गिली दईसबै बिसराय ॥ व्याकुलनिशिदिन बितरहै कल न पड़ै अबहाय ८६ प्रतिदिन यों अधिकातहै बिरह बिथाकीताप ॥ तन जरिके कोयलाभयो जबसे बिछुरीआप ८७ एक लखेसे भयलगै एकैमन हरिलेइँ ॥ चितवनि२ भांतिहै काजरतो सबदेइँ ८८ स-बको मन हरिलेतहै हाफ़िज मीठीबानि ॥ बशीकरन जो मंत्रहै सोहैयही न आनि ८९ सबकोमन हरिलेतहैं हाफ़िज मीठेबोल ॥ यहीमंत्र यकजानियो बशीकरन अनमोल ९० सम्मन गलीसको चहैं नहिंमिलनेकोदाउँ ॥ नैननहीं रसलीजिये बैरीसिगरेगाउँ९१॥

सोरठा ॥

लगेकालकोतीर तलफै थोड़ी देरलौं ॥ उठिमांगैनहिंनीर नैन बाण जाकेलगैं १ प्यारीदरशनआश निकसतनाहीं प्राणहैं ॥ रटत पियासपियास दरश सुधा रस प्याइये २ प्यारीतुम्हरीप्रीति दिन दिनयों अधिकातहै ॥ तुमकीन्होबिपरीति जानिपड़ीहाफ़िजहमैं३ अधिकदुखीहैंनैन हाफ़िजजो सबअकसे ॥ बिकलरहैंदिनरैन चैन नहीं एकक्षणपड़ै ४ गईभूखऔप्यास बिरहलियोतन लूटिअब ॥ प्राणहमारेपास दरशनआशाबचिरहे ५ क्षणहूं प्यारेलाल हाफ़िज जी बिसरैनहीं ॥ कैगयोहालबेहाल काहकरों कासोंकहौं ६ प्यारीतुम्हरेहेत अँखियां ते नदियां भइँ ॥ तनभयोबारूरेत कटि कटि परतकरारज्यों ७ परयोबिरहकोफेर तुमबिन सबऋतु फिरि गई ॥ दिनबीततअंधेर रातिचैननहिंलहत चित ८ उनसोंकहियो काग जबसेतुम कीन्होंगमन ॥ दिनसुरकतजिमिआग रजनीजरि कैराभई ९ पंख डुलावत नैन उड़ि देखैंतुम्हरोदरश ॥ फरकतहैं दिनरैन परबश पक्षी उड़नको १० ज्योंबिछुरेजलमीन तुमबिछुरे गतियों भई ॥ तलफितलफिभोक्षीण रूप सरोवर दरश बिन ११

बेगिदेहुकरतार इननैननको पंख बल ॥ उड़िदेखैंयकबार अपनी प्यारी जायकै १२ रहिरहिहियो धँधात बनकी डाढ़ी ठूंठ ज्यों ॥ जिनते तपनि बुझात ते बदिरालांबी गईं १३ वह चितवनकी फांस करककरे जे करिगई ॥ गलिगो सिगरो मांस खरकत है निकसत नहीं १४ जिनको है बरसात तिनकोहै बरसात शुभ ॥ जिनके नहिं बरसात तिनको दुखदूनो भयो १५ ॥

बारहमासा सोरठा ॥

आयो मास असाढ़ नहिं आये प्रियप्राण पति ॥ भईबिरहतन बाढ़ नये नये बादर निरखि १६ सावन सहित सनेह हमहिं झुलावैको सखी ॥ मनभावनतजिगेहआवनकीनहिंसुधि करत१७ भादों भरि भरि नीर नदीताल उमड़न लगे ॥ बढ़ो बिरहको पीर धीरज रखियो शरीरको १८ क्वार कुवँर बिन काम बिकल करत अरुसुख हरत ॥ पल क्षण आठौयाम कल न पड़त लखि सकल दुख १९ कातिक बारम्बार हिलि मिलि खेलत सबसखी ॥ हमैं भयोहै पहार हरिबिन तन मन और धन २० अगहन अति दुख दान शीतल शीतल श्वेतकर ॥ ज्यों ग्रीषमको भानु सब तन तायेदेतहै २१ पूसपरमहित ल्याय पियप्यारे बिन को हमैं ॥ राखैं हिये लगाय निशि दिन प्रीति बढ़ायके २२ माहमास बिनकन्त कुञ्जन कुञ्जन सखिन बन ॥ तुमबिन श्याम बसन्त देखि देखि कलपै हियो २३ फागुनमें बिनलाल बीरा बैरिन भावई ॥ अँसु वारंग गुलाल पिचकारी अँखियां भईं २४ चैत चलत जब बात पियबिछुरनको एसखी ॥ तनडोलत जिमिपात थिर न रहतथर थर कँपत २५ सखी मास बैशाख लाखों बन फूले सुमन ॥ लाखलाख अभिलाष हियउपजे पिय लखनको २६ जेठ जरावत-सांस शीतल द्रुमकी छांहतर ॥ बीते बारह मास तकत तकत पिय पन्थ नित २७ लौं द लग्यो यहिदेश अबआवोपरदेशतजि॥ ऊधव यही सँदेश कहियो हरिसों जायकै २८ बिकल रहौं दिन रैन प्यारी तुम्हरे दरश बिन ॥ मग जोवतहैं नैन हाफ़िज़ कब

लौं आयहौ २६ गाउ धर्‌यो सबनाम प्रीतिकरीसो ना भई ॥ निकसो ना कछुकाम बदनामी सहिबे पड़ी ३० हम हाफ़िज़ अ ज्ञान भूलिजायँ तो सांचिहै ॥ तुम ह्वै परम सुजान ताजुब जो ऐसी करो ३१ सबहीके यकठौर श्रवण नैन मुखनासिका ॥ प्या रनको कछुऔर बोलचाल चितवन चलन ३२ ॥

कुंडलिया ॥

साईं अपने भ्रातको बहुत न दीजै त्रास। पलक दूरि नहिं कीजिये सदा राखिये पास। सदा राखिये पास त्रास कबहूं नहिंदीजै। त्रासदियोलंकेश तासुकी गति सुनि लीजै। कहि गिरिधर कविराय रामसों मिलिगो जाई। पाइ बिभीषण राजलङ्कपति बाजो साईं १ मोती लेने पियगये खार समुद्रहि तीर। मोती मिले न पिय मिले नयननि टपकत नीर। नयननि टपकत नीर पीरअब कासों कहिये। बीते बारहमास पिया बिन घरही रहिये। कहि गिरिधर कविराय सांझ डारत सगुनौती। जरजावे वह सिंधु जहां उपजतहैं मोती २ हंसा उड़िदिशिको चले सरवर मीत जुहार। हम तुम कबहूं भेंटिहैं सन्देशन व्योहार। सन्देशन व्योहार भर्‌यो पूरो जल रहियो। जीव जन्तु चिरजियो सदा उत्तम फल लहियो। कहि गिरिधर कविराय केलिकी रही नमन्सा। दै अशीष उड़िचले देश अपनेको हंसा ३ नयना जोपर बशपरैं उत्तम गुणसब जायँ। वे फिरि फिरि सीरोकरैं ये फिरि २ लपटायँ। ये फिरि २ लपटायँ नेत्र बहुरो भरि आवैं। खानपान सुख त्याग रात दिनहीं दुखपावैं। कहि गिरिधर कविराय सुनो तुम श्रवणनि बैना। लोग जोदेयँ कलङ्क परैं जब परबश नयना ४ मैना जानो जीवको तोताको दिन रैन। बक बकरीके ताकहौं मोर कहांते चैन। मोर कहांतेचैन दुनियांमें तीतरजानो। गलि गलि आई बाज मौन याहीते ठानो। कहिगिरिधर कविराय सुनै कुरङ्गकेबैना। पियगल डारी बांह हंसमुख देखो मैना ५ साईं बेटा बापसों बिगरे भयो अकाज। हिरणाकुश अरु कन्सको गयो

दुहुनकोराज ॥ गयो दुहुनको राज्य बाप बेटाके बिगरे। दुश्मन दावादार भये महिमण्डल सिगरे ॥ कहि गिरिधर कबिरायउन्हें काहू न बताइ। पिता पुत्रकी सरि लाभ एकौ नहिंसाइ ६ ॥

अथ षट्ऋतु बर्णन

बसन्त ऋतु ॥

हितकारी ऋतुराज तुम साजत जग आराम। सुमन सहित आणा भरो दलहि करो अभिराम ॥ दलहि करो अभिराम काम प्रद द्विज गुणगावैं। लहि सुवास सुख धाम बातवर ताप नशावैं ॥ बरणै दीनदयाल हिये माधव धुनिप्यारी। श्रवण सुखद शुकबैन बिमल बिलसैं हितकारी ७ तौलों हे ऋतुराज नहिं कोकिल काग बिचार। श्याम श्याम रँग एकसे सोहत एकैडार। सोहत एकैडार काक कछु बाकन बोलै। ऐंड़ो रहै निशङ्क तासु हांसी करिडोलै ॥ बरणै दीनदयाल नहीं तुम आवत जौलों। काक कोकिला ज्ञान जात नहिं जानेतौलों ८ ॥

अथ ग्रीष्मऋतु ॥

ग्रीषम तुम ऋतुराजके पाले दीनसुसाषि। तिनको दाहतहौ कहा दावानल मैंमाषि ॥ दावानल मैंमाषि जारि फिरि राख उड़ाई। उन दीनन की दशा देखि नहिंदाया आई ॥ बर्णैदीनदयाल द्विजन तापत क्यों भीषम। मित्रहु तुम्हरे संगचढ़े वृषदारुण ग्रीषम ९ ॥

अथ बर्षाऋतु ॥

पावसऋतु सुख दानि जग तुमसम कोऊनाहिं। चपला युत घनश्याम नित बिहरतहैं तव माहिं ॥ बिहरतहैं तवमाहिं नील कण्ठहु सुखदाई। अम्बर देत सोहाय द्विजनकी करत सहाई ॥ बरणै दीनदयाल सकल सुखतो सुषमा बस ॥ एकै हंस उदास रहैं काहे हे पावस १० ॥

अथ शरदऋतु ॥

पाईकबि द्विजराज कबि गुरुवर अम्बर सोह। दरे दरद हे

शरद हिय करेमोद संदोह ॥ करे मोद संदोह धरेगुण सज्जन केरे। कुबलै खरे बिकाश भरेभावैं चहुंफेरे ॥ बरणै दीनदयाल जगतकेतुमसुखदाई। करियेकहापूशंसहंसबिलसैं छबिपाई११॥

अथ हिमन्तऋतु ॥

आवतही हेमन्ततो कम्पन लगो जहान। कोक कोक नदभे दुखी अहित भये जगप्रान ॥ अहितभये जगप्राण संग जबहीं तुव पाये। दुखद भये द्विजराज मित्रनिज तेज घटाये ॥ बरणैदीनदयाल दीनद्विज पांति कँपावत। कामिनि को भो मोद एकही तो जग आवत १२ ॥

अथ शिशिरऋतु ॥

गाये सुयश समूहतो कबिराजनअवदात। फैली महिमा रावरी महिमण्डलमें ख्यात ॥ महिमण्डलमें ख्यात फागरागनको गावैं। शिशिर सुआप प्रसाद जगत रवही सुखपावैं ॥ बरणै दीनदयाल कुन्दमिस तो यशछाये। एकविचारेपाततिन्हैं उतपातलगाये१३ बीती सोवतरैन सब होन चहै अबभोर। पन्थी चेतकर पन्थको चिरियन लायोशोर ॥ चिरियन लायोशोर देखि चहुंओरघोरबन। चोरलगे बरजोर सिखे यहठौर राखि धन ॥ बरणै दीनदयाल न गाफ़िलहै इतभीती। साथीपाथी भये जागिअजहूं निशिबीती१४ चारो दिशि सूझैनहीं यहनन्द धार अपार। नावजरजरी भारबहु खेवन हार गँवार ॥ खेवन हारगँवार ताहि परहै मतवारो। लिये भौंरमेंजायजहांजलजन्तुअखारो ॥ बरणैदीनदयाल बहीबहुपौन पचारो। पाहिपाहि रघुबीर नाम धरिधीर उचारो १५ भूलैयौबन केर मद अरी बावरी बाम। यहनैहर दिन दोयको अन्त कन्तको काम ॥ अन्त कन्तको काम तन्त सबही तजि दैरी। जाते रीझे नाहनेह नवताते फैरी ॥ बरणै दीनदयाल भूषि भूषण अनुकूलै। चलिपिय गेहसनेह साजिलखि देह न भूलै १६ गौनेको दिन निकटअब होन चहतपिय मेल। अजहूं छुटो न तोहिंरी गुड़ियनको यहखेल ॥ गुड़ियनको यहखेल खेलि सब समयबिगार। सीखनहिं गुणकछू पियामन मोहनवारे ॥ बरणै दीनदयाल शीख

पैहै पियभौने । एरी भूषणसाजि भटू दिन आवतगौने १७ तूमति सो बौरीपरी कहोंतोहि मैंटेरि । सजिशुभ भूषण बसनअब पिया मिलनकी बेरि ॥ पियामिलनकी बेरि छाँड़ि अजहूं लरिकापन । सूधेदृगसों हेरि फेरिमुख नादै तनमन ॥ बरणै दीनदयाल क्षमैंगो चूकनहूं पति ॥ जागिचरणमैंलागिसभा बिनवैसोतूमति १८ कासों पातीहों लिखो कापैकहौं सँदेश । जे जे गे ते नहिं फिरे वहि पीतमके देश ॥ वहि पीतमके देश बड़ो अचरज या भाषै । कहूं न तमकोलेख तहांबिनु भानुप्रकाशै ॥ बरणै दीनदयाल जहां नित मोदमें वासों । जनमादिक दुखदूद नहीं चर कहिये कासों १६ जाकोखोजत सोमिलै यामें संशयनाहिं । बिरचै माखी मधुसुभा भीषमनवके माहिं ॥ भीषमनवके माहिं सिंह गजराज बिहारै । मुकता मिलै मराल मिलै दशरोज बिहारै ॥ बरणै दीनदयाल स्वातिजलऊ पपिहाको । मिलैभली बिधिआय जौनजग खोजत जाको २० नैयामेरी तनकसी बोझी पाथरभार । चहुंदिशि अति भँवरैं उठत केवटहै मतवार ॥ केवटहै मतवार नाउ मँझधारहि आनी । आंधीचलत उदण्ड तेहूपर बरषै पानी ॥ कहि गिरिधर कविराय नाथहौ तुमहिं खेवैया । उठहि दग्राको डांड़ घाट पर आवहिनैया २१ उरझीनाव कुठौरमें परीभँवरबिचआय । दीनबन्धु अबतोहिं बिनको करिसकै सहाय ॥ कोकरिसकै सहायहवै करिया बिन नाउर । आंधीउठी प्रचण्ड देखि अतिआयो ताउर ॥ कहि गिरिधर कविराय नाथबिन कबकेहि सुरझी । तातेहाहा करौ मोरिबिपदामें उरझी २२ टूटै टूटनहार तरुवायुहि दीजतदोष । त्योंअब हरके धनुषको हमसों कीजत रोष ॥ हमसों कीजतरोष कालगति जानि न जाई । होनहार ह्वैरहै मिटै मेटे न मिटाई ॥ होनहार ह्वैरहै मोहमद सबको छूटै । होय तिनूका बज्र बज्र तिनुका पै टूटै २३ ॥

भजन ॥

ऊधवप्रीतिकिये पछितानी । हमजानी ऐसीनिबहैगी उन कछु

औरैठानी ॥ कारेतनको कौनपत्यानो बोलत मधुरीबानी। हम को लिखि लिखि योग पठावत आपुकरत रजधानी ॥ सूनी सेज श्यामबिन मोको तलफ़त रैनबिहानी। सूरश्याम प्रभु मिलिके बिछुरे तातेमतिजो हिरानी १ करमगति टारेहु नाहिटरे। कहां वहराहु कहांवै रविशशि आनि संयोग परे ॥ गुरुवशिष्ठ पण्डित अतिज्ञानी रचिपचि लग्नधरे। पिता मरण अरु हरण सियाको बनमें बिपतिपरे ॥ भारतमें भरुहीको अण्डा घण्टा टूटि परे। हरिश्चन्द्रसे दानीराजा नीचको पानिभरे ॥ तीनलोक भावीके बशमेंसुरनर देंहधरे। सूरदास होनीसोइहैहै काहेको शोचकरे २ मेरेमनइतनी शूलरही। वेबतियांछतियांलिखिराखी जेनँदलाल कही ॥ एकदिवस मेरे गृहआये मैंथीमथतदही। रतिमांगत मैंमान कियो सखि सोहरि गुसागही ॥ सो चित अति पछितातराधिका मुरछितधरणि ढही। सूरदास प्रभुकेबिछुरेतें बिथा नजातसही ३ उद्धव सब स्वारथकेलोग। आपतोकेलिकरत कुबिजासँग हमहिं सिखावत योग ॥ भ्रमबनजात सांवरी मूरतिजिनदेखहिंवहरूप। अब रसरासपुलिन यमुनाको करतलाज भइभूप ॥ अनुदिन नैन निमेषन लागतभयो बिरहपतिरोग। मिलहुकान्ह कुमारअश्वनी मिटैसूर सब शोग ४ प्रीति करि काहू सुख न लह्यो। प्रीति पतंग करी दीपकसों अपनों प्राण दह्यो ॥ अलिगण प्रीतिकरीजल सुतसों सम्पुट सुखहि सह्यो। सारङ्ग प्रीति करीजो नादसों निकटहि बांद सह्यो ॥ हमहूं प्रीतिकरी माधवसों चलत न कछू कह्यो। सरदास प्रभु बिछुरे राधिका नैनन नीरबह्यो ५ निशि दिन बर्षत नैन हमारे। सदा रहत पावसऋतु हमको जबते श्याम सिधारे ॥ दृग अञ्जन लागत नहिं कबहूं उर कपोलभये कारे। कंचुकिशोक तनहि सुन सजनी कुचबिच बहत पनारे ॥ सूरदासप्रभु अम्बुबढ़ोहै गोकुललेहु उबारे। कहँलगु कहौं श्याम घन सुन्दर बिकलहोत अति भारे ६ ऊधोमन नाहीं दशबीश। एकैहुतो सोगयो हरिके संगको अवराधतईश ॥ भई अतिशिथिल सबै माधव बिनुयथा देह बिनुशीश। श्वासा अटकि रही आशा

लगि जीवहु कोटि बरीश ॥ तुमतोसखा श्याम सुंदरके सकल योगकोईश। सूरदास रसिकनको बतियां पुरवहुमन जगदीश ७ ऊधो होत कहा समुझाये। चित चुभिरही सांवरी मूरति योग कहांतुम लाये ॥ पालागौं कहियो हरिजूसों दरश देहु इकबेर। सूरदास प्रभुसों बिनती करि यही सुनावहु टेर ८ हरि बिछुरत प्राण निलज्ज रहेरी। पिय समेत सुखकी सुधिआवैशूलशरीर न जात सहीरी ॥ निशि बासर ठाढ़ीमग जोवत ये दुख हमनसुनै न चहैंरी। गौन करत देखन नहिं पाये नैन नीर भरि बहति भयेरी ॥ तेतातें बसिरहीं हियेमें उलटि अवधिके बचनकहेरी। सूरश्याम बिन परब बिरहबश मानोरबि शशि राहु गहेरी ९ भयेनिज नयन अनाथ हमारे। सुन्दर श्याम वहांते सजनी सुनियत दूरि सिधारे ॥ वे जलहैं हम मीन सखीरी कैसे जीवहिं न्यारे। हमचकोर चातक अम्बुद तरसुधा बरषि प्रतिवारे ॥ मधुबन बसतआश दर्शनकी जोयजोयमगहारे। सूरश्यामकीन्ही बिधिऐसी मृतिकहुते फिरिमारे १० नाथअनाथनको सुधिलीजै। तुमबिन दीन दुखितहैंगोपी ऊधोको पतिया लिखिदीजै ॥ नैन सकल भरि आये हरिबिनु करमें शुक्र मेरी गहिलीजै। सूरदास प्रभु आश मिलनकी अबकीबेर हरि आवन कीजै ११ जपतिहौं तेरे नामकी माला। तुम्हरे कारण योगिनि होंउगी बांधिकमर मृगछाला ॥ यकबनढूंढ़ सकल बनढूंढ़ा कहूं न पाये नँदलाला ॥ सूरदास प्रभुतुम्हरे दरशको हौं बिरहिनी बेहाला १२ वै देखियत मधुबनके रूखरी। तामें श्याम हमारे प्रीतम जिनने हरी मेरी नींदभूखरी ॥ उन बिन मोपै रह्योन परतहै बिनुदेखैनैनन को दूखरी। सूरदासप्रभु मोहन नागरकोबिरह कोल्हूभयोतन॥ ऊखरी १३ तुम्हरे देश कहां मसखोटी। भूख प्यास सब नींद गई अलि हरि बिन बिरह लियो तनलूटी ॥ दादुर मोर पपीहा बोलत अवधिभई सबझूठी। पाछे आय कहातुम करिहो जबतन जैहै छूटी ॥ गोपि सँदेशो हरिपै पठवत प्रथम प्रीतिक्योंटूटी। सूरदास प्रभु यों जानतहौं बैरकरेंगे कूटी १४ ऊधो कबऐहैंनँद-

लाला। हेरतपन्थ बहुत दिनबीते सब ब्रजबाल बेहाला। घेरि लियो चहुंओर प्रेमबश पूछत ग्वालिन ग्वाला। सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनको फिरि करिहैं प्रतिपाला १५ श्याम बिनोदीरेम-धुबनियां। अबहरि गोकुल काहेको आवैं चाहतनव यौबनियां॥ वेदिन माधव भूलिबिसरिगे गोदखिलायेकनियां। गुहिगुहिदेतथे नन्द यशोदा तनक कांचकीमनियां॥ दिनाचारते पहिरन सीखी पाट पिताम्बर तनियां। सूरदास प्रभु तजीकामरी अब हरिभये चिकनियां १६नन्दनँदनबिनकल न पड़ै। अतिअनुरागभरीयुवती सब जहां श्याम तहँ चित्त धरै॥ भवन गई मन तहां न लागै सुर गुरु जन अति त्रास करै। वै कछु कहैं करैं कछु औरैसासु ननदपर झहरैं॥ यहीतुम्हैं पितु मात सिखायो बोल करतनहीं रिसनिजरैं। सूरदास प्रभु शोचित उरझो यह समुझैं जे ज्ञानधरैं १७ हम अहीर ब्रजबासी लोग। ऐसेचलो हँसै नहिं कोऊ घरमें बैठकरो सुखभोग॥ दहीमही लवनीघृत बेंचौ सबै करोअपना उद्योग। शिरपर कंस मधुपुरीबैठो छिनकहिमें करि डारैशोग॥ फूंकिफूंकि धरणी पगधारो अबलागी तुमकरन अयोग। सुनहुसूर यहजानहुगे तब जब देखियो राधा संयोग १८ मातु पिता अतित्रास दिखावत। भ्रातामारनकोम्वहिं धिरवे देखेमोहि नभावत॥ जननीकहत बड़ेकीबेटीतोकोलाज न आवत। पिता कहै कैसोकुल उपजी मनहीमन रिसिपावत॥ बहिनीदेखि देत मोहिंगारी काहेकुलहि लजावत। सूरदास प्रभुसों यहकहिकहि अपनी बिथा जनावत १९ हमपर हेतकरे रहियो। वहदिन ऊधो बिसरतनाहीं फिरि फिरिका चहियो॥ देखेजातिहो अपनी अँखिया यातनको दहियो। याब्रजको व्योहार ऐसोभयो सबप्रभु सों कहियो॥ श्यामशरीर कमलदल लोचन कबदर्शन लहियो। सबसुख लाड़ लड़ाये सूरप्रभु विहि धुराये रहियो २०॥

सङ्गीत॥

गंगगृदगेंदके हेतगयोजनजगृदयमुनजल। ममगृदमुरलिका

नादकियो तनतगृद तहांतल ॥ फम्फगृदफनैफहरात महाफुंकरत जोगतफन। नन्नगृदकि नागिनिआय घन्घगृद बिनती जो करत घन। दन् दगृदकीदेवननिरखिसन्सगृदसुमन बरषाच्यो। बम् बगृदकि बन्दित कमलकवि सो कन्कगृद कृष्ण फणपरनच्यो १ नाचि नाचि कूदि कूदिकिल किकिलकि कपि उछरि उछरि राह लेतआगमानको। बलकिबलकि बलकरि छरिछरिदरिछरत छरेद भेदकृत गति भानुकी। रुण्डनसों रुण्ड झरु मुण्डनसों मुण्डकरि भारी भट झुण्डन घुमण्डमारु घानकी। कहतयह श्रीराम हियेमें सिहातजात देखोबीरलषण लड़नि हनुमानकी २ सहसरंगघाचरि रवि मोहन यमुनाके नीर तीर बजत बधैया। गोपिन सङ्गसो राधिका निकसीं ज्यों तारनबिच सोहत जुन्हैया ॥ उघटितताल तान मनमोहन नानारङ्ग बजैसहनैया। गिरितन् गिरितन् तधुव तधुव धुनि बजत मृदङ्ग गति नचत कन्हैया ३ ॥

बारहमासा ॥

ऊधोजी कबऐहैं मुरारी ॥ चैतमास कैसेजियलागे बिमलचन्द्र उजियारो। एकएक क्षण पलयुग बीतै का तक्रसीर हमारी ॥ बैठिरहे सुरतिबिसारी॥ऊधोजीकबऐहैं मुरारी ॥ बैशाखबिपतिसो दारुण सजनी सबकहियो यहसँभारी। शीतलमन्द सुगन्ध पवन बहै फूलिरही फुलवारी॥ करैपपिहानितरारी॥ऊधोजी० ॥ जेठहि योगबतावत हमका भूषणबसन उतारो। अङ्गबिभूत गरेमृगसेली काननकुण्डलडारी ॥ तपैपृचिअग्निसेवारी॥ ऊधोजी० ॥ आषाढ़ मेघचहू दिशिधावै लिये दामिनि तरवारी। ऐसे कठोर दयानहिं लावैं ढूढ़ैं हमअस नारी ॥ अग्नि बिरहा तनजारी ॥ ऊधोजी० ॥ सावन घरघर गड़ेहैं हिंडोला पहिरे कुशुमरङ्गसारी। करि सोरहो श्रृंगार उमंगसो झूलैं सबै ब्रजनारी॥कियेउरआनँद भारी ॥ ऊधा जी ० ॥ भादौ रैनि भयावन सजनी सरस भई अँधियारी। दादुर मोर पपीहा जोबोलैं कलनपड़तहैअटारी ॥ उठैंतनसेचिनगारी॥ ऊधोजी० ॥ कुआरमास कुबिजाने चन्दन जादूकरि असडारी।

रूपस्वरूप कहांलग वरणौं कूवरकी वलिहारी ॥ ताहिलखि मोहे मुरारी ॥ ऊधोजी० ॥ कातिकमास जबलागे सखीरी दीपक बरै देवारी । हमरीदेवारीलईकुवरीने ब्रजमोपड़ीअँधियारी ॥ मोहेउहां कुञ्जविहारी ॥ अगहन मास श्याम घरनाहीं जो हम जनती अगारी । खूंटपकड़ि उनके सँगजाती अबपछितात पिछारी ॥ भूलि गईं सबैहुशियारी ॥ ऊधोजी० ॥ पूसमासपड़ीसेजपैलोटौं मानौंमीन अधमारी । एकतो जाड़ा जोरलगतिहै दूजेबिरहकीजारी ॥ तीजे हरिसुरतिबिसारी ॥ ऊधोजी० ॥ माहमासउमँगि उठे,अँगअँगछकित भईं सबनारी । ऋतुवसन्तकोआगमजनायोसूनीसेजहमारी ॥ लगै जैसेनागिनकारी ॥ ऊधोजी० ॥ फागुन फीको पियाबिनलागै देह-भईसबकारी । धन्यधन्यसूरज मुनि तुमका पाउपरौं बलिहारी ॥ सुरतिजनि छांड्योहमारी ॥ ऊधोजी कबऐहै मुरारी १ ॥

ऊधोन उचित प्राणपति जीवत अबहमकैसेयोगकरी ॥ सावन सहमि रहेसबपक्षी झरकुलआनिधरी । त्यागतनाहीं नारिआपनी उनकैसेसुधिबिसरी ॥ ऊधो० ॥ भादौं तालनदीउमड़ाने बहिबहिपन्थधरी । दादुरमोरचकोरपपीहाबिरहाशब्दसिगरी ॥ ऊधो० ॥ कुवारअगस्त उयेजो गगनमें फूलीकांसखरी । परदेशी सबकेघर आयेहमरे निठुरहरी ॥ ऊधो० ॥ कातिकचन्द्र प्रकाशकियोहै प्रीति चकोरकरी । चितवत रहत दृष्टिवाहीतन रहनभूमिपरी ॥ ऊधो० ॥ अगहन आशलगी उनहीसों नैननतोरझरी । हरिकेनेह शीचसिगरीहैं बूड़िबूड़िउछरी ॥ ऊधो० ॥ पूसपड़ैहेमन्तचहूं दिशिदेखतसेजडरी । रैनिभई मोहिं कालीनागिनतलफ़िलफ़ि गुजरी ॥ ऊधो० ॥ माह बसन्त बहार सखीरी मालिनि घरघर फिरी । पियरे फूल पियरोतनमोरा लाई सौत हमरी ॥ ऊधो० ॥ फागुनलाल फुहार परैरी भीजिगईतनचूनरी । चढ़त न दूजोरंगकृष्णबिनकठिन रङ्ग सँवरी ॥ ऊधो० ॥ चैतमास फूलेबनटेसू मधुपगुंजमनुरी । हृदय बसै सांवरीमूरतिचितते ना उतरी ॥ ऊधो० ॥ बैशाखआगबहत गगनमें सीसब देहजरी । बिलखिकहत वृषभान नन्दनी मरैसौतिकुवरी ॥ ऊधो० ॥ जेठमासरवितपत मीनसी सागरतीरपरी ।

पावतनीर पीरसो हरिहै मनरहोधीरधरी ॥ ऊधो० ॥ असाढ़अगम चढ़िचढ़ि नभधावैं ढूंढ़तआड़फिरी। उनकीआशरही जीवनकीअ-यहैंफेरिहरी॥ऊधोनउचितप्राणपतिजीवतअबहमकैसेयोगकरी२ ॥

गानेकी दो एकचीजैं ॥

हरिसों जाय कहोयह कोई।
तलफ़तिहौं दरशन कबहोई॥

हमसों प्रीति बढ़ायतुम चलेगये परदेश। निरमोही ऐसेभये कि पठयोनहीं सँदेश ॥ माफ़करो खताजोहोई ॥ हमजानी कछु दिननलौ निबहैगी यह प्रीति। हायदई सोकाभई कहांगये मम मीत ॥ कासों कहौं कि सुनैनहीं कोई ॥ जाउँ कितैपूछूंकहां पैं नहीं जियचैन। घायलसी तड़फ़तपड़ी बिकलमहा दिनरैन ॥सो बिपदा हम कासन रोई ॥ जोमैंऐसो जानती निरमोहीहैं आप। कबहूं नामैं बिसाहती प्रीतिरीतिको पाप ॥ जायकहां तुमकाअब जोई ॥ ऐमनमोहन आपबिनपलक्षण पड़ैनचैन। तलफ़ि तलफ़ि बीतैहमैं हाफ़िजयह दिनरैन ॥ दागनहीं छूटेजो धोई ॥ हाफ़िज जोमैं जानती आपदेहैंबिसराय। कबहूं तो करतीनहीं प्रीतिरीति नगिचाय ॥ सोअबयुक्ति चलैनहिंकोई ॥ बहुदिनबीते दरशबिन कृपाकरो अबआय। व्याकुल हाफ़िज लखिहमैं हियसों लेंहुलगाय ॥ सोयहभाग हाय कब होई ॥ कुबिजा अतिप्यारी भई बैसी गोपीग्वाल। उनकेरंगमों जारमें हमैंछोड़िबेहाल ॥ हाफ़िज़ऐसो करैनहिकोई ॥ दरशन आशालगिरही निकसैं नाहीं प्रान। कर जोरे बिनतीकरौं कृपाकरौ अबआन ॥ क्षणमोंदूरिबिथासबहोई॥ औरनसोंकरप्रीतितुम हमैं दियोबिसराय। कौनचूक हाफ़िजपड़ी जानिपड़ै नहिहाय ॥ सोअब हाफ़िज कृपाकबहोई १ ॥

ऊधो कब ऐहैं बनवारी।
दरशनकोतलफैं ब्रजनारी ॥

ऐसी तुमको चाहियेकहोतो गोपीनाथ। जैसीतुम हमसोंकरी छोंड़ि हमारोसाथ ॥ कुबिजाभई तुम्हैं अबप्यारी ॥ हरिसों प्रीति

बढ़ायके पड़ोहमैं पछितान । हम जानी निमि जायगी उन कछु औरैठान ॥ बैठिरहे वह सुरति बिसारी ॥ हाफ़िज़ मधुरीबाणि परकरैकौन बिश्वास । जैसीकछु हरिसोंभई हतीन ऐसीआस ॥ सोसब भागकी लागहमारी ॥ लखिलखि सूनीसेजियां जलभरि आवतनैन । हाफ़िज़ अबकैसीकरौं पड़ैनहीं जियचैन ॥ भूलिगई सिगरी हुशियारी । हाफ़िज़ प्यारेश्यामकी बिथासही नहिंजात । मुर्च्छितह्वै धरणीगिरौं बारबार पछितात ॥ कौनलखै यहदशा हमारी ॥ बिरहबाण ऐसेलगे निकसन चाहतप्रान । सो गरीबहम का समुझि कृपाकरो अब आन ॥ तुमबिन कोसुधि लेइहमारी॥ तलफ़ै अति व्याकुल पड़ी ब्रजबाला समुदाय । निकसन चाहत प्राणहैं कृपाकरो अब आय ॥ देहैंअशीष सबैब्रजनारी ॥ ऐसीही दिनचारलो करीऔर तुमदेर । खायहलाहल ये सबैह्वैरहिहैं सब ढेर ॥ फिरिका करिहौ आयमुरारी ॥ ब्रजमें घरघरशोकह्वै तुमबिन येनँदलाल । मुरछितह्वै धरणीगिरैं काहि काहि सबबाल ॥ ढूंढ़त फिरैं सबै यहनारी २ ॥

तुमबिनचैन हमैंनहिप्यारे ॥ तलफ़ि तलफ़ि जिय जातहै पड़ै नहीं हियचैन । जबतेपीतमतुमगये रोवतहैंयहनैन ॥ तापरबिरह देत तनजारे ॥ कुबिजा अति प्यारी भई हमैं दियो बिसराय । कौनहमारी प्रीतिअब कहाकरो तुम आय ॥ भलेफँसे अब नन्द-दुलारे ॥ हाफ़िज़ अबकैसीकरौं बिनदेखे नहिचैन । जैसे जलबिन माछरी तलफ़तहैदिन रैन ॥ सो गति कही जात नहिं प्यारे ॥ ऐ मनमोहन सांवरे दरशदेहु अबआय । यातो तुमहम सबनकोउ-हांलेहु बुलवाय ॥ कटैं ज्यहिसे बिरह दुःख हमारे ॥ मग हेरत अँखियांथकीं परयो बिरहकोफेर । दर्शनआशा लगिरही करोश्याम जनिदेर ॥ देखनको तलफैं अब सारे ॥ जोहाफ़िज़ यह जानती प्रीतिकिये दुखहोय । शहर ढिंढोरा पीटतीं प्रीतिन कीजोकोय ॥ परबशफँसे नैन रिझवारे ॥ पड़ेहाल बेहालहैं सबयहगोपीग्वाल। तुमबिन मोहन आयके पूंछैकौन हवाल ॥ व्याकुलहैंयह सबब्रज बारे ॥ प्यारे तेरीयादमें पड़ीरहौं बेचैन । मुर्च्छितह्वै धरणीगिरौं

यहीहाल दिनरैन ॥ जबतेहौ तुम श्यामसिधारे ॥ हाफ़िज प्यारे प्रीतिकरि लह्यो न कोऊ सुःख। बाढ़त प्रतिदिनहीरहै शोकरोग औ दुःख ॥ सोअब कहत नबनै हमारे ३ ॥

ऊधो देखिचले सोकहियो ॥ हमका ककुभावैनहीं गुरुजन को उपदेश। तुमबिन सूनो सब लगै जैसे मणिबिन शेष ॥ हाफ़िज काहकहौ तनदहियो ॥ ऊधोलावहु श्यामसे चलिकै हमैंमिलाय। नाहीं सब यकद्यौसयह मरिरहिहैं बिषखाय ॥ करियोफिरि जो कुछतुम चहियो ॥ बिरहयोग धारणकरौं जटा बनाऊं केश। खेह उड़ाऊंतनदहौं जैसेस्वांगमहेश॥ याहीहमैंरचोअबचहियो॥ हमरी सुधि बिसरायतुम वहांरहे काछाय। तलफ़ि तलफ़ि जिय जातहै दर्शदेहु अब आय ॥ नाहीं मन पछिताये रहियो ॥ नैनन आशा लगिरही कबमिलिहौ तुमआय। हाफ़िज़क्षणहूं कलनहीं तलफ़ि तलफ़ि जियजाय ॥ अबसहोजातनहीं तनदहियो ॥ ऊधोअबजैहैं नहीं जानिपड़ी बिरहरोग। मिलिबो उनको लखिपड़ै नदी नाव संयोग ॥ कठिनपड़ो दर्शन अब लहियो ४ ॥

खुदा जानै कि क्यों हमसे वोअब तकरार करतेहैं।
लगा कर दिल को औरों से हमैं बेज़ार करतेहैं ॥

बिधना काहूके कहूं लागैं हाय न नैन। तलफ़ि तलफ़ि जिय जातहै क्षणपल पड़ैनचैन ॥ बहुत गमगीन औहैरां य आखिरकार करतेहैं ॥ प्रेमरोग दिनदिन बढ़ै औक्षणक्षण अधिकाय। बैदभेद जानैनहीं जनितुम करो उपाय ॥ कहीं मर्ज़ मुहब्बतकी दवा बीमार करतेहैं ॥ तलफ़त ब्याकुलहैं पड़े घर घर गोपी ग्वाल। ऊधो गुरुजन सबकहैं यों प्यारे नँदलाल ॥ कि ठोकरसे मसीहाई दमेंरफ़तार करते हैं ॥ प्राणपियारे मोहना दरशदेहुअब आय। तलफ़त बीते बहुदिवस सो अबसहो न जाय ॥ मुहब्बत करके आशिक़ को कोई यों ख्वार करतेहैं ॥ अग्नि बिरह तनमन दहै निकसन चाहत जान। दर्शन आशा लगिरही कृपा करो अबआन ॥ नहीं तो कूच दुनियासे हमअयदिल्दार करतेहैं॥ ऊधोदेख्यो हालजो सो कहियो सबजाय। बिरहरोग दिनदिन

बढ़ै सो जियरा अतिअकुलाय॥ भला इसतरहसेकोई कहीं इक़रारकरतेहैं॥ चूकहूक कैसे मिटैजबलौं जान न जाय। चलत समयऊधोउन्हैं गह्यो न कोऊ धाय॥ भला ग़फ़लत कहीं ऐसी कोईहुशियार करते हैं ५॥

रिहा करदे अरे सैयाद अब फ़स्ले बहारी है।
क़फ़समें कबतलक तड़पूं निहायत बेकरारी है॥

बिरहरोग तनमन दहै कल न पड़ै दिनरैन। हाफ़िज़ काहूके कहूं लागैं हाय न नैन॥ नहीं ज़ख्मी बचा इसका यह वो पैनी कटारीहै॥ प्रीतिरीति तुमआगलो सबैदई बिसराय। ऐसीकोऊ करतहै जैसी तुमकी हाय॥ नहीं मालूम क्याहमसे हुईतक़सीर भारीहै॥ प्रीतम प्रीत लगायतुम कहांगये परदेश। बिरह रोग बढ़ह्वै यहां जटाजूटभै केश॥ तरस आताहै देखेसे कि जो हालत हमारीहै॥ हाफ़िज़तजि कुलकानि सब तुमसन कीन्हीं प्रीति। तुम निर्मोही निठुरह्वै करनलगे बिपरीति॥ इसीकानाम उल्फ़त है यहीक्याधर्तयारीहै॥ प्रीतिकरी सोनाभई गांवधरो सबनाम। हाफ़िज़ वाही गतिभई मायामिले न राम॥ बजायेइश्क आंखे। सेहमारे खूनजारीहै॥ गुरुजन हटकीनासुनी धायकरी हमप्रीत। सोई अबसब लखिपड़े देनलगे दुखमीत॥ नहीं तक़सीर कुछ उनकी यहसब किस्मत हमारीहै॥ प्रीतिकरी सुखलहनको तन मन धन बिसराय। सोलागी दुखदेनअति करिये कौनउपाय॥ निहायत ऐसेजीनेसे हमारी जान आरीहै॥ अरे पपीहा निरदई बोल न आधीरात। बिरहआग तनमनदहै जरोजाय सबगात॥ तेरी आवाज़ यहपिउकी हमैंलगती कटारीहै॥ प्यारीतुम्हरी सुधि हमैं एकघड़ी बिसरै न। तलफ़ि २ जियजायअब लहैनहीं चित चैन॥ नहीं मालूमक्याहोनी ये अब हालत हमारीहै॥ हमव्याकुल तलफ़ैं यहां उहांकरो तुमचैन। ऐ प्यारेमनमोहना प्रीति रीति यहहैन॥ नये तरज़े मुहब्बतहैं नकोई धर्तयारीहै॥ हाफ़िज़ लागी ना छुटै करियेकोटि उपाय। गुरुजन अरुसब गांवघर जो चाहै समुझाय॥ नहीं मालूम ऐ हाफ़िज़येकैसाक़हरबारीहै ६॥

होली॥ बावराहै सखिज्ञान हमारा॥ बाला पन खेलो सखि-यनसँग भूलो कौलकरारा। जबसुधि आवै पिय अपनेकी कांपत है तनमन सारा॥ भूलिगयो सबज्ञान हमारा॥ गौनेके दिनआ नगिचाने पिय पठयो अनुहारा। चारकहार डोलिया लिएठाढ़े उतरे आयदुआरा॥बिदाकी मांगत बारा॥ संगकी सखियां देखन आईं छूटो साथ हमारा। मातपिता सोबिदा करिदीन्हो साइत कियो न बिचारा॥ अबपरदेश सिधारा॥ भोग बिलास सबै अबछूटो छूटोजग परिवारा। छोटूदास भयेहैंअकेले कोउनहिं साथीहमारा॥ दाताकरै उपकारा ७॥

ब्रजमों सखीरी मैं ना रहिहौं॥ बिनतक्सीर श्यामगरिआवैं रीतिभरेकी सहिहौं। धरतीकहा मुलक झरिमारा अन्तै जायबसैं हौं॥ आखिरब्रजअबरहन नपैहौं॥ मैंतोगोपी ग़रीब जातकी तुम सन ना बरिऐहौं। तुमहौ श्यामयहांब्रजनायकतासे रारिबचैहौं॥ छोंड़ि ब्रज कहूं अन्तै जेहौं॥ करिकै श्रृंगार अरु पहिरि अभूषणमैं दधिबेंचन जैहौं॥ झुण्ड झुण्ड सखियनके बीच नहीं गारीतुम्हारी सहिहौं॥ अपनी मर्य्याद बचैहौं॥ जो मन आवत सो कहिभाजैं ऐसी ना अब सहिहौं। बसत नहीं उनके कछुखेरे जो ऐसी कह वैहौं॥ निकसि कहूं अन्तै जैहौं॥ लक्ष्मण दास मनावत मोहन अनुचित ना अबकहिहौं। श्रीकृष्ण कहैं करजोरे अपनीबांह बसैहौं॥ बिहंसि कहौं जनिमैं अबजैहौं ८ मोरीमानों सीख दशकन्ध अन्ध रघुबीरते बैर करोना॥ सौयोजन मर्याद सिन्धुकी सोकोइ बांधि सकैना। ताहि बांधिउतरे रघुनन्दन संगभालु कपिसैना॥ समर कोउ जीत सकैना॥ होलीसी लङ्क जराय दईहै अबतुम भागि बचौना। करि करिदाप बीर सबथाके पावक प्रबल बुझै ना॥ युगुति कछुएक चलैना॥ तुम जीवत औहात हमारो सांचीकहौ पियबैना। कीन्हेरारि नहीं बरिऐहौ तासेजायमिलोना॥ भागि तिहुलोक बचौना॥ मैं तिरिया बहुभांति सिखावों निशि चरकान करैना। तुलसी दास मूढ़ भारावण फूटे हियेके नैना॥ ताहि कछुसूझि परैना ६ राधेने बन्शीचोराई अबना जियों मोरी

माई ॥ खेलतरहौं कदमकी छहियां सबसखियन बिलमाई । बांहपकरि मोरिमुरली छीनली कान्हरोवत घरजाई ॥ लैकनियां समुझावैं यशोमति बार बार अरु लेइ बलाई । बांसकी बन्शी जानदे मोहन सोनेकीदेउ गढ़ाई ॥ सुरपुरसे बन्शीयहआई बाबा नन्द मँगाई । सोबन्शी मोरेप्राण बसतिहै अब कैसेजात बन बाई ॥ इतनो सुनिके ग्वालिछकित भई कृष्णको कण्ठलगाई । सूरदास बलिजात यशोमति कान्हको अन्त न पाई १० ॥

चिट्ठी दोहा व चौपाईमें ॥

किसी परमप्यारी महा हितकारीके नाम लिखीहुई हफ़ीजल्लाहखां मुदर्रिस मदरसे मौज़े बन्नापुर ज़िला हरदोईकी ॥

चौ० । स्वस्ति श्री सुन्दरि गुणखानी । अतुल कीर्ति किमि जाय बखानी ॥ तुम समान सुन्दरि जगमाहीं । अबलन माहि कोउहै नाहीं ॥ अङ्ग अङ्ग शोभा सर सावत । चन्द्र बदन लखि चन्द्र लजावत ॥उपमाचन्द्र कहौंकिमिभामिनि । दूषित चन्द्र अदूषित कामिनि ॥ करौं कहांलग तोरिबड़ाई । लघुमति मोरि कही किमिजाई ॥ रोम रोम रसना ममहोई । बर्णन करो थोर सब जोई ॥ तातेअपनलिखौंकछुहाला । बीतत अहै जो मोपरबाला॥

सो० ॥ प्यारी तुम्हरे हेत अँखियांते नदियां भई । तनभयो बारू रेत कटि कटिपरत करार ज्यों ॥ परयो बिरहको फेर तुम बिन सबऋतु फिरगई । दिन बीतत अन्धेर रैनपरत दिनपरतहैं ॥ पङ्ख डोलावत नैन उड़ि देखैं तुम्हरो दरश । फरकतहैं दिन रैन परबश पक्षी उड़न को ॥ ज्यों बिछुरत जल मीन तुम बिछुरत गति यों भई । तलफ़ि तलफ़ि भयोछीन रूप सरोवर दरशबिन ॥

दो० । सुख उपजा वनदुख हरन रसिकन को रसकन्द । ऐ मनमोहन चितबसौ सदा रहो आनन्द ॥ जबते तुमकीन्हों गमन पायो नाहिं सँदेश । ऐसी सुधि बिसरायके बिलमिरहेकिहिदेश॥ पाती भेजत क्यों नहीं याते कछु न सोहात । क्षण क्षण जिय अकुलातहै तलफ़ि तलफ़ि रहिजात ॥ कैसी अवधि बदीहुती जो

दीन्हीं बिसराय। अबजल दरशनके बिना कैसे तपनिबुझाय॥ बिथा कथा लिखिये कहा सुनि लीजै मम मीत। चित्त ठिकाने है नहीं कि जबसे लागी प्रीत॥ कर कांपत पतिया लिखत जल भरि आवत नैन। कोरो काग़ज़ हाथहै लिखूं कहा मैं बैन॥ काग़ज़ भीजत नैनजल कर कम्पत मसिलेत। पापी बिरहा मन बसो बिथालिखन नहिं देत॥ लिखन पढ़नकीहै नहीं कहीसुनी नहिंजात। अपने जियते जानियो मोरे जियकी बात॥ यहगुण पाती ना लिखौंधरेरहौंजियमौन। तुमप्यारीमनमोंबसोपातीबांचै कौन॥ पतिया ताहि पठाइये जो होवे परदेश। निशिदिन मनमों जोबसे वाकोकौन सँदेश॥ मनचाहतहै मिलनको मुखदेखनको नैन। श्रवण जो चाहतहैं सुनोप्यारी तुम्हरेबैन॥ मुख सम्मुख देखोकरैं नैनचहैंदिनरैन। कानचहैं सुनिबोसदा सजनी तेरेबैन॥

चौ०। कहँलगि बिथालिखौं अबप्यारी। हृदयमांझसुधि रहत तुम्हारी॥ सोहै यही कुशलओ क्षेमा। मगन रहौं निशि दिनतव प्रेमा॥ सदारहौ तुमजीवत प्यारी। यौबनजोर चन्द्र उजियारी॥

दो०। मृगनैनी गजगामिनी कटि केहरि मुखचन्द। सदारहो संसार में आनँद कन्द अनन्द॥ मुरीधार तलवारकी काट करत कछु नाहिं। तेरेदृग ज्यों ज्यों मुरैं त्योंत्यों काट कराहिं॥

सो०। तू चितवनकीफांस करक करेजे करि गई। गलगयो सिगरोमांस खरकतहैनिकसतनहीं॥ रहिरहिहियोधँधात बनकी डारैं ठूंठज्यों। तुमतनतपनिबुझात सोतुमअबलांबीगई॥

दो०। सोप्यारी तवदरशबिन बिकलरहौं दिनरैन। कबलगु अबहां आइहौं पन्थनिहारत नैन॥

चौ०। बिरहपीरते रहौं अधीरा। रहिरहि उठत सदाहै पीरा॥ दिनदिन बढ़त यहां बौराई। प्राण रहैं तनमों घबराई॥ समुद बिथा अतिहैसरसानो। लहरतअहसोनजातबखानो॥ प्रेमअग्नि पर ज्वलितहै तनमें। लागैज्यों दावानल बनमें॥ ओंठन आय रहेहैं प्राना। करन चहत हैं अपन पयाना॥ यहि औसरभेजो तुम पाती। देखत ताहि जुड़ावे छाती॥ प्राणपलटि घटमों

फिरिआवैं । मनहुं सजीवन पातीपावैं ॥ अमरस जानि आदिलौ अन्ता । बढ़ेहर्ष जियमाहिअनन्ता ॥ पातीनाहिं सजीवन जानो। मुयेतनहिं अमृत करि मानो ॥

दो० । कौनबस्तु मम निकटजो करौं निछावर तोर । प्राण अपन मैं वारि हौं माणिक मोतीठौर ॥

स० । पातीजोआवै प्रेमपगी सुखछायरहे लखिके मनमाहीं। प्राण निछावर हैं मम वापर और नहीं कछु मो ढिग पाहीं। मूल सजीवन खायजिये वह देखजिये ज्यहिके जिवनाहीं। अब एतो कहों तुमसों सजनी तुमराखियो पीर हमारी सदाहीं ॥

सो० । चलत जब कछुभात तुम बिछुरनको ऐसखी । तन डोलत जिमिपात थिरनरहत थरथर कँपत ॥ प्यारी माह बैशाख देखों बन फूले सुमन । लाखलाख अभिलाष हिय उपजे तुमदरशको ॥

क० । कमल उछाह जैसे सूरज प्रकाशहोत कुमुदउछाह जैसे चन्द्रमा परसतें । भौंरनउछाहजैसे आगमबसन्त जानि मोरन उछाहजैसे बरषा सरसतें । हंसनउछाह जैसे मानसर बीचहोत साधनउछाह इच्छा आवन अरसतें । सबको उछाह यहि भांति करिहोतहै हमरो उछाहप्यारी आपके दरशतें ॥

स० । नैननको तरसैये कहांलौं कहांलौं हियो बिरहागिमेंतैये। एकघड़ीन कहूं कलपाई कहांलौं प्राणनको कलपैये । आवे यहां अबजीमें बिचार पियारी तिहारे यहांचलि ऐये । मानघटेते कहा घटिहै तुमको सजनी जोपै देखनपैये ॥ आंखैं चहैं मुखदेखन को अरु श्रवणसुबैन सुनायरहैं । अधरा अधरान रसाल चहैं हियचाहे हियेमो लगायरहैं । भुजचाहें गरेकीहमेलबनैं करचाहैं कुचौपर सायरहैं । सबअंगइते तव अंगबिना तरसैं कबलौं तरसायरहैं ॥

दो० । तलफ़ि तलफ़ि जियजातहै जैसेजलबिन मीन । तुम दरशन बिन नैनयह तैसेइ भये अधीन ॥ कागजथोरो हितघनो सो अबलिखो न जाय । सिन्धुमध्य जल बहुतहै गागर नाहिं समाय ॥ सो अब लिखिबे की नहीं आगे है कछुकाम । लिखनो

करसो गिरि पड़ी पाती भई तमाम ॥ आगेशुभ मितीज्येष्ठवदी अमावस सम्वत् १९३९ ॥

दूसरी चिट्ठी ॥

वार्त्तिक व दोहा चौपाई संयुक्त ॥

चौ० । स्वस्तिश्री ममप्राणपियारी। चन्द्रमुखीवमहासुकुमारी॥ गजगामिनि प्यारी मृगनैनी । शीलवन्त स्नेही पिकबैनी ॥ परम सोहावनि चम्पक बरणी । ज्ञानध्यान तनमन दुखहरणी ॥

दो० । सकल शुभपमायोग्यतुम सर्बगुणन की खानि । प्यारी परम सोहावनी सुन्दरि कृपा निधानि ॥ यहां क्षेम सब भांतिहै किरपा श्रीभगवान । तवकुशल जगदीशसे नितचाहत ममप्रान ॥ तुमबिछुरन जो दुखमिलो कहा लिखौं किरपाल ॥ पत्री गागर तुल्यहै सागर तुल्य हवाल ॥

सो० । जब चलतकछुबात तुम बिछुरन की ऐसखी । तन डोलत जिमिपात थिर न रहत थरथरकँपत ॥ प्यारी तुम्हरे हेत अँखियां ते नदियां भई । तनभयो बारू रेत कटिकटि परत करार ज्यों ॥ तुमबिन प्यारी एकपल पड़ैनहीं जियचैन । हाफ़िज़ दर्शन आश को तरसि तरसि रहैं नैन ॥

वार्त्तिक वृत्तान्त ॥

बिछुरे हुओं का मिलावनहार श्रीसच्चिदानन्द परमेश्वर देखियेबिरह बियोग रात्रिके अन्धकारको मिलापके सूर्य्यसे कब प्रकाशित करताहै। और फुलवारी अनित्त संसारमें हम तुम किस दिन परस्पर मिलके कलीके समान खिलेंगे और बिरह आगिके गर्म बयारिसे फूल रूपी मन जो कुम्हिला गयाहै वह बसन्तकी शीतल पवन मिलनसे किससमय लहलहायगा राम न करे जो हमारे तुम्हारे बीचमें बियोग बिथाके मैदान का अन्तर ऐसाही बनारहै नहीं तो क्या आश्चर्य है कि यह दुख सताये बिरह पीर उठाये नैन बेचैन हो आंशुओं का नद बहाकर प्रलयकरदें । पर

मात्माके हाथहै । जो धनी निर्धन नीच महान कुजाति कुलवान सबके साथहै हाय दिल लगानेकायही अंजामहै । यह बियोग कथा अब केवल एक दोहे पर तमामहै ॥

दो० । हमपक्षी तुम कमलदल सदारहो भरिपूर । हृदयदया जनि छाड़ियो क्या नेरे क्या दूर ॥ आगेशुभ मि० चैत्र कृष्ण ५ सं० १९३९ मु० ८ मार्चसन् १८८२ ई० ॥

उत्तर पत्र ॥

सिद्धिश्री मम प्राणसमान साहब सुजान निपट प्रबीण गुण-खान यशस्वी कृपानिधान को तुम्हारी आज्ञाकारी परम पियारी कीयथायोग्य पहुचे। आपनेजो बिथाबियोगके समाचारबहुपूकार से लिखे उससे दशगुणा यहां अपना हालहै मिलन अभिलाष कमालहै मनकीबिथा किससेकहूं लज्जाआतीहै जो चुपरहौं तो अतिकै जान जातीहै हरघड़ी होठों पर ठण्ढीसासैं और आहहै तुम्हारीसुधि एकदम नहीं भूलती राम इसका गवाहहै ॥

दो० । अबतो मिलना कठिन है पाँयन पड़ी जँजीर । परबश प्यारे हमभई कहाकरैं ततबीर ॥

जब तुम्हरीसुधि आतीहै घण्टौहमैं रुलातीहै ॥

शेर । भरीहै दिलमें जो हसरत् कहूं तो किससे कहूं । सुनैयह कौन मुसीबत कहूं तो किससे कहूं १ क़रारपाती नहीं जाने जार बिनतेरे । तड़प रहाहै दिले बेकरार बिनतेरे २ ॥

दो० । मित्र तुम्हारे मिलनको चाहतहै चित नित्त । तननहिं मिलोतोका भयो मनमिलि आवत नित्त ॥ प्यारे तुमजनि जानियो हमसन प्रीतिगई । अमरबेल ज्यों वृक्षपर बाढ़त नित्तनई । तुम बिछुरत छिनमों मरौं कहां जियों बिनतोहि । तव मूरति मनमों बसैं वही जियावतमोहिं ॥ प्यारे तुम्हरे मिलनको कोटि यतनहम कीन । ना जानैं क्यहि पापसे दई जुदाकरदीन ॥

सो० । जैसेजलबिनमीन तलफ़ि तलफ़ि जिउ देतहै । तैसइ भई अधीन प्यारेतुम्हरी यादिमों ॥

मेरा तो रात्रि दिवस यही हालहै जो लिखा तुम्हारे मनकी कठोरता और निर्दयी पन कहांतक कहौं कभी जीमें यह न आया कि थोड़ीदूर चलके अपनी परमपियारी महाहितकारी को दूरही से दरश सुधारस पिलाकर उसके बिरह रोगी चित्तको आनन्दित करैं। हमारी यह मिलनअभिलाष और तुम्हारी यह निठुराई॥

स०। सांचीकहौ हमसों मनमोहन काकेकहे तुमप्रीतितजीहै। आंखिनदेखे बिनानहिंचैन सो प्रीतिकी रीति कहाबिसरीहै। का कछु मोहिंसे चूकपरी तुम्हरे चितकी जो चाह घटीहै। मैं कपटी किधौं तू कपटी कितो वहकपटीज्यहि ऐसीठटीहै॥ सोजानो आगे शुभ मि० चैत्रशुक्ल १ सं० १९३९ मु० २० मार्चसन् १८८२ई०॥

इति॥

—०—

[illegible]

नवीनसंग्रहके कठिन शब्दोंकाकोष ॥

शब्दार्थ	शब्दार्थ
(अ)	
अरुण, लाल	अचर, जो न चल सकै
अनेक, बहुत	अबला, स्त्री
अज, ब्रह्मा	अमी, अमृत
अधम, नीच	अबरूखूबबनीमहे नौवगुरूर जवानी का जोरो जफ़ाहे } भौहैं द्वितीया के चन्द्रमा के समान बनीहैं
अनुराग, प्रीति—प्रेम	अज़टूरदिदारनुमायम्, मुखदेखूं
अनुशासन, आज्ञा	अज़गुफ़्तो सुनने मतलब दारम् } कहनेसुननेसे कु- छ प्रयोजन नहीं
अवलम्ब, सहारा	अज़ीज़, छोटे
अघ, पाप	अभिराम, सुन्दर
अच्छ, रावणपुत्र	अस्क, आंसू
अरि, शत्रु	अबलन, स्त्रियां
अहार, भोजन	आरत, दुख
अमर, देवता	आनन, मुख
अधरामृत, ओठों का अमृत	आयसु, आज्ञा
अनूप उपमारहित	आतुर, शीघ्र
अगाध, बेथाह	आली, सखी
अमरेश, इन्द्र	आभरण, आभूषण—गहना
अलि, सखी	आशिक़, प्रीतम
अमल, पवित्र	आसुर, दैत्यों के पुत्र
अनंग, कामदेव	ओप, सुन्दरता
अपवाद, निन्दा	औषधि, दवा
अनी, नोक	अम्बर, वस्त्र
अवतंश, पताका—शिरोमणि	अंगना, स्त्री
अधर, ओष्ठ	अंजनीतात, हनुमान
अकुलाय, दुखीहोना	अंबुद, बादल
अनल, अग्नि—आग	
असुर, दैत्य	

शब्दार्थ

(इ)

इज़हार नुमायम, प्रकट करना हूं
इन्दु, चन्द्रमा

(उ)

उदित, उदय हुआ
उबारो, तारो
उपबन, बाईबाग
उपारि, उखाड़ना
उमीर, खस
उनई, उदय हुई
उपचार, उपाय
उरोज, कुच
उछाह, प्रसन्नता
उचारी, कहना
उनहारि शदृश
उर, हृदय
उलफत, प्रीति
ऊरू, जांघें
ऊर्द्ध, ऊंचे

(ऋ)

ऋतुराज, वसन्त

(क)

करुणा, दया
कमलासिनि, कमलपर बैठनेवाली
कटि, कमर
कपि, बंदर
कवन्ध, बिना शिरका धड़
करवाल, तलवार

शब्दार्थ

कलकोकिल, सुन्दरवाणी
कछार, नदी का किनारा
कलाधर, चन्द्रमा
कनाकन, कण
कर, हाथ
करार, किनारा
करक, पीडा
कपोल, गाल
कफस, पिंजरा
कहे, दुःख
कालिन्दी, यमुनाजी
कायर, डरपोक
काकपक्ष, जुलुफ़
कामिनियां, कामकीभरी स्त्रियां
कामलोचनी, काम की भरी आंखे [काली
कानि, लज्जा
कामद, कामना देनेवाला
कामिनि, कामभरी स्त्री
किरीट, मुकुट
किंशुक, ढाक का पुष्प
किंकिणि, करधनी
किशोरी, जवान स्त्री श्रीराधा
कि क़रारबिगीरद [इस दुःखी मन
ईंदिलेज़ारम् [में धीर्य्य हो
किआंमहेपारम्, वह चांदका टुकड़ा [मन लेगया
कीश, बंदर
कुंजर, हाथी

शब्दार्थ

कुसुमायुध, कामदेव
कुरंग, हिरन-मृगा
कुबले, फूलकाजीरा
कुलकानि, लोकलाज
कुमुद, कोकाबेली
क्रूर, टेढ़ा
कूल, किनारे
कूप, कुवां
कूरी, दुष्टता
केलिन, बिहारस्थान
केलि, खेल
कोबिद, पण्डित
कोशलराज, अयोध्याधिप
कोक, कोकाबेली
कौतुक, तमाशा,
कंज, कमल
कन्धर, शिर
कंत, पति
कंचुकी, अंगिया- चोली
कंदुक, कैथा, गेंद
कंबु, शंख

(ख)

खल, दुष्ट
खग, पक्षी
खेशोबुजुर्ग अक़ारिब, नातेदार व [नातेदारोंको
खंज, खंजनपक्षी- खड़ैचा

(ग)

गयन्द, हाथी

शब्दार्थ

गर्त, गढ़ा
गज, हाथी
गणिका, वेश्या
गगन, आकाश
गजगामिनियां, हथिनी के तुल्य [चलनेवाली स्त्रियां
गँवाय, खोना
गमगीन, दुःखी
ग्रसो, गँसा
ग्राह, मगर
गाहेजुज़यारी, कमी सिवाय मित्र [ताके
गिरिराजसुता, पार्वती
गिरिधर, श्रीकृष्ण
गिरा, जिह्वा—बाणी
ग्रीव, बदन
गुंजा, घुंघुचिल

(घ)

घट, हृदय- पेट
घन, बादल
घननाद मेघनाथ
घनि, अधिक

(च)

चराचर, स्थावर जङ्गम
चतुरङ्गिनी, सेना- फ़ौज—पलटन
चक्रपाणि, विष्णु- जिसके हाथमें [चक्रहो
चमू, सेना
चपला, बिजुली

शब्दार्थ

चवायनि, निन्दा करनेवाला
चकीसी, हैरान—भौचकसी
चवाय, निन्दा
चर, चलनेवाला
चातक, पपीहा
चिलकन, चमक
चीर, वस्त्र—कपड़ा
चूंबुर्ददिलम् अज़ज़ोरसितम्, } कि अन्यायसमेत चुरा लेगया
चेहेरे नूर बयान करूं महताब न लाग्रततावसफाहे, } तेरे मुखकी सुन्दरता क्या बर्णन करूं कि चन्द्रमा भी इसकीसफ़ाई को नहीं पासक्ता
चैन नहींदिन रैन पड़े अब हाफ़िज़ हाल बेहालज़ेगम् } दुखसे बेहाल होरहा हूं

(छ)

छत, मंडल, आकाश
छद, पत्ता

(ज)

जनककुमारी, जनक की कन्या [जानकी
जलेश, जलका मालिक बरुण
जलधर, बादल
जलजात, कमल

शब्दार्थ

जबरूये आंदिल दार बुबीनम्, } जब प्रीतम का मुख देखूं
जरजरी, कमज़ोर
जलसुत, कमल
जात, पैदाहोना
जीह, ज़बान
जूह, समूह
जे जुदाइये तो मज़ाबल बस } कि तेरे बियोगमेंप्राण होठोंपर आरहे हैं

(झ)

झलकत, चमकत
झिल्लिन, झींगुर
झुन्ड, समूह

(त)

तरन, तरनेके योग्य
तरु, दरख्त
तरणि, सूर्य्य
तरौना, करणफूल
तम, अंधेरा
तरंग, लहर
तरणिजा, यमुनाजी
तड़ाग, तालाब—ताल
तुम गाहवगा- ह नमूद करम् } कभी मेरे ऊपर कृपा करके
तकसीर, अपराध—क़सूर
तपन, जलन
तर्ज़, रीति

शब्दार्थ

ताड़न, दण्डदेना
तारन, तारनेवाला
तुरंग, घोड़ा
तुषार, पाला

(द)

दल, सेना
दशानन, रावण
दशशिर, रावण
दशकन्ध, रावण
दर्शाता, दिखाता
दहन, जलानेवाला
दृग, आंख
दरबागेवस्लगु, लेशबिचीनम्, } भेंटकी बाटिकामें आनन्दकेपुष्पचुन
दाहन, जलन
दावा, अग्नि
दारुण, कठिन
दामिनी, बिजुली
दादुर, मेंडक
दिनेश, सूर्य्य
दिलरफ़ाजिदस्त, न मुन्दबदस्त, } मनहाथसे गया काबू न रहा
दिलम्, मनमें
दिलदार, प्यारा
द्वीपि, हाथी
दीठि, नज़र-आंखें
दुकूल, वस्त्र-कपड़ा
द्रुपदसुता, द्रौपदी
द्युति, प्रकाश

शब्दार्थ

द्रुम, वृक्ष
दुन्दुभी, नगारा
द्योस, दिन
दम्पति, स्त्रीपुरुष

(ध)

धरा, पृथ्वी
धाम, घर
धेनु, गऊ

(न)

नबेलिन, युवास्त्री
नभ, आकाश
नरेश, राजा
नग, पर्ब्बत,
नवनीत, माखन

नक्शनगीनम् { जैसेनगीनेपर नक्श है

नज़ारेयारनुमायम् { प्रीतम का दर्शनकरू

तकरार नुमायम्, धीरनहींहै
नक्श नगीं, नगीने पर नक्शहैं
नाग, सांप-सर्प्प
नागर, पति
निशिचर, राक्षस
निशा, राचि
निधि, समुद्र
निर्बिकार, निर्गुण
निषाद, मल्लाह

शब्दार्थ

निशि, रात्रि
निदाघ, गर्मी
निरङ्ग, रागरङ्ग सहित
नितम्बिनी, स्त्री
निज़देसनम्, पास प्रीतमके
निमेष, पलक
नीप, कदम्बवृक्ष
नीवी, इज़ारबन्द-नारा
नीरज, कमल
नीर, जल
नीठि, कटुबचन
नूपुर, बिछिया
नेह, प्रीति
नन्दन, पुत्र

(प)

पराग, कमलकीधूर
पथ, राह
पट, वस्त्र—कपड़ा
पतित, नीच
पर्य्यंक, सेज—पलंग
पथिक, मुसाफिर
पल्लव, नयेपत्ते
परिणाम, आख़िर
पयान, बिदेश जाना
प्रकाश, उजेला
प्रचण्ड, तेज
प्रसून, फूल
प्रबाल, मूंगा
प्रभा, प्रकाश

शब्दार्थ

पालन, परवरिश
पावक, अग्नि
पाणि, हाथ
पातकी, पापी
पावस, वर्षाकाल
पाहन, पत्थर
पारगामी, पारपहुंचाहुआ
पिक, पपीहा—कोयल
पुरन्दर, इन्द्र
पुंज, समूह
पोषण, पालन
पंकज, कमल

(फ)

फणेश, शेषनाग
फणिन्द्र, शेष

(ब)

बक, बकुला
बधू, स्त्री
बनिता, स्त्री
बरिआई, बरबस—ज़बरदस्ती
बनितन, स्त्रियां
बनमाली, श्रीकृष्णजी
बहिक्रम, बाहरनिकलना
बलवे, किनारेपर
बहम, इकट्ठा
बदनाम, शुद दर कुर्वजबार } मैं चारों ओर बदनाम हुआ
बल्कि बलीक, अपनी तारीफ बार

शब्दार्थ

व्यथित, दुखी
व्यथा, दुख
वृषभान कुमारी, वृषभानकीलड़की [राधा
वृन्द, समूह
बाटिका, बगीचा-फुलवाई
बारिबाहन, बादल
बारिज, कमल
व्याल, सर्प-सांप
बाहन, सवारी
बारण, हाथी
बाद, तकरार
बाना, बेष
बानि, आदत, स्वभाव
बारि, पानी
बारिध, समुद्र
बाम, स्त्री—औरत
बासर, दिन
बानिक, बनाव
बाक्, बचन
बिन्दु, बूंद
बिशाल, बड़ा उम्दा
बिदित, ज़ाहिर
बिपत्ति, आपत्ति
विंध्य, विंध्याचल
बिलासिनी, बिहारकरनेवाली
बिधना, ब्रह्मा
बिलोकत, देखत
बिदारि, फाड़कर
बिटप, दरख़्त—वृक्ष

शब्दार्थ

बिहङ्ग, पक्षी—चिड़िया
बिज्जु, बिजुली
बिनोद, प्रसन्नता
बिसासिनि, बिश्वासघातिनी
बिबेकन, अच्छेऔरबुरेके पहिंचान [नेवाले
बिलम्ब, देर
बिछोह, बियोग—जुदाई
बिपुल, बहुत
बिपिन, जङ्गल
बिध्वंस, नाश
बिकाश खिलना—फूलना
बेशरि, नथ—नथुनी
बेंणु बांसुरी—वंशी
बेज़ार, दुःखी
बैस, उमर
ब्योम, आकाश
बधु, भाई
बंदि, कैदखाना

(भ)

भव, संसार—दुनिया
भट, बीर—योधा
भटू, सखी
भवबाधा, संसारकादुःख
भाल, माथा
भुवङ्ग, सांप
भूरि, बहुत
भोगी, सर्प
भङ्ग, तोड़ना

शब्दार्थ

(म)

मनोबचकाय, मनबचशरीरसे
महेश, महादेव
ममता, मुहब्बत-प्रेम
मख, यज्ञ
मराल, हंस
मदनारि, महादेव
मयंक, चन्द्रमा
मज्जन, स्नान-नहाना
मलिन्द, भंवरा
मधूकन, भंवरे
मदन, कामदेव
मलयज, चन्दन
मग, रास्ता
मल्लिका, चमेली
मयंकमुखी, चंद्रमुखी
मकराकृत, मछलीकेडौल
मधुप, भंवरे
मनोज, कामदेव
मरीचिनि, किरणें
मतलबेमन्न, बरामदहैफ } मेराकार्य्यसिद्ध नहुआअफसोस
मसि, स्याही रोशनाई
मद, शराब दारू
मर्म्म, भेद
महि, पृथ्वी
मधु, शहद
मर्ज, रोग
मसीहाई, मुर्देकोजीताकरना

शब्दार्थ

मृगछाल, हरिणकीखाल
मृगमद, कस्तूरी
मृगराज, शेर-बाघ
मृदु, मीठी
मृगनाभि, कस्तूरी
मार्त्तण्ड, सूर्य्य
माधुर्य्य, मीठी
माणिकमहल, मणियोंकामकान
मार्षै, क्रोधकरैं
मातङ्ग, हाथी
नमामि, प्रणाम
माषि, क्रोधकरके
मीच, मौत
मीन, मछली
मुक्ता, मोती
मुद, खुशी
मुंडमाला, खोपड़ियोंकीमाला
मुदित, प्रसन्न
मुहब्बत, प्रेम
मैन, कामदेव
मोचन, खोलना
मोद, प्रसन्नता-खुशी
मंगल, आनन्द
मन्दर, पर्ब्बत-पहाड़
मंजुल, सुन्दर
मंजु, सुन्दर

(य)

याम, पहर
यातुधान, राक्षस

शब्दार्थ

यामिनी, रात्रि
युवराज, वलीअहद
यूथप, सेनापति
यूथ, समूह
यौवनियां, जवानस्त्री

(र)

रज, धूरि
रमा, लक्ष्मी
रद, दांत
रजनीचर, निशाचर—राक्षस
रसाल, आंब
रसना, जिह्वा—जबान
रजनी, स्त्री-रात्रि

रम्ज़ोनाज़नमू दसनम्बोताब शुदम् मफ़जूद कदूरत — प्रीतमने ऐसे इशारे और नखरे किये कि मैं अधीर हुआ और दुख बढ़ा

रबि, सूर्य्य
राव, राजा
रिहा, छोड़देना
रेणुका, बालू—परशुरामकीमाता
रोष, क्रोध—रिस—गुस्सः
रोमावली, रोमोंकीपंक्ति
रंक, दरिद्री
रंचक, दरिद्री—ग़रीब

(ल)

लतिका, बेला

शब्दार्थ

लता, बेलि
ललाट, माथा
लतान, बेलि
ललना, स्त्रियां
लाल, श्रीकृष्णजी
लोकप, लोकपाल
लोचन, आंखे
लंकेश, रावण
लंपट, व्यभिचारी

(व)

वक्तेबिदा, चलनेके समय
वृथा, बेफ़ायदा
विष, ज़हर—माहुर
विरंचि, ब्रह्मा
विरोध, दुश्मनी
विरद, यश
विधान, शास्त्रोक्त व्यवहार
वीतराग, जिसनेसंसारीरागछोड़ाहे

(श)

शशि, चन्द्रमा
शर, बाण
शरासन, धनुष
शपथ, सौगन्ध-कसम
शची, इंद्राणी

शरम्मो हयाये वश — मैंतेरी लज्जा को भलीभांति जानताहूं

श्रवण, कान
शाखामृग, बन्दर

शब्दार्थ

शार्ङ्ग, बिष्णुधनुष
श्यामा, राधाजी
श्याम, श्रीकृष्णजी
शिखा, दीपककीलौ-चोटी
शिवा, पार्ब्बती
शूल, उदरपीड़ा-पेटकी सूल दर्द
शैल, पहाड़
शैलकुमारी, पर्ब्बतकीकन्यापार्ब्बती
शोषि, सुखाना
शोणित, खून-लोहू

(स)

सच्चिदानन्द, ईश्वर
समता, बराबरी
समक्ष, सामने
सहसानन, शेष
सरोष, क्रोधसहित
समर, युद्ध
समीरसुत, बायुपुत्र-हनुमान
सरोज, कमल
समीर, हवा
सरिता, नदी
सदन, घर
समाज, सभा
सफ़री, मछली
सालिक, जल
सरसीरुह, कमल
सनेह, प्रीति-मुहब्बत
स्थावर, ठहरेजीव बृक्षादि

शब्दार्थ

सागर, समुद्र
सुर, देवता
सुरापी, शराबी-मद्यपी
सुरलोक, स्वर्ग-देवतोंका लोक
सुरेश, इंद्र-देवतोंका राजा
सुरपति, इंद्र-देवतोंकापति
सुरचाप, देवधनुष
सुबाला, सुन्दरस्त्री
सुखमा, शोभा
सुधाकर, चंद्रमा
सुधा, अमृत
सुमन, फूल
स्वेद, पसीना
सैयाद, बहेलिया—चिड़ीमार
सोम, चंद्रमा
सोहबतेयारेनि-गारनशीनम्, } अपनेप्रीतमकी संगतिमेंबैठूं
सम्पति, धन
संकोच, लाज

(ह)

हालत, अवस्था
हुस्नकीयारबहार यहीबरदीदनेया रदिदारनफाहै, } सुन्दर ताप्रीतम के देखनेसे नफाहै
हुलासिनि, आनन्दकरनेवाली
हुलास, प्रसन्नता
हेमलता, सोनेकीबेलि

शब्दार्थ		शब्दार्थ
होशमरफ़ नमुंद बदस्तशुदःदिल मस्त ज़दीदने सूरत	ज्ञान जातारहा बिवश हुआ औ रूपके देखनेसे मनमस्त हुआ	(त्र) त्रास, भय त्रात, रक्षक त्रिपुरारि, महादेव त्रिभंग, तीन सिकन
(क्ष) क्षार, खारी क्षिति, पृथ्वी—जमीन		(ज्ञ) ज्ञाता, जाननेवाला

इति ॥



नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
ारसभाग	**किस्सावग़ैरह**	रासलीला द्वि० प्र० कृत
काव्य	नानार्थनोसंग्रहावली	दोहावली रत्नावली
ूरसागर	ब्रह्मसार	गोकर्णमाहात्म्य
कृष्णसागर	शिवसिंहसरोज	श्रीगोपालसहस्रनाम
विश्रामसागर	भक्तमाल	कथासत्यनारायण
प्रेमसागर	इन्द्रसभा	हनुमान बाहुक
ब्रजविलासबड़ा व छोटा	बिक्रमबिलास	जनकपच्चीसी
कृष्णप्रिया	बेतालपच्चीसी	हरिहरसगुणनिर्गुण
बिजयमुक्तावली	पद्मावतीखण्ड	बनयाचा
अनेकार्थछन्दोर्णवपिंगल	शुकबहत्तरी	कायस्थवर्णनिर्णय
कविकुलकल्पतरु	बकावलीसुमन	बिहारवृन्दाबन
रसराज	चहारदरवेश	समरबिहारवृन्दाबन
सत्सईमूल तथा सटीक	किस्साहातिमताई	कल्पभाष्य
सभाबिलास	अपूर्व्वकथा	**दरशी**
तुलसीशब्दार्थ	किस्सागुलसनोवर	अक्षरावली
भजनावली	सहस्ररजनीचरित्र	स्वयम्बोध
प्रेमरत्न	सिंहासनबत्तीसी	ज्ञानचालीसी
गुगुलबिलास	राविन्सन्क्राइतिहास	दोहावली
चिचचन्द्रिका	सीताहरण	बालाबोध
बारहमासा बलदेवप्रसाद	सतीबिलास	बिद्यार्थीकीप्रथमपुस्तक
मनोहरलहरी	**मुतफ़र्कात**	किताबजंची
गंगालहरी	शनिश्चर की कथा	गणितकामधेनु
यमुनालहरी	ज्ञानमाला	लीलावती
जगद्विनोद	ज्ञानआभूषण	पटवारीकीपुस्तकें ४भाग
शृङ्गारबत्तीसी	गोपीचन्दभरतरी	**ज्योतिषभाषा**
षट् मावत	कथाश्रीगंगाजीकी	जातकचन्द्रिका
राग	अवधयाचा	जातकालंकार
रागप्रकाश	भरतरीगीत	दैवज्ञाभरण
ावनी	दानलीला	ज्ञानस्वरोदय
	नागलीला	रमलशार

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
इन्द्रजाल	**संस्कृतउर्दू टीका सहित**	प्रतापबिनोद
संस्कृतकीपुस्तकें	मनुस्मृति	मनमौजचरित्र
लघुकौमुदी	विष्णु हारीत	भविष्योत्तरपुराण
सिद्धान्तचंद्रिका	महिम्नस्तोत्र	स्कन्दपु०कासेतुबन्धखण्ड
अमरकोषतीनोंकांडस०	व्रतार्क	मनोहरकहानी
पञ्चमहायज्ञ	याज्ञबल्क्यस्मृति	भ्रमजालकनाटक
निर्णयसिंधु	**संस्कृतभाषाटीका सहित**	सीताबनबास
संग्रहशिरोमणि	अमरकोष	किस्सामर्द औरत
भगवद्गीतासटीक	याज्ञबल्क्यस्मृति	नवीनसंग्रह
दुर्गापाठमूल	संध्यापद्धति	सुदामाचरित्र
दुर्गापाठसटीक	व्रतार्क	ज्ञानतरंग
विष्णु भागवत	भगवद्गीताटीकाआ०गि०	सप्तशतिका
अपराधभंजनस्तोत्र	भगवद्गीताटीकाह०बं०	बिजयचंद्रिका
दुर्गास्तोत्रसटीक	गीतगोबिन्द	रामायणवाल्मीकीय
कायस्थकुलभास्कर	कथासत्यनारायण	भुवनेशभूषण
कायस्थधर्मनिरूपणबड़ा	परमार्थसार	महाभारतसबलसिंह चौहानकृत
तथाछोटा	शार्ङ्गधरसंहिता	सुन्दरबिलास
मथुरासभा	पाराशरीसटीक	गीतरसिका
तुलसीतत्वभास्कर	शीघ्रबोधसटीक	कबित्तावलीरामायणसटीक
रामबिवाहोत्सव	लघुजातक	इलाजुलगुरबा भाषा
ज्योतिष	षट्पञ्चाशिका	रसायनप्रकाश
मुहूर्त्तगणपति	सामुद्रिक	रामचंद्रिका सटीक
मुहूर्त्तचक्रदीपिका	**नवीनकितावें**	बाराहपुराण
मुहूर्त्तचिन्तामणिसटीक	कालंजरमाहात्म्य	सौदागरलीला
मुहूर्त्तमार्त्तण्डसटीक	सुधामन्दाकिनी	सतसागर
मुहूर्त्तदीपक	रामबिनयशतक	कबीरग्रन्थ
बृहज्जातकसटीक	नारीबोध	नवरत्न
जातकालंकार		बंशीलीला
जातकाभरण		बृहत्संहिता
लग्नचन्द्रिका		

